कलमागो इस्लामी फिरकों के माबैन
बुनियादी अकाएद व नज़रियात में उसूली
इख्तेलाफात का तहकीकी जाएज़ा

तिहत्तर में एक

मारुफ अकाबेरीने अहले सुन्नत की इल्मी तहरीरों का खूब सूरत मजमूआ

मुरत्तिब
अशफाक अहमद शरीफी

ज़ेरे एहतेमाम
इमाम शाफई फाउंडेशन मुम्बई
नाशिर
रज़वी किताब घर दिल्ली-6

कलिमागो इस्लामी फ़िर्क़ों के माबैन
बुनियादी अक़ाइदो नज़रियात में उसूली इख़्तिलाफ़ात का तहक़ीक़ी जायज़ा

तिहत्तर में एक

मअरूफ़ अकाबिरीने एहले सुन्नत की
इल्मी तहरीरों का ख़ूबसूरत मज्मूअह

संकलन

अशफ़ाक़ अहमद शरीफ़ी

हिन्दी रूपान्तर

सैय्यिद आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी बरकाती
सज्जादानशीन व मुतवल्ली
दर्गाहे बरकातियह, मारेहरा शरीफ़

ज़ेरे एहतेमाम
इमाम शाफ़ई फ़ाउन्डेशन, मुंबई

प्रकाशक

रज़वी किताब घर
425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली 110006
Phone 011 - 23264524

फ़िहरिस्त

अर्ज़े नाशिर - वज्हे तरतीब

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لوليه والصلاة والسلام على حبيبه وآله وصحبه

हर जानने वाला जानता है कि कलिमा पढ़ने वाले तब्क़े में बहुत से फ़िर्क़े पैदा हो चुके हैं जिनमें से हर फ़िर्क़ा अपने आप को सच्चाई पर समझता है और अपने सिवा दूसरे तमाम फ़िर्क़ों को बातिल पर. अगर यह बात न होती तो फ़िर्क़ों की तक़सीम का सवाल ही न हो और मुख्तलिफ़ फ़िर्क़ों के आपसी मतभेद अक़ीदों से मुतअल्लिक़ हैं. अगर इन सबके अक़ीदे अलग अलग न होते तो फिर फ़िर्क़ा-बन्दी का कोई अर्थ नहीं रह जाता.

दूसरी सदी हिजरी ही से हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई और फिर तीसरी सदी से हम्बली मज़ाहिब तैयार हो चुके थे और इन चारों इमामों के विशेष मानने वाले और अनुयायी थे मगर ये मतभेद फ़रोई (छोटे मोटे) मसायल तक सीमित थे, बुनियादी अक़ीदों में सब एकमत थे और सब अपने को एहले सुन्नत व जमाअत कहते थे. लेकिन इस दौर में ऐसे कई फ़िर्क़े पैदा हो गए हैं जिनमें बुनियादी अक़ीदों का मतभेद है इसी बिना पर हर फ़िर्क़ा अपने को हक़ पर समझते हुए दूसरे को जहन्नमी कहता है.

ज़ाहिर है कि इस तरह का मतभेद होते हुए यह कहना कि हर कलिमा पढ़ने वाला हक़ पर है और सब (नाजी) निजात पाए हुए हैं, सच्चाई को झुटलाना है. विशेषकर हमारे इलाक़े में कुछ लोग ऐसे पैदा हो गए हैं जो अपनी ज़ाहिरी बुज़ुर्गी को इस्तेमाल करके यह प्रोपगन्डा कर रहे हैं कि हर फ़िर्क़ा हक़ पर है और निजात पाया हुआ है. किसी को काफ़िर कहना या ज़लील करना जायज़ नहीं, किसी का रद करना दुरूस्त नहीं जबकि यह बात अक़ली तौर पर भी मूर्खता है और शरीअत के हिसाब से भी बातिल, इस लिये कि सही हदीस में फ़रमाया गया -

وتفترق امتی علی ثلث و سبعین ملة کلهم فی النار الا امة واحدة.

यानी बहुत जल्द मेरी उम्मत में तिहत्तर फ़िर्क़े पैदा होंगे, सिवाय एक के सब जहन्नमी हैं. जब हदीस की व्याख्या के अनुसार सिवाय एक के सब जहन्नमी हैं तो सबको हक़ मानना, उनके रद को रोकना, उनके साथ

भाईचारगी करने का हुकम देना और सबके पीछे नमाज़ पढ़ने पढ़ाने का हुकम देना, सबसे शादी ब्याह करना कराना और सबकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और पढ़ाना हक़ीक़त में इस हदीसे पाक को झुटलाना है. गुमराह बद-मज़हबों के बारे में खुद हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने हमें यह हुकम दिया है -

اِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَا يُضِلُّوْنَكُمْ وَلَا يُفْتِنُوْنَكُمْ ـ (مسلم ـ مقدمہ)

यानी अपने आपको उनसे दूर रखो, उनको अपने से दूर रखो, कहीं तुम्हें गुमराह न कर दें, कहीं तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दें.

और इरशाद फ़रमाया -

ولا تجالسو هم ولا تشاربوهم ولا تواكلوهم ولا تنا كحوهم واذا مرضوا فلا تعودوهم واذا لقيتم فلا تسلموا عليهم ولا تصلوا معهم ولا تصلوا اهم ـ

यानी न उनके पास उठो बैठो न उनके साथ खाओ पियो, न उनके साथ शादी ब्याह करो. बीमार पड़ जाएं तो उन्हें देखने न जाओ, मुलाक़ात हो जाए तो उन्हें सलाम न करो, न उनके साथ नमाज़ पढ़ो और न उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ो. और इरशाद फ़रमाया :

مَنْ وَقَّرَ صَاحِبَ بِدْعَةٍ فَقَدْ اَعَانَ عَلٰى هَدْمِ الْاِسْلَامِ ـ

यानी जिसने किसी बद-मज़हब की तअज़ीम की उसने इस्लाम ढाने पर मदद की.

इस लिये यह कहना कि सब हक़ पर हैं, सब हमारे भाई हैं, इस्लाम की रूह को बिगाड़ना है. आजकल दुनियादारी सबसे ऊपर है इसलिये लोग बहुत जल्द इस अच्छे दिखाई देने वाले फ़रेब में गिरफ़तार हो जाते हैं और वो यह नहीं सोचते कि अगर किसी पेटी में 99 अच्छे टिमाटर उस एक सड़े हुए टिमाटर को अच्छा कर दें या उस के असर में आएं. होगा यही कि वह एक सड़ा हुआ टिमाटर 99 अच्छे टिमाटरों को ख़राब कर देगा. अब सोचिये अगर पेटी में 72 सड़े हुए हों और एक अच्छा हो तो कया हाल होगा.

निहायत वाज़ेह बात है कि जब इन मुख़्तलिफ़ फ़िर्कों के बीच ऐसे बुनियादी मतभेद हैं जिनके आधार पर ७२ फ़िर्के जहन्नम के मुस्तहिक़ हैं तो अक़्लमन्दी और दीनदारी का तक़ाज़ा यह है कि ठन्डे दिल से ईमानदारी के साथ यह ज़हन में रख कर कि हमारे साथ हमारा अक़ीदा और हमारा अमल जाएगा, ढूंढ कर निकालें कि वह एक फ़िर्क़ा कौन है जो जन्नत में जाएगा और

जन्नती व जहन्नमी दोनों फ़िर्क़ों से एक सा व्यवहार रखना हक़ीक़त में निजात पाए हुए फ़िर्क़े से निकलकर ७२ गुमराह फ़िर्क़ों में दाख़िल होना है.

हम यहाँ ब्रिटन के मशहूर जासूस हम्फ़रे की डायरी से कुछ बातें आपके सामने रख रहे हैं -१८वीं सदी ईसवी में बरतानिया ने एक बहुत ही चालाक ज़हीन जासूस इस्लामी इलाक़ों में भेजा जिसका नाम हम्फ़रे था. उसने इस्लामी मुल्कों में घूमकर मुसलमानों के हर वर्ग में, उलमा और धर्म गुरूओं की ख़ानक़ाहों और मदर्सों में रहकर एक ख़ुफ़िया याद-दाश्त तैयार की और मुसलमानों को तबाह करने की तरकीबें भी लिखीं. इस अहम डायरी का अनुवाद हम्फ़रे के एतिराफ़ात के नाम से मार्केट में मिल रहा है. उसके कुछ अंश नीचे लिखे जाते हैं -

पहले उसने इस बात की निशानदही की है कि मुसलमानों में यह दीवानगी आई कहाँ से कि मुस्कुरा-मुस्कुरा कर जान दे देते हैं मगर पीठ नहीं दिखाते. मुस्लिम क़ौम की कुव्वत के ख़ज़ानों का तज़किरा करते हुए लिखता है - (१) पैग़म्बरे इस्लाम (ﷺ) एहले बैत और उलमा व सुलहा की ज़ियारतगाहों की तअज़ीम और इन मक़ामात और इज्तिमाअ को मरकज़ क़रार देना. (२) सादात का एहतिराम और रसूले अकरम (ﷺ) का इस तरह तज़किरा करना मानो वह अभी ज़िन्दा हैं और दुरूद व सलाम के मुस्तहिक़ हैं.

हम्फ़रे ने मुसलमानों की अजय शकित के इन दो स्रोतों का तज़किरा करने के बाद उनकी कुव्वत को ख़त्म करने और उन्हें तबाहो बर्बाद करने के बहुत से रास्ते बताए हैं. उनमें से कुछ ये हैं -(१) ज़रूरी है कि दलीलों (तर्क) से यह साबित किया जाए कि क़ब्रों को अहमियत देना और उनकी सजावट पर ध्यान देना बिदअत और शरीअत के ख़िलाफ़ है. धीरे धीरे इन क़बों को तोडकर लोगों को उनकी ज़ियारत से रोका जाए. (२) दूसरा अहम काम हमें यह करना होगा कि हम सच्चे सादात और उलमाए दीन के सरों से उनकी पगडियाँ उतरवाएं ताकि पैग़म्बरे ख़ुदा से जुडे रहने का सिलसिला ख़त्म हो और उलमा का एहतिराम छोड़ दें. (३) पैग़म्बरे इस्लाम (ﷺ) और उनके जानशीनों (उत्तराधिकारियों) और पूरे तौर से इस्लाम की बुज़ुर्ग हस्तियों के निरादर और अपमान का सहारा लेकर और इसी तरह शिर्क व बिदअत परस्ती के तरीक़ों और रस्मों को मिटाने के बहाने मक्का व मदीना और दूसरे शहरों

में जहाँ तक हो सके मुसलमानों की ज़ियारतगाहों (तीर्थस्थलों) और मक़बरों की तबाही और तोड़ फोड़.

चेतावनी : मूमिन होने के लिये तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान लाना ज़रूरी है मगर कुफ़्र व बेदीनी के लिये यह ज़रूरी नहीं कि कुरआने मजीद की हर हर आयत का इन्कार किया जाए या तमाम अहादीस का इन्कार किया जाए. बल्कि किसी एक आयत का इन्कार भी कुफ़्र और बेदीनी के लिये काफ़ी है अगरचे बाक़ी तमाम कुरआने मजीद पर ईमान रखता हो.

मुसलमान इन याद-दाशतों को ग़ौर से पढ़ें और फिर डॉ० ज़ाकिर नाइक वग़ैरह जैसे दीन के नाम निहाद ठेकेदारों के कारनामे व अक़ीदे और सोच देखें तो उनके सही चेहरे मोहरे सामने आ जाएंगे और मालूम हो जाएगा कि उनका खुफ़िया केन्द्र कहाँ है.

हम खास कर शुक्रगुज़ार हैं

सैय्यिद आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी बरकाती

का जिन्हों ने क़लील मुद्दत में इस उर्दू किताब को हिन्दी में तर्जुमा किया।

उम्मीद है कि जो लोग इस बाबत वाक़ई ज़हनी उलझन में फंसे हुए हैं, उन्हें इस किताब से पूरा इत्मीनान हासिल हो जाएगा. मौला तआला इस किताब को मुसलमानों के लिये लाभकारी और गुमराहों के लिये हिदायत का ज़रिया बनाए. आमीन.

अशफ़ाक़ अहमद ठाकुर शाफ़ई शरीफ़ी

Mobile : 9892204755
E-mail : isfkokan@gmail.com

तक़रीज़े जलील

सैय्यिद आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी बरकाती

सज्जादा-नशीन, आस्तानए आलियह क़ादरियह बरकातियह, मारेहरा मुतहहरा.

بسم الله الرحمٰن الرحيم

نحمده ونصلی و نسلم علی رسوله الکریم علیه وعلی آلهٖ

و صحبه افضل الصلاة والتسليم

सिर्फ हम ही हक़ पर हैं बाक़ी सब नाहक़ - यह बात आज से नहीं बल्कि एक ज़माने से चली आ रही है. क़ुरआन शरीफ़ में भी इसी तरह का दअवा करने वाले दो फ़िर्क़ों यहूद व नसारा का ज़िक्र फ़रमाया गया है. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हुमा की रिवायत है कि नबीये करीम (ﷺ) ने एक बार अपने सहाबा के झुरमुट में फ़रमाया -

وَاِنَّ بَنِی اِسْرَائِیْلَ تَفَرَّقَتْ عَلٰی ثِنْتَیْنِ وَ سَبْعِیْنَ مِلَّةً وَتَفْتَرِقُ اُمَّتِیْ عَلٰی ثَلٰثٍ وَّ سَبْعِیْنَ مِلَّةً کُلُّھُمْ فِی النَّارِ اِلَّا مِلَّةً وَّاحِدَةً.

यानी बनी इस्राईल बहत्तर मज़हबों में बट गए थे और जल्द ही मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़ों में बट जाएगी जिनमें एक को छोड़कर सब जहन्नमी होंगे. ग़ैबदाँ आक़ा (ﷺ) की ज़बाने मुबारक से इतनी भारी बात सुनकर सहाबाए किराम का चिन्ता में पड़ जाना फ़ितरी बात थी. वो यह जानने के लिये बेचैन थे कि वह एक फ़िर्क़ा कौन सा होगा जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नाजी यानी निजात पाया हुआ क़रार दिया है. सहाबा ने हिम्मत करके नबीये करीम (ﷺ) से पूछ ही लिया - قالوا من هي يا رسول الله؟

अर्ज़ किया - इरशाद फ़रमाएं कि वह एक नाजी फ़िर्क़ा कौन है? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया- मा अना अलैहे व अस्हाबी. यानी मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर अमल करने वाला.

अल्लाह के सच्चे रसूल (ﷺ) ने नाजी होने का यह एक ऐसा मैअयार मुकर्रर फ़रमा दिया जो हमें खरे खोटे की पहचान में मदद देता है. इसके बरखिलाफ़ कुछ लोगों ने मुसलमानों की क़दीम व अस्ली जमाअत

यानी एहले सुन्नत व जमाअत से रिश्ता तोड़ कर, सिराते मुस्तक़ीम से मुंह मोड़ कर अपनी अलग जमाअतें बना लीं जो अपने पहले ही दिन से अनअमता अलेहिम के रास्ते पर चलने वालों से झगड़ते चले आते हैं और अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम के फ़ज़ायलो कमालात का इन्कार करके तौहीन व तन्क़ीस का जुर्म करना तो उनका पसन्दीदा काम होकर रह गया है. आज ऐसे लोग मौजूद हैं जो यह कहते हैं कि सब हक़ पर हैं, सब हमारे भाई हैं, सब एक अल्लाह का कलिमा पढ़ते हैं, एक क़ुरआन को मानते हैं, एक रसूल पर ईमान रखते हैं, सबका क़िबला एक. ऐसे कमअक़ल लोग हक़ीक़त में रसूलुल्लाह (ﷺ) की इस हदीस के इन्कारी हैं.

इस बरकाती फ़क़ीर को साल 1429 हिजरी में रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे में उमरे की सआदत हासिल हुई. मदीनए मुनव्वरा में हिन्दुस्तान के एक मुफ़ती साहिब मुलाक़ात को आए तो बातों बातों में उनसे पूछा - मुफ़ती साहिब, हम लोगों को हरमैने शरीफ़ैन के नज्दी इमामों के पीछे नमाज़ अदा करने से मना किया जाता है जब्कि हम लोगों को उनके अक़ीदों के बारे में साफ़ साफ़ मालूम नहीं है कि उनके अक़ीदे एहले सुन्नत व जमाअत के ख़िलाफ़ हैं. मुफ़ती साहिब ने फ़रमाया - सऊदी अरब में इमामत का मन्सब सिर्फ़ उन्हीं लोगों को सौंपा जाता है जो एक हलफ़नामे पर दस्तख़त करते हैं. इस हलफ़नामे में चार बातों की तस्दीक़ करनी लाज़मी है. पहली - हयातुन्नबी का इन्कार. यानी यह कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मआज़ल्लाह मर कर मिट्टी में मिल गए हैं. दूसरी - रसूलुल्लाह (ﷺ) को इल्मे ग़ैब नहीं है. तीसरी - रसूलुल्लाह (ﷺ) हाज़िर नाज़िर नहीं हैं और चौथी - रसूलुल्लाह (ﷺ)अपनी ज़ात से किसी को नफ़ा नहीं पहुंचा सकते. सऊदी अरब के नज्दी दारुल उलूम (जो रियाज़ यानी नज्द के पास कसीम नामी जगह में वाक़े है) से फ़राग़त पाने वाले मौलवी को इमाम की मुलाज़मत हासिल करने के लिये इन चार बातों की हलफ़िया तस्दीक़ करनी पड़ती है.

यह बात उन लोगों के ग़ौर करने की है जो हिजाज़े मुक़द्दस जाकर बेधड़क नज्दी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हैं. जब उन्हें टोका जाता है तो वो यह कहते हैं - हमें किसी को जन्नती या जहन्नमी कहने का हक़ नहीं है. हरमैने शरीफ़ेन में इमामत करने वाले शख़्स से ज़ियादा खुशनसीब कौन

होगा और हरमे मक्का या मस्जिदे नबवी में बाजमाअत नमाज़ अदा करने से ज़ियादा सवाब कहाँ हासिल होगा. हक़ीक़त तो यह है कि हरमैने शरीफ़ेन में नज्दी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले बज़ाहिर अपने आपको नमाज़ी समझते हैं मगर दर हक़ीक़त वो अपनी सारी नमाज़ों को ज़ाया करके बेनमाज़ी की सूरत में वतन लौटते हैं.

इस बार उमरे के दौरान एक और अहम बात मालूम हुई. मेरे कुछ मुख़लिस मुरीद मदीनए मुनव्वरा में कई साल से कारोबार करते हैं. उन्हीं में से एक मुरीद ने मुझे बताया - हज़रत एक नज्दी मौलवी ने अपने मकान के पर्दे बनाने के लिये मेरे कफील से राबिता किया. जब मैं उसके आर्डर की तकमील के लिये पर्दे तैयार करे उसके घर गया तो बात चीत के दौरान मौलवी ने मुझ से पूछा : कया तुम शिया हो. मैंने कहा : नहीं मैं बरेलवी हूँ. इसपर उसने बुरा सा मुंह बनाया. मैंने उससे पूछा - आप इस पाक शहर में रहते हो और अल्लाह के रसूल के रौज़े पर निगहबानी की डयूटी करते हो. आप लोग ज़ायरीन के साथ बदसुलूकी कयों करते हो, उनके साथ धक्का मुक्की कयों करते हो, उनको ज़लील कयों करते हो. इसपर वह नज्दी मौलवी छूटते ही बोला - पहल किसने की थी? नज्द को ज़लील करने की शुरूआत कहाँ से हुई थी? मआज़ल्लाह, सुम्म अस्तग़फिरूल्लाह. क़ारईने किराम, आप समझ सकते हैं कि उस मलऊन का इशारा किस तरफ था. वह नबी(ﷺ) के उस इरशादे गिरामी के हवाले से बात कर रहा था जिसमें दानाए ग़ैब (ﷺ) ने फ़रमाया था कि नज्द फ़ित्नों की ज़मीन है और वहाँ से शैतान का सींग उभरेगा. गोया आजके नज्दी मलाइना आक़ा(ﷺ) से वह बात इरशाद फ़रमाने का बदला ले रहे हैं.

उस मुरीद ने मुझे यह भी बताया कि नज्दी मलाइना ने एक सोची समझी साज़िश के तहत मदीनए मुनव्वरा के कबूतरों को हलाक करने का खेल शुरू किया है. सऊदी बच्चों को इस काम पर लगा दिया गया है कि रात के वक़्त गुलेलों के ज़रिये कबूतरों को उनके आशियानों में मार गिराते हैं और नज्दी आक़ाओं से इनाम पाते हैं. इसके अलावा नज्दी मौलवियों ने इस बात का भी एहतिमाम किया है कि जन्नतुल बक़ीअ के कबूतरों को ज़हरीला दाना डाला जाए ताकि वो उसे खाकर मर जाएं. अब तक हज़ारों कबूतरों को मौत के घाट उतारा जा चुका है. यह इस लिये किया जा रहा है कि ये कबूतर उन

कबूतरों की नस्ल से कहे जाते हैं जिन्हों ने हिजरते नबवी के वक़्त ग़ारे सौर के दहाने पर घौंसला बना रखा था और अन्डे दिये थे. नज्दी हुकमराँ हर नबवी आसार मिटाने की हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं. उनका बस नहीं चलता कि गुम्बदे ख़ज़रा को ही शहीद कर डालें जो उनके अक़ीदे के मुताबिक़ दुनिया का सबसे बड़ा बुत है. नज्दी ख़बीसों ने मस्जिदे नबवी में और उसके आसपास ऐसे हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी एजेन्ट छोड़ रखे हैं जो आशिक़ाने रसूल (ﷺ) को बुरे अक़ाइद की तरफ माइल करते हैं. मैंने खुद एक पाकिस्तानी मौलवी को यह कहते सुना कि एक क़ब्र तुम्हें कया दे सकती है.

इस तरह के ख़राब अक़ीदे रखने वालों को अचछा समझना कहाँ तक दुरूस्त है. कया रसूलुल्लाह (ﷺ) की तौहीन करने वाला शख़्स मुसलमान कहलाए जाने के क़ाबिल है? ऐसे बद-अक़ीदा लोगों को अपना मरक्जे अक़ीदत बनाना, उनको अपना इमाम समझना, उनके पीछे नमाज़ पढ़ना किस हद तक जायज़ है? वहाबी हों, नज्दी हों, देवबन्दी हों या जमाअते एहले हदीस, ये सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं. मसल मशहूर है चोर का भाई गिरह कट. इन सबके बातिल अक़ीदों पर बरसों पहले सैरे हासिल बहस हो चुकी है और हुज्जत तमाम करने के बाद इन अक़ाइद को कुफरिया अक़ाइद तस्लीम किया जा चुका है और इन अक़ाइद के मानने वालों या उनकी पैरवी करने वालों पर भी कुफ्र का फ़तवा लगाया जा चुका है.

देवबन्दी जमाअत के धर्म-गुरूओं को जम्हूर के अक़ीदों से इन्कार का बड़ा ही शौक़ है कभी कोई सरफिरा आलिम यह लिख देता है कि अल्लाह तआला झूट बोलने पर क़ादिर है (मआज़ल्लाह) कभी कोई मलऊन मौलवी यह लिख देता है कि नमाज़ की हालत में अगर रसूलुल्लाह(ﷺ) का ख़याल दिल में आ जाए तो मवेशियों के ख़याल से भी बदतर है (मआज़ल्लाह) कभी कोई बद दिमाग़ मुल्ला यह लिख मारता है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मआज़ल्लाह मर कर मिट्टी में मिल गए.. ये और इस तरह के सैंकडों कुफरिया अक़ीदे इस देवबन्दी जमाअत के पेशवाओं के क़लम से निकले हैं. ऐसों को अपना रूहानी पेशवा मानना यक़ीनन अव्वल दर्जे की गुमराही है. ऐसे बातिल अक़ीदे रखने वाले पिछली सदी तक चन्द मुट्ठी भर

लोग थे मगर पेटरो-डालर के बल पर इनकी तअदाद दिन बदिन बढ़ती जा रही है. ये लोग इस्लाह के पर्दे में तौहीद के नाम पर शिर्क और कुफ्र की दुकान खोले हुए हैं. क़ुरआनी आयतों और अहादीसे रसूल(ﷺ) को तोड़ मोड़ कर पेश कर रहे हैं और भोले भाले मुसलमानों को गुमराह कर रहे हैं. आज ज़रूरत इस बात की है कि जो नज़रियात क़ुरआन और हदीस से टकराते हैं उन्हें मुस्तरद कर देना चाहिये. क़ुरआन का हुक्म है :

فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِیْ شَیْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَی اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ-

यानी अगर तुम्हारा किसी बात पर इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल(ﷺ) की जानिब फेर दो. अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का वाज़ेह हुकम है -

وَمَنْ یُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ م بَعْدِ مَا تَبَیَّنَ لَهُ الْهُدٰی وَیَتَّبِعْ غَیْرَ سَبِیْلِ الْمُؤْمِنِیْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰی وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِیْرًا-(پارہ ۵، سورۃ النساء، آیت۱۱۵)

यानी और जो रसूल ﷺ का ख़िलाफ़ करे बाद इसके कि हक़ रास्ता उसपर खुल चुका और मुसलमानों की राह से जुदा चले, हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और कया ही बुरी जगह पलटने की. और इसी सिलसिले में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इन अल्फ़ाज़ में भी हुकम दिया है :

وَاتَّبِعْ سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ-(سورۃ لقمان آیت۱۵)

यानी और उसकी राह चल जो मेरी तरफ रूजूअ लाया.

मुंबई की इमामे शाफ़ई फ़ाउन्डेशन के रूहे-रवाँ जनाब अशफ़ाक़ अहमद ठाकुर शाफ़ई शरीफ़ी ने तिहत्तर में एक उनवान से एक बहुत उमदा किताब तरतीब दी है जिसमें मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से नाजी और नारी फ़िर्क़ों के अक़ीदों को पेश किया गया है. यह एक ऐसा आईना है जिसमें अवामे एहले सुन्नत को अपना हक़ीक़ी अकस देखने में मदद मिलेगी और यह जानने को भी मिलेगा कि हम अपनी सोच और अक़ीदों की रौशनी में किस फ़िर्क़े से तअल्लुक रखते हैं, निजात पाए हुए फ़िर्क़े से या भटके हुए नारी फ़िर्क़े से. मुझे उम्मीद है कि जनाब अशफ़ाक़ अहमद की यह काविश अवाम में हाथों

हाथ ली जाएगी और हिदायत का एक रौशन मीनार साबित होगी, इन्शा-अल्लाहु तआला.

सैय्यिद आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी बरकाती
सज्जादानशीन व मुतवल्ली, आस्तानए आलियह क़ादरियह
बरकातियह नूरियह अमीरियह, मारहरा शरीफ़, यू.पी.
हाल मुक़ीम : बरकाती हाउस, डोंगरी, मुंबई - 400009.
E-mail: sarasool@yahoo.com
मोबाइल : 09870786292.

तक़रीज़े जमील

मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रत मौलाना अब्दुल मुबीन नुअमानी मिस्बाही

بسم الله الرحمٰن الرحيم

نحمده ونصلی ونسلم علی رسوله الكريم وعلی آله وصحبه اجمعين

ज़ेरे नज़र किताब ७३ में एक एक अछूती किताब है जो कोई मुस्तक़िल तस्नीफ़ तो नहीं मगर कई एक तसानीफ़ और मज़ामीन का मजमूआ है जिसमें ख़ास तौर से इस बात को मद्दे नज़र रखा गया है कि मौजूदा फ़िर्क़ों में कौन हक़ पर है. ये मज़ामीन बड़े बलनद्र-पाया हज़रात के हैं जिन्हें जनाब अशफ़ाक़ अहमद साहिब शाफ़ई शरीफ़ी ने बड़े सलीक़े से सजाया है. इस मजमूअए मज़ामीन को घर घर पहुंचाया जाए ताकि हक़ का उजाला फैले और गुमरही बद-एतिक़ादी की अन्धेरियाँ दूर हों. आज बहुत से लोग तज़बज़ुब के शिकार हैं, उन्हें समझ में नहीं आता कि हक़ पर कौन है. उनके लिये यह किताब शम्ए राह का काम देगी और इसके मुतालए से इन्शाअल्लाह ज़रूर वो शक और तज़बज़ुब के दलदल से निकल कर ईमान व यक़ीन की शाहराह पर आ जाएंगे.

जनाब अशफ़ाक़ अहमद साहिब शाफ़ई शरीफ़ी इस सिलसिले में शुक्रिये के मुस्तहिक़ हैं कि उन्हों ने बड़ा अच्छा और मुफीद कारनामा अन्जाम दिया है. मौला अज़्ज़-व-जल्ल उन्हें जज़ाए ख़ैर दे और इस किताब को मक़बूले ख़ासो आम कर दे. आमीन बिजाहि सैय्यिदिल मुरसलीन अलैहे व आलिही व सहबिहिस्सलातु वत्तस्लीम.

मुहम्मद अब्दुल मुबीन नुअमानी क़ादरी,

अल-मजमउल इस्लामी, मिल्लत नगर, मुबारकपुर, आज़मगढ़.

७ रबीउल अव्वल १४३० हिजरी.

तक़रीज़े अनीक़

मौलाना अब्दुल हक़ रिजवी मिस्बाही

(अल-जामिअतुल अशरफियह, मुबारकपुर)

حامداً و مصلياً و مسلماً

हदीसे पाक में है -

وَاِنَّ بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ تفرَّقَتْ عَلٰی ثِنْتَیْنِ وَ سَبْعِیْنَ مِلَّةً وَتفْتَرِقُ اُمَّتِیْ عَلٰی ثَلٰثٍ وَّ سَبْعِیْنَ مِلَّةً کُلُّھُمْ فِی النَّارِ اِلَّا مِلَّةً وَّاحِدَةً۔

बनी इस्राईल ७२ फ़िर्क़ों में बट गए और मेरी उम्मत ७३ फ़िर्क़ों में बट जाएगी, एक फ़िर्क़ा जन्नती होगा बाक़ी सब जहन्नमी. क़ालू, सहाबा ने अर्ज़ की - مَنْ هِيَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ۔ वह नाजी फ़िर्क़ा कौन है, या रसूलल्लाह. .

क़ाला - फ़रमाया - مَا اَنَا عَلَیْهِ وَاَصْحَابِیْ۔

वह जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं यानी सुन्नत के पैरो. दूसरी रिवायत में है, फ़रमाया -هُمُ الْجَمَاعَةُ ۔

वह जमाअत है यानी मुसलमानों का बड़ा गिरोह जिसे सवादे अअज़म फ़रमाया. और फ़रमाया जो इससे अलग हुआ जहन्नम में अलग हुआ. इसी वजह से इस नाजी फ़िर्क़े का नाम एहले सुन्नत व जमाअत है. इन गुमराह फ़िर्क़ों में से बहुत से पैदा होकर ख़त्म हो गए.

लेकिन इस वक़्त सबसे बड़ा चैलेन्ज और एहले सुन्नत व जमाअत को सबसे ज़ियादा नुकसान वहाबियों और देवबन्दियों से पहुंच रहा है. इस धर्म का रुकने अअज़म अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तौहीन और मेहबूबाने खुदा की तज़लील है. हर मआमले में वही पहलू इख़्तियार करते हैं जिससे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और उसके रसूले अअज़म ﷺ और दूसरे मेहबूबाने इलाही की तहक़ीरो तौहीन का पहलू निकलता हो. मुजद्दिदे अअज़म अअला हज़रत इमाम अहमद रजा कुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़ अर्ज़ करते हैं -

और तुम पर मेरे आक़ा की इनायत न सही
नज्दियो कलिमा पढ़ाने का भी एहसान गया

इस मक़ाम पर सिर्फ़ एक इबारत देवबन्दियों और वहाबियों के मुसल्लम पेशवा और इमाम मौलवी इस्माईल देहलवी की पेश करता हूँ जिससे बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि यह जमाअत किस क़दर मुंहफट और गुस्ताख़ है. मौलवी इस्माईल देहलवी अपनी किताब सिराते मुस्तक़ीम सफ़हा 86 पर लिखते हैं -

صرف ہمت بسوئے شیخ و امثال آں از مین گو جناب رسالت مآب باشند

بچندیں مرتبہ بدتر از استغراق درصورت گاؤ وخر خود است۔ الیٰ آخرہ۔

इस इबारत का मतलब यह है कि नमाज़ में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का ख़याल लाना अपने गधे और बैल के ख़याल में डूब जाने से कई गुना ख़राब है और हुज़ूर (ﷺ) का ख़याल चूंकि तअज़ीम के साथ आता है लिहाज़ा शिर्क की तरफ खींच ले जाता है. ये हैं इमामुल वहाबियह के कलिमाते ख़बीसह और किसकी शान में, हुज़ूरे अक़दस (ﷺ) की शान में. जिसके दिल में राई बराबर भी ईमान होगा वह ज़रूर यह कहेगा कि इस क़ौल में गुस्ताख़ी ज़रूर है. इस मक़ाम पर वहाबी और देवबन्दी आलिमों से यह सवाल है कि वो बताएं कि उनके नज़्दीक नमाज़ पढ़ने की क्या सूरत होगी इस लिये कि नमाज़ में हुजूर का ज़िक्र है, तअज़ीम ही के साथ है. नमाज़ में कुरआने मजीद का पढ़ना फ़र्ज है उसमें भी हुज़ूर (ﷺ) की तारीफ़, तौसीफ़ और ज़िक्र है ख़ासकर अत्तहियात में हुज़ूर (ﷺ) पर सलाम भेजा जाता है और आपकी रिसालत की शहादत और गवाही दी जाती है. लिहाज़ा अत्तहियात में हुज़ूर(ﷺ) का ख़याल आना तो ज़रूरी हुआ - अब ख़याल की दो ही सूरतें हैं, तअज़ीम के साथ आएगा या तहक़ीर के साथ. अगर तअज़ीम के साथ हुज़ूर(ﷺ) का ख़याल आया तो इस्माईल देहलवी के कथन के अनुसार शिर्क की तरफ़ खींच ले गया और जब वह शिर्क हो गया तो उसकी नमाज़ अब नमाज़ कहाँ रही और अगर हिक़ारत के साथ हुज़ूर(ﷺ) का ख़याल आया तो भी यक़ीनन कुफ़्र हुआ फिर कैसी नमाज़ कयोंकि हिक़ारत बिल-इज्माअ कुफ़्र है. अब इस शिर्क व कुफ़्र से बचने के लिये तीसरी सूरत यह इख़्तियार की जाए कि अत्तहियात ही न पढ़े. तो उस

सूरत में भी नमाज़ न होगी क्योंकि अत्तहियात का पढ़ना वाजिब है और वाजिब को जान बूझकर छोड़ देने से नमाज़ पूरी नहीं होती. लिहाज़ा साबित होगया कि इस्माईल के मज़हब पर नमाज़ पढ़ने की कोई सूरत ही नहीं.

नाज़िरीन, मुलाहिज़ा फ़रमाएं यह है वहाबियों और देवबन्दियों के इमाम व पेशवा के क़ौल की ख़राबी और ख़बासत. अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल इन बद मज़हबों से मुसलमानों के ईमान को मेहफ़ूजो मामून रखे. मुजद्दिदे अअज़म अअला हज़रत कुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़ फ़रमाते हैं -

यह है दीँ की तक़वियत उसके घर यह है मुस्तक़ीम सिराते शर
जो शक़ी के दिल में हैं गाव ख़र तो ज़बाँ पे चूढा चमार है
वह हबीब प्यारा तो उम्र भर करे फ़ैज़ो जूद ही सर बसर
अरे तुझको खाए तपे सक़र तेरे दिल में किस से बुखार है

आमदम बर सरे मतलब. उलमाए रब्बानिय्यीन ने जो बद-मज़हबों का रद्दो-इस्तीसाल फ़रमाया और मज़हबे हक़ एहले सुन्नत व जमाअत को साबित फ़रमाया है इसी सिलसिले की एक कड़ी यह किताब (तिहत्तर में एक) है. इस किताब में जमाअते एहले सुन्नत के अकाबिर की तहरीरों को बहुत खुशउसलूबी के साथ जमा किया गया है. किताब तैयार करने वाले हमारे करम फ़र्मा हैं जो इन्तिहाई नेक और बाशरअ हैं और तअलीमो तअल्लुम उनकी ज़िन्दगी का मेहबूब तरीन मशग़ला है यानी जनाब अशफ़ाक़ अहमद साहिब शरीफ़ी ज़ीद मज्दुहुमुल आली. मौला अज़्ज़ व जल्ल उनकी इस दीनी ख़िदमत को शरफे क़ुबूल अता फरमाए और इसके ज़रिये अपने बन्दों के ईमान व अमल की हिफ़ाज़त फ़रमाए. यह एक निहायत उमदा और अछूता इन्तिख़ाब है जिससे इन्शाअल्लाह लोगों के अक़ाइद व अअमाल की हिफ़ाज़त ज़रूर होगी. मौला अज़्ज़ व जल्ल किताब के मुअल्लिफ़ (तैयार करने वाले) को और तौफ़ीक़ बख़्शे ताकि दीनो सुन्नियत का काम उनसे अन्जाम पाता रहे. आमीन बिजाहि हबीबिहिल मुर्सलीन.

अब्दुल हक़ रिज़वी
बतारीख़ ९ रबीउन नूर १४३० हिजरी.

पेश-लफ़्ज़

نحمده ونصلى على رسوله الكريم

मुश्किले नेस्त कि आसाँ न शवद

(कौन सी मुश्किल है जो आसान नहीं होती)

लेखक : सैय्यिद रिज़वान अहमद रिफ़ाई बरकाती शाफ़ई

कोंकण क्षेत्र सदियों से इल्मो अदब, शेअरो सुख़न और फ़ुनूने लतीफ़ा का गहवारा रहा है और अल्लाह के वलियों की सरज़मीन है जिनके रूहानी फ़यूज़ो बरकात से यहाँ के रहने वालों में शरीअत व तरीक़त का सुन्दर संगम पाया जाता है. इन अल्लाह वालों के दम-क़दम से ही इल्मो अदब और शेअरो सुख़न की मेहफिलें रौशन और ताबाँ हैं.

दीनो मस्लक की हिमायत में लिखने वालों को अदबी तबक़े से कुछ अलग तसव्वुर किया जाता है. अदब बराए अदब पर मर मिटने वालों का यह बटवारा मुझे तो आज तक समझ में न आ सका. ऐसे दानिशवरों की तहरीरों को उर्दू अदब के ज़ख़ीरों में गिराँक्द्र इज़ाफ़ा तो कहा जा सकता है मगर मक़सूदे ज़िन्दगी व मन्शूरे हयात नहीं. वह ज़माने को बेहतर से बेहतर अदीब तो दे सकते हैं मगर खुसरौ के दिल का सोज़ो गुदाज़ नहीं. दीनो मस्लक के अलम बरदारों का क़ाफिला अरबाबे इल्मो अदब की अदम-तवज्जही और बेऐतिनाई का शिकार हुआ. यह कोई महज़ अफ़साना नहीं बल्कि मेरे वो मेहसूसात व मुशाहिदात हैं जो मबनी बर हक़्क़ो सदाक़त हैं. असहाबे फ़िक्रो फ़न की इस मसलिहत पसन्दी के अस्बाबो अस्रार तो वही ख़ूब जानें मैं तो सिर्फ़ दस्त बदुआ हूँ रब्बे ग़फ़ूर उनके हालो क़ाल की इस्लाह फरमाए.

आमदम बर सम्ते सुख़न. गुज़िश्ता चन्द बरसों से देवबन्दी मकतबे फ़िक्र ने तौहीदो सुन्नियत के नाम पर और बअज़ फ़लाही तन्ज़ीमों ने उरूजे अदबो सिक़ाफ़त के नाम पर कोंकण की उभरती नस्ल के अक़ाइद को मजरूह करने के लिये ऐसी तलवारें मयान से बाहर की हैं जो नज़र नहीं आतीं और ग़ैर शऊरी तौर पर उनका जामए ईमानो महब्बत तार तार होता जा रहा है. और बड़े क़लक के साथ क़लम बरदाश्ता लिख रहा हूँ कि देवबन्दियों की यह तख़रीबकारी किसी मरज या वबा की तरह फैलती जा रही है मगर मुसलमानाने कोंकण ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार होने का नाम ही नहीं

लेते, न जाने उनका यह ख़ुमार व जमूद कब टूटेगा.

ऐसे नाज़ुक और पुरफितन हालात में इमामे शाफ़ई फ़ाउन्डेशन, मुंबई और दूसरी सुन्नी तहरीकों को इमामे शाफ़ई अलैहिर्रहमह और अअलाहज़रत मुहद्दिसे बरेलवी का रूहानी फ़ैज़ानो तसर्रुफ़ ही कहा जा सकता है. ग़ायत दर्जा मसर्रत व तवक़्क़ो है (इन्शाअल मौला) इस तहरीक से मुस्तक़बिले क़रीब में मुस्बित नताइज बरआमद होंगे. यूं तो इसने अपनी कमसिनी के बावजूद मैदाने नश्रो-इशाअत में सिक्के बिठा दिये हैं. गुस्ताख़ाने रसूल ﷺ की निक़ाबकुशाई हो या मज़हबे इमामे शाफ़ई रदियल्लाहो अन्हो (फ़िक्हे शाफ़ई) में तहरीफ़ करने वालों का दन्दान शिकन जवाब, एहक़ाक़े हक़ व इब्ताले बातिल के लिये कमर बस्ता हैं. वाहिबे लायज़ाल बानियाने तहरीक व हामियाने फ़ाउन्डेशन के मालो मताअ, मज्दो शरफ में तरक्क़ियाँ अता फ़रमाए. इस्तक़लाल की दौलतों से सरफराज़ फ़रमाए.

७३ में एक इमामे शाफ़ई फ़ाउन्डेशन की ग़ालिबन २०वीं पेशकश है जिसके मुरत्तब तहरीक के रूहे-रवाँ अशफ़ाक़ शरीफ़ी साहिब हैं. इनके हुस्ने इन्तख़ाब पर मैं इन्हें दाद और दुआ देता हूँ. ७३ में एक दर हक़ीक़त अकाबिर उलमाए किराम के बेहतरीन मज़ामीन का मज्मूआ है. सबसे पहला मज़मून वली सूरत वली सीरत रईसुल क़लम अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमह के निगीरिशात का मुश्कबार गुलदस्ता है. अल्लामा के क़लम ने लाखों फ़रजन्दाने तौहीद के मशामे जानो ईमान को मुअत्तर किया है. रईसुल क़लम का शुमार मशाहीरे उम्मत व दानिशवराने क़ौमो मिल्लत में होता है आपकी हश्त पहलू शख़्सियत का लम्हा लम्हा, रहरवाने शौक़े मन्ज़िल के लिये नमूनए अमल है. खुसूसन मसलके एहले सुन्नत व हिमायते मस्लके अअलाहज़रत की शीराज़ाबन्दी में आपने कलीदी किरदार अदा किया.

अल्लामा के मक़ालात में आपको ईमान के अअला तहक़ीक़ी पैमाने मिलेंगे और इल्मी तदब्बुर व इखलास की ग़ैर मअमूली मिसालें भी. तहक़ीक़ो तदक़ीक़ की नई जहतें मिलेंगी और अस्रे रवाँ के अदब पारे भी. अल्लामा का क़लम किसी भी उनवान के तमाम गोशों को उजागर करने का मुदल्लल मलिका रखता है. आपके क़लम का रूख़ जब हम्दे इलाही की तरफ होता है तो वह सुजूदे बन्दगी लुटाता है और जब उसका रूख़ ख़ासाने ख़ुदा की तरफ

होता है तो यक़ीनो ईमान, अज़मतो अक़ीदत, रिफ़अतो जलालत, तअज़ीमो तौक़ीर, हिज्रो वस्ल की हज़ारों दास्तानें लिख जाता है और नोके क़लम से निकला हुआ एक एक क़तरा अपने क़ारी को यही दर्स दे जाता है कि रसूले गिरामी ﷺ और मेहबूबाने खुदा से वाबस्तगी और महब्बत ही हासिले दीन, पैमानए ईमान है और अक़ीदए तौहीद का संगे बुनियाद है और जब आपका क़लम दुशमनाने रसूल ﷺ पर हमला आवर होता है तो ज़ुलफ़िक़ारे हैदरी का परतौ नज़र आता है. ताजदारे विलायत हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमह आप के क़लम के इसी तेवर से मुतअल्लिक़ फ़रमाया करते थे - मुनाज़िरे एहले सुन्नत अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमह का क़लम कुफ्र को तड़पा तड़पाकर मारता है लेकिन क़लम की तलवार पर ख़ून का एक धब्बा भी नज़र नहीं आता है. ज़लज़लह नामी किताब के रवाँ दवाँ पैरायए इजहार से क़स्रे नज्द में आज भी ज़लज़लह तारी है जिसके झटके ता क़यामे क़यामत मेहसूस किये जाएंगे. आपके बावुज़ू क़लम ने शौकते अल्फ़ाज़ के ज़रिये सादा लौह मुसलमानों की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब पैदा कर दिया है. अब आप बेलाग होकर औराक़ उलटें और इस मस्तूरह हक़ीक़त की सदाक़त को मेहसूस भी कर लें.

आज शब, मदीने का सफ़र है. रवानगी से क़ब्ल अपने जज़बात और दुआओं की सौग़ात को सिपुर्दे क़िर्तास कर रहा हूँ. रब्बे गफ़ूर बतुफैले राज़दारे वहदत ﷺ अशफ़ाक़ अहमद शरीफ़ी और उनकी पूरी टीम को क़दम क़दम पर इखलास, असर, अज़्म, हौसला से नवाज़े. उन्होंने तक़ाज़ाए वक़्त के मुताबिक़ असलाफ़ की अमानतों और तहज़ीबी विरासतों की हिफ़ाज़त का जो बीड़ा उठाया है इसमें उन्हें कामयाबी से हमकिनार फ़रमाए. रोज़े हश्र उनके जज़बए ईसार व ख़ुलूस की लाज रखे. निहायत ही उजलत में अपने इन नासिहाना कलिमात पर रूखसत होना चाहता हूँ. इमामे शाफ़ई फ़ाउन्डेशन अपने दीनी सफ़र को इस कुव्वते इरादी के साथ जारी रखे. मुश्किले नेस्त कि आसाँ न शवद.

وصلی اللہ علیہ و آلہ وصحبہ و جمیع امتہ اجمعین برحمتک یا ارحم الراحمین.

सैय्यिद रिज़वान अहमद रिफ़ाई बरकाती शाफ़ई

ख़ादिमे तदरीस, जामिआ एहले सुन्नत सादिकुल उलूम शाही मस्जिद, नासिक शरीफ़. ८ रबीउल अव्वल १४३० हिजरी बरोज़ जुमुआ, बवक़्ते मग़रिब.

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ कुरआन में

रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी क़ुद्दस सिर्रहू

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله رب العٰلمين والصلوٰة والسلام على سيد المرسلين

وعلىٰ آله وصحبه وحزبه اجمعين ﷺ

कोई खुला हुआ काफ़िर अगर रसूले अरबी ﷺ की अज़मतो शान का मुन्किर हो तो यह चन्दाँ तअज्जुब –खेज़ अम्र नहीं है कि वह बेगानए महज़ है, कलिमए इस्लाम के साथ उसका रिश्ता ही कया है कि वह पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ का एहतिराम बजा लाएगा.

लेकिन वक़्त का सबसे बड़ा मातम तो यह है कि एक गिरोह जो अपने आपको मुसलमान भी कहता है मुस्लिम मआशिरे के साथ मज़हबी इश्तिराक का भी मुद्दई है मगर दिल का ग़ैज़ और जबान की जसारत यह है कि मुहम्मदे अरबी ﷺ सिर्फ़ एक नामाबर हैं, खुदा की जनाब में उनकी हैसियत एक पैग़ामरसाँ से ज़ियादा नहीं है. वह हमारी तरह बशर हैं बिल्कुल एक मअमूली बशर. (मआज़ल्लाह)

हो सकता है कि कुछ लोगों के लिये यह अन्दाज़े फ़िक्र बहुत ज़ियादा मअयूब न हो लेकिन हक़ीक़त से क़रीब होकर सोचिये तो इन्सानी तख़ैय्युल की यही वह मन्हूस सरजमीन हैं जहाँ से अमली और एतिक़ादी मफ़ासिद के बेशुमार काँटों ने जन्म लिया है.

चूंकि इस वक़्त मेरा मौज़ूए बहस यह मसअला नहीं है वरना मैं तफ़सील के साथ इस अम्र पर रौशनी डालता कि इस तरह के ज़हन से इस्लामी रूह की तवानाई को कितना शदीद नुकसान पहुंचा है. मुझे तो आज सिर्फ़ यह मसअला वाज़ेह करना है कि रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में उसके रसूल ﷺ की क़रारे वाक़ई हैसियत कया है.

यह मअलूम करना बन्दे की हुदूदे इख़्तियार से बाहर की चीज़ है. यह तो सिर्फ़ रब्बुल इज़्ज़त ही जानता है और वही बता सकता है कि उसकी बारगाह में उसके रसूल ﷺ की कया शान है.

जो लोग अपने ज़हन की फ़र्ज़ी बुनियादों पर मन्सबे रिसालत की

हदबन्दी करते हैं वह ज़रा इन्साफ़े नज़र के साथ ज़ैल की आयतों में क़ुरआन का तेवर मुलाहिज़ा फ़रमाएं और उनके मवाक़ए नुज़ूल को सामने रखकर फ़ैसला करें कि बात बात पर जिसकी अज़मते शान का इस दर्जा एहतिमाम किया जा रहा है कया मेहबूब के अलावा भी यह एजाज़ किसी नामाबर को आजतक मिल सका है ?

मैंने ज़ैल के मज़्मून को इस तरह तरतीब दिया है कि पहले शाने नुज़ूल, उसके बाद आयत और फिर हस्बे ज़रूरत उसकी मुख़्तसर तशरीह और नतीजा निकालने की तमाम तर ज़िम्मेदारी आपके ज़मीर को सौंप दी है कयोंकि अच्छे जमीर से किसी बद-दयानती का हादसा मुश्किल ही से वाक़े होता है.

पहली आयते करीमह -

शाने नुज़ूल : तफ़सीर की किताबों में मन्क़ूल है कि ज़मानए रिसालत के आग़ाज़ में बमस्लहते ईज़दी ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि चन्द दिनों तक नुज़ूले वही का सिलसिला रुक गया. कुफ्फारे मक्का को जब इसकी ख़बर हुई तो उन्हों ने इजराहे तअन यह कहना शुरू कर दिया -

وَدَّعَ رَبُّ مُحَمَّدٍ مُحَمَّدًا۔

यानी मुहम्मद ﷺ के रब ने मुहम्मद(ﷺ) को छोड़ दिया और उनकी तरफ़ से नज़र फेर ली. कुफ्फार की इस बदगोई से सरकार ﷺ के क़ल्बे मुबारक को सदमा पहुंचा और हुज़ूर(ﷺ) उदास रहने लगे.

रहमते यज़दानी से अपने मेहबूब की यह उदासी देखी न गई. ख़ातिरे अक़दस की तशफ़्फी के लिये फ़ौरन ही ये आयतें नाज़िल हुई -(तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफान, ख़ाज़िन, इब्ने जरीर)

وَالضُّحٰی ۝ وَالَّیْلِ اِذَا سَجٰی ۝ مَا وَدَّعَکَ رَبُّکَ وَمَا قَلٰی ۝
وَلَلْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لَّکَ مِنَ الْاُوْلٰی ۝ وَلَسَوْفَ یُعْطِیْکَ رَبُّکَ فَتَرْضٰی ۝
(سورة الضحی: ١تا٥)

य़ानी - कसम है चढ़ते दिन की. क़सम है रात की जब पूरी तरह छा जाए कि आपके रब ने न आपको छोड़ा न ापको मकरूह जाना. यक़ीनन आपकी (हर) आने वाली घड़ी आपके लिये पहली घड़ी से बेहतर है और बिलाशुबह आपका रब आपको अन्क़रीब इतना देगे कि आप राज़ी हो जाएंगे.

तशरीह : इन आयतों में ख़ास तौर से जो चीज़ क़ाबिले ग़ौर है वह यह है कि मेहबूब हैं और दुशमन के तअन का जवाब रब्बे ज़ुल जलाल दे रहा है. यगान्गात व पासदारी का यह हक़ीक़त अफ़रोज़ तअल्लुक कया किसी नामाबर के साथ भी देखा गया है ?

वअज़ उलमाए तफ़सीर फ़रमाते हैं कि इस सूरते पाक में चढ़ते दिन से मुराद मेहबूब का आरिजे ताबाँ है और शबे तारीक से इशारा मेहबूब के गैसूए अम्बरीं की तरफ़ है गोया मुद्दआए कलाम यह है कि मेहबूब ज़रा अपने रुख़े रौशन पर ज़ुल्फ़ें बिखेर कर देखिये कि कया ऐसा पैकरे जमील भी कराहत व इन्क़िताअ (छोड़े जाने) के क़ाबिल हो सकता है ?

कौन कहता है कि हम तुम में जुदाई होगी
यह हवाई किसी दुशमन ने उडाई होगी

दूसरी आयते करीमह :

शाने नुजूल : कहते हैं कि दुनियाए कुफ़्र के मशहूर गुस्ताख़ वलीद बिन मुगीरह ने एक दिन हुज़ूर(ﷺ) को मुखातिब करते हुए कहा

يَا اَيُّهَا الَّذِىْ نُزِّلَ عَلَيْکَ الذِّكْرُ اِنَّکَ لَمَجْنُوْنٌ.

यानी ऐ वह शख़्स कि जिसपर क़ुरआन उतारा गया है तू मज्नूँ और दीवाना है.

बस इतना कहना था कि क़हरे इलाही का बादल कडका, बिजली चमकी और ग़ैज़ो जलाल में डूबी हुई ये आयतें वलीद इब्ने मुगीरह की मज़म्मत में नाज़िल हुईं (तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इर्फान, इब्ने जरीर)

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ٭ مَا اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّکَ بِمَجْنُوْنٍ ٭ وَاِنَّ لَکَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ٭ وَاِنَّکَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ٭ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ٭ (القلم ۱ تا ۶)

यानी क़सम है क़लम की और उसके नविश्तों की कि आप अपने रब के फ़ज़्ल से मज्नूँ नहीं हैं और यक़ीनन आपके लिये बेपायाँ अज्रो सवाब है और बिला शुबह आपकी ख़ू बड़ी शान की, पस अन्क़रीब आप भी मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे और वो भी देख लेंगे कि दीवाना कौन है.

अब गुस्ताख़ की मज़म्मत में ज़रा कुरआन के यह अल्फ़ाज़ गिनिये

और अन्दाज़ा लगाइये कि मेहबूब के दुशमन के साथ क़ुरआन की गुफ़तार का तेवर कितना ग़ज़बनाक हो गया है. वो आयतें ये हैं -

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ • هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيمٍ • مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ • عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيمٍ • أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِينَ • إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ • سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ • (القلم: ١٠ تا ١٦)

यानी (ऐ मेहबूब) आप किसी भी ऐसे शख़्स की बात मत सुनिये जो बड़ा क़स्में खाने वाला ज़लील, बहुत बड़ा तअने-बाज़, बहुत बड़ा मुतफ़न्नी, भलाई से बहुत ज़ियादा रोकने वाला, हद से गुजरा हुआ, गुनाहगार, दुरूश्त ख़ू और सब पर तुर्रा यह कि वलदुल हराम है और मज़ीद बर आँ यह कि माल व औलाद वाला है. जब हमारी आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं तो कहता है कि ये अगलों के क़िस्से हैं. अन्क़रीब हम उसकी सुअर जैसी थूथनी पर दाग़ देंगे.

एक इन्तिहाई इबरतनाक वाक़िआ -

मन्क़ूल है कि वलीद बिन मुगीरह के हक़ में जब ये आयतें नाज़िल हुई तो आलमे ग़ैज़ में वह तिलमिला उठा और अपनी माँ से जाकर दरियाफ़त किया : अभी अभी मुहम्मद ﷺ ने मेरे मुतअल्लिक़ दस बातें बयान फ़रमाई हैं. अपनी नौ बुराइयों के बारे में तो मैं ख़ूब जानता हूँ कि वो मेरे अन्दर मौजूद हैं, लेकिन दसवीं बात यह कि मेरी अस्ल में भी फ़र्क़ है, इसके बारे में कुछ भी नहीं जानता. वैसे हज़ार दुशमनी के बावुजूद मुझे इसका यक़ीन व एतिराफ़ है कि मुहम्मद ﷺ की बात ग़लत नहीं हो सकती. इस लिये तू सच सच बता दे कि हक़ीक़ते हाल कया है, वरना मैं तेरा सर क़लम कर दूंगा.

तेवर देखकर माँ ने साफ़ साफ़ बता दिया कि तेरा बाप नामर्द था इस लिये एक चर्वाहे के साथ मेरा नाजायज़ तअल्लुक हो गया और उसी के नतीजे में तेरी पैदाइश अमल में आई.

तशरीह - ग़ैज़ की हालत में जब इन्सान अपने किसी दुशमन के उयूब का पर्दा चाक करता है तो कहा जाता है कि यह नफ़सियाती हैजान का रद्देअमल है,लेकिन यहाँ कया कहियेगा. यह कलाम तो उस पाक व मुकद्दस ख़ुदावन्द का है जिसकी ज़ात शवाइबे नफ़सानी से बिल्कुल पाक व मुनज़्ज़ह

है.

इसलिये लामुहाला मानना पड़ेगा कि वह सत्तारुल उयूब जो अपने बड़े से बड़े सियहकार बन्दे की पर्दापोशी फ़रमाता है उसने अपने पैग़म्बर के एक गुस्ताख़ को सारे जहान में रूस्वा करके यह ज़ाहिर फ़रमा दिया है कि जिस मअसूम व मोहतरम नबी के गुस्ताख़ के लिये उसके यहाँ किसी अफ़व व दरगुजर की गुन्जायश नहीं है उसकी हैसियत नामा बर की नहीं है, मेहबूबे ज़ी वक़ार की है. यहाँ भी वही अदाए रहमत जलवागर है कि गुस्ताख़ ने निशाना बनाया है ज़ाते रसूल को, जवाब दे रहा है उनका रब्बे करीम. मेहबूब ख़ामोश है, क़ुरआन उसकी विकालत फ़रमा रहा है. कया इसके बाद भी कोई बदनसीब कह सकता है कि रसूले अरबी ﷺ की हैसियत एक ख़बर रसाँ की है? बल्कि एक ऐसे मेहबूब की है जो ख़ुदा की महब्बत के गहवारे में पला, उसी की रहमतों ने उसे सारी कायनात की अफ़सरी बख़्शी और उसे ख़ालिक़ो मख़लूक और आबिदो मअबूद के दरमियान राबिते का एक ज़रिया बनाया. इस लिये उसकी हैसियत सिर्फ़ एक नामाबर की नहीं है बल्कि नामा के असरार व रुमूज से बाख़बर कराने वाले की है.

तीसरी आयते करीमह :

शाने नुजूल - बयान करते हैं कि हुज़ूरे अनवर (ﷺ) की औलादे ज़ुकूर में से आख़िरी फ़र्ज़न्दे दिलबन्द हज़रते क़ासिम रदियल्लाहो अन्हो का जब विसाल हुआ तो कुफ़्फ़ारे मकका ने तअना दिया कि आप अब्तर हो गए यानी आपकी नस्ल मुन्क़तअ हो गई, नसबी यादगार का सिलसिला ख़त्म हो गया.

लख़्ते जिगर की वफ़ात का सदमा ही कया कम था कि दुशमनों के इस तअने से और भी ग़म की चोट उभर आई, क़ल्बे नाज़ुक को ग़ैर मअमूली अज़िय्यत पहुंची और आप उदास और मलूल रहने लगे. चन्द लम्हे का इज़्तिराब भी दरियाए रहमत में तलातुम से कम नहीं था. ख़ुदाए किर्दगार ने अपने मेहबूब की तस्कीन व तशफ़्फ़ी के लिये फ़ौरन यह सूरत नाज़िल फ़रमाई -

اِنَّا اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ • فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ • اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ • (الكوثر)

यानी (ऐ मेहबूब) बेशक हमने आपको कौसर अता फ़रमाया. पस अपने रब के लिये नमाज़ पढिये और क़ुर्बानी कीजिये. यक़ीनन आपका

दुशमन ही अब्तर है.

तशरीह - ग़ौर फ़रमाइये. दुनिया में किसे अपनी औलाद की जुदाई का सदमा नहीं उठाना पड़ता. दुशमन के तन्ज़ से किसका सीना घायल नहीं होता लेकिन क्या दुनिया में इसकी भी मिसाल मौजूद है कि दुशमन के तन्ज़ का जवाब देने के लिये खुदाए कायनात ने खुद किसी की विकालत फ़रमाई हो और भीगी हुई पलकों के आँसू खुश्क करने के लिये हज़रते रूहुल अमीन क़ुरआन लेकर उतरे हों.

मशिय्यते इलाही का यह मुन्फ़रिद और निराला अन्दाज़ वाज़ेह तौर पर इस अम्र की निशानदिही करता है कि जिसके साथ यह मआमला किया जा रहा है वह खुद भी अपनी शान में निराला और मुन्फ़रिद है.

एक नुकता - इस सूरते पाक में कौसर के लफ़्ज से दो मअनी मुराद लिये गए हैं - हौज़े कौसर . जन्नत में सर्द, शीरीन और सफ़ेद शफ़्फ़ाफ़ नहर है. कहते हैं कि यह नहर जन्नत के तमाम क़सूरो महल्लात से गुजरती हुई लामेहदूद वुस्अतों में फैल जाती है. इस तफ़सीर पर आयत का मफ़ाद यह होगा कि ऐ मेहबूब, आप फ़र्जन्द की वफ़ात पर क्यों उदास और ग़मज़दा हैं. हमने तो आपको वह घर ही अता फ़रमा दिया है जहाँ अब उन का ठिकाना है. वह भी आप ही की मिल्कियत है. जब दोनों घर आप ही के हैं तो सिर्फ़ घर की तबदीली पर सदमा कैसा. कल तक वह इस घर में थे आज उस घर में हैं. वह आपके घर से जुदा ही कहाँ हुए कि फ़िराक़ का सदमा उठाइये.

दूसरा नुकता - कौसर के दूसरे मअनी हैं ख़ैरे कसीर. यानी हमने आपको ख़ैरे कसीर अता फ़रमाया. (तफ़सीरे रूहे मआनी में है) ख़ैरे कसीर के वसीअ मफ़हूम में क़यामत तक पैदा होने वाले उम्मते मुहम्मदी के वो तमाम अफ़राद दाख़िल हैं जो हुज़ूर(ﷺ) की लाई हुई शरीअत पर कारबन्द रहकर ख़ैरो हसनात का ज़ख़ीरा जमा करेंगे.

इस तफ़सीर पर आयत का मफ़ाद यह है कि दुशमनों के तन्ज़ का हरगिज़ आप कोई असर न लें जबतक गर्दिशे लैलो नहार का यह सिलसिला बाक़ी है, रूए ज़मीन आपकी रूहानी औलाद से हमेशा मअमूर रहेगी, शशजिहात में आप ही के नाम का डंका बजेगा. सुल्बी औलाद अगर अपने आबाओ अजदाद की तारीफ़ करे तो कहा जा सकता है कि यह ख़ून का असर

है लेकिन ऐसे करोड़ों अफ़राद की सनाख़्वानी जिनसे कोई नसबी तअल्लुक नहीं, उनके ऐतिराफ़े कमाल को हक़ीक़त पर मबनी क़रार दिया जाएगा. राह चलता हुआ कोई अजनबी बिला वजह किसी का कलिमा नहीं पढ़ सकता जब तक कि हक़ीक़ी अज़मतों का माथे की आँख से नज़ारा न करे. आपकी जलालते शान का परचम वलन्द करने के लिये आपकी मअनवी औलाद कया कम है कि नसबी औलाद की फुरकत का सदमा उठाइये. ग़ौर फ़रमाइये, एक ही आयत में दोनों तरह के ग़मों का मुदावा कर दिया गया है. फ़र्ज़न्दे अर्जुमन्द की जुदाई भी अब जुदाई नहीं रही और इस सदमे का इजाला भी हो गया कि बेटे की वफ़ात के बाद भी चिराग़ जलता रहेगा. और नाम को ज़िन्दा रखने वाले पैदा होते रहेंगे.

ग़ौर फ़रमाइये, मेहबूब की ख़ातिरे नाज़ की तशफ़्फी के लिये इतना बहुत काफ़ी था लेकिन महब्बत का तक़ाज़ा इतने पर ही तमाम नहीं हो जाता. अभी गुस्ताख़ को केफरे किरदार तक पहुंचाना बाक़ी है. चुनान्चे फ़रमाया जाता है कि जिस गुस्ताख़ ने आपके बेनामो निशान हो जाने का तअना दिया है सुन लीजिये कि उसी का नामो निशान मिट जाएगा, उसी की नस्ल मुन्क़तअ हो जाएगी.

यहीं से महब्बत का दस्तूर समझ में आया कि मेहबूब की अज़मते शान का ऐतिराफ़ और हज़ार अदाओं के साथ उसके जलवों की मदहसराई जहाँ एक शेवए महब्बत है वहाँ दुशमन की खुली हुई मज़म्मत और वाज़ेह तौर पर उसकी बदगोई व तर्दीद भी महब्बत ही का तक़ाज़ा है.

यहाँ से उन लोगों के दिल की चोरी पूरी तरह बेनिक़ाब हो जाती है जो एक तरफ तो महब्बते रसूल के मुद्दई हैं और दूसरी तरफ रसूले पाक के गुस्ताख़ों की मज़म्मत का सवाल उठता है तो ज़ाती मफ़ाद की मस्लिहत उरीज़ए महब्बत की राह में हाइल हो जाती है. हालांकि फ़ितरी अम्र है कि जब किसी की महब्बत किसी के दिल में ख़ूब रासिख़ हो जाती है तो मेहबूब की खुशनूदी का हुसूल उसकी रूह का मिज़ाज बन जाता है. और महब्बत ही का तक़ाज़ा है कि हर उस चीज़ से महब्बत की जाए जिसका मेहबूब से कोई तअल्लुक है और हर उस चीज़ से नफ़रत की जाए जो मेहबूब को नागवारे ख़ातिर हो. खुलासा यह कि मेहबूब के दोस्तों से दोस्ती की जाए और मेहबूब के दुशमनों से नफ़रत. अगर कोई ऐसा नहीं करता तो वह अपने

दअवए महब्बत में झूटा है.

चौथी आयते करीमह :

शाने नुज़ूल : बयान करते हैं कि सरकारे दो आलम ﷺ किसी ग़ज़वे में तशरीफ़ ले गए. अस्नाए सफ़र में किसी सहाबी का ऊंट गुम हो गया. उन्होंने अपने अक़ीदे के मुताबिक़ सरकार की ख़िदमत में हाज़िर होकर फ़रियाद की और ग़ैब की ख़बर रखने वाले रसूल से अपने गुमशुदा ऊंट का पता दरियाफत किया. सरकारे दोआलम ﷺ ने अपने इल्म की रौशनी में फ़रमाया - तुम्हारा ऊंट फ़लाँ वादी में फ़लाँ मक़ाम पर खड़ा है. वह सहाबी उलटे पाँव सरकार ﷺ के बताए हुए मक़ाम पर रवाना हो गए.

अब उधर का वाक़िआ सुनिये. लश्कर में कुछ मुनाफ़िक़ीन भी थे. जब उन्हें यह इत्तिला मिली कि हुज़ूर(ﷺ) ने किसी गुमशुदा ऊंट के बारे में यह ख़बर दी है कि वह फ़लाँ वादी में फ़लाँ मक़ाम पर खड़ा है तो अज़राहे तन्ज़ उन्होंने आपस में कहना शुरू किया -

وَمَا يُدْرِيْ مُحَمَّدٌ بِالْغَيْبِ .

यानी मुहम्मद ﷺ ग़ैब की बात कया जानें. (यानी मआज़ल्लाह उन्होंने यह बिल्कुल फ़र्ज़ी ख़बर दी है कि ऊंट फ़लाँ मक़ाम पर है) छुपी हुई बातों का हाल उन्हें कया मालूम. ये मुनाफ़िक़ीन जब मदीना पलट कर वापिस आए तो बअज़ सहाबा ने हुज़ूरे अनवर(ﷺ) तक यह ख़बर पहुंचाई कि फ़लाँ फ़लाँ लोग हुज़ूर(ﷺ) के इल्मे ग़ैब के बारे में इस तरह का तन्ज़ कर रहे थे.

सरकार ﷺ ने जब उन्हें बुलाकर ददिरयाफ़त किया तो एकदम बदल गए. कहने लगे कि हमारी क़ौम के चन्द नौख़ेज़ लड़कों ने यूंही अज़राहे मज़ाक़ आपस में इस तरह की बातें की थीं. दर हक़ीक़त हम लोग हुज़ूर की ग़ैब दानी के मुन्किर नहीं हैं हमारा भी वही अक़ीदा है जो आम सहाबा का है. अपनी सफ़ाई में वो बयान दे ही रहे थे कि हज़रत रूहुल अमीन क़ुरआन की ये आयतें लेकर उतरे -

قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ط (التوبة: ٦٥.٦٦)

यानी (ऐ मेहबूब) आप कह दीजिये कि कया मज़ाक़ करने के लिये

अल्लाह उसकी आयतें और उसका रसूल ही रह गया है. बातें न बनाओ. ईमान क़ुबूल करने के बाद तुम काफ़िरो मुर्तद हो गए.

तशरीह - अल्लाहो अकबर, अपने मेहबूब की हिमायत में ज़रा इन आयतों का तोवर तो देखिये. तम्बीहात की यह लगातार सरजनिश लरज़ा देने के लिये काफ़ी है.

पहली तम्बीह - तो यह फ़रमाई गई कि रसूल की शान में किसी तरह का इहानत आमेज़ जुमला फ़क्त रसूल का ही इन्कार नहीं, ख़ुदा का भी इन्कार है. आज जो लोग तौहीदे ख़ुदावन्दी का नामनिहाद सहारा लेकर उसके रसूल की तन्क़ीस करते हैं वो इस गुमान में न रहें कि यह तन्क़ीस सिर्फ़ रसूल की ही है. बिला तफ़रीक़ यह तन्क़ीस शाने ख़ुदावन्दी की भी है.

दूसरी तम्बीह - यह फ़रमाई गई है कि रसूल के बारे में इल्मे ग़ैब का अक़ीदा कोई फ़र्जी चीज़ नहीं है कि इसका मज़ाक़ उडाया जाए.

तीसरी तम्बीह - यह फरमाई गई कि रसूल की तन्क़ीस व तौहीन बस यही नहीं है कि मआज़ल्लाह उनकी शान में मुग़ल्लज़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए जाएं बल्कि उनकी किसी लाज़मए नबुव्वत फ़ज़ीलतो कमाल का इन्कार भी उनकी तन्क़ीसे शान के लिये काफ़ी है.

चौथी तम्बीह - यह फ़रमाई गई कि दुनिया में बड़े बड़े गुनाह की मअज़िरत क़ुबूल की जा सकती है लेकिन शाने रसूल में गुस्ताख़ी का जुमला इस्तेमाल करने वालों की कोई तावील नहीं सुनी जाएगी.

पांचवीं तम्बीह - यह फ़रमाई गई कि कलिमा-गो और इस्लाम की ज़ाहिरी निशानियाँ तौहीने रिसालत के नताइज और अहकाम से किसी को बचा नहीं सकतीं. लाख कोई अपने आपको मुसलमान कहता रहे, तन्क़ीसे शाने रसूल ﷺ के इर्तिकाब के बाद उसके लिये दायरए इस्लाम में अब कोई गुन्जाइश नहीं है. तक्फीर के ज़रिये उसके इखराज का ऐलान कर देना ज़ररूरी है ताकि मुस्लिम मुआशिरह उसके नुमायशी इस्लाम से धोखा न खाए और उसके साथ दीनी इश्तिराक का कोई तअल्लुक बाक़ी न रखा जाए.

पांचवीं आयते करीमह :

शाने नुज़ूल - बयान करते हैं कि सरकारे अनवर ﷺ ने एक मौक़े पर ख़िताब करते हुए इरशाद फ़रमाया

مَنْ اَطَاعَنِی فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰہ •

यानी जिसने मेरी इताअत की उसने ख़ुदा की इताअत की.

इस जुमले पर यहूदी मज़हब के लोग बहुत ज़ियादा चीं व जबीं हुए. उनके दरमियान आपस में में चे मीगोइयाँ शुरू हो गई कि आप ख़ुदाई को मन्सब लेना चाहते हैं, इनकी ख़्वाहिश है कि अब ख़ुदा की तरह इनकी भी परस्तिश की जाए. यहूदियों के इस तअन के जवाब में यह आयत नाज़िल हुई -

مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰہَ ج وَمَنْ تَوَلّٰی فَمَا اَرْسَلْنٰکَ عَلَیْہِمْ حَفِیْظًا • (النساء: ٨٠)

यानी जिसने रसूल की इताअत की यक़ीनन उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने आपकी इताअत से गुरेज़ किया तो सुन लीजिये कि उसपर आपका कोई ज़िम्मा नहीं.

तशरीह - इस आयत में परवर्दिगारे आलम ने बरमला यहूदियों के इस ख़याल की तर्दीद फ़रमाई कि इताअत और इबादत दोनों एक ही चीज़ है. इताअत चाहने वाले पर यह इल्ज़ाम रखना कि वह अपनी परस्तिश कराना चाहता है, खुला हुआ बोहतान और क़ल्बो ज़हन की वाज़ेह तरीन शक़ावत और गुमराही है. यक़ीनन रसूल की शान यही है कि उसकी इताअत की जाए बल्कि वह यह कहने में हक़ बजानिब है कि जिसने उसकी इताअत की उसने ख़ुदा की इताअत की.

ज़रा ग़ौर फ़रमाइये कि यहूदियों के इस नापाक ख़याल की तर्दीद के लिये इतना बहुत काफ़ी था लेकिन बयान का यह दूसरा रुख़ कितना लर्ज़ा-खेज़ है कि जो आपकी इताअत से गुरेज़ करता है या आपकी इताअत को इताअते इलाही नहीं समझता तो आप का उसपर कोई ज़िम्मा नहीं है, हमने आपको उसके ऊपर निगराँ बनाकर भेजा ही नहीं है.

आज भी मुस्लिम मुआशिरे में यहूदियों के इस ज़हन का एक गिरोह मौजूद है जो अपने नुमाइशी इस्लाम के चिलमन में बैठकर हक़ परस्त मुसलमानों को इसी तकरह के तअने देता है, अपनी बद-अक़ीदगी और कज-फहमी से मन्सबे रिसालत की हर तौक़ीर को वह ख़ुदा ही को हक़ समझता है. रसूलुल्लाह ﷺ की जाइज तअज़ीम भी उसे परस्तिश नज़र

आती है. बिल्कुल यहूदियों की तरह बात बात में यही तअने देता है कि हम मआज़ल्लाह रसूल को खुदा के मन्सब पर देखना चाहते हैं. ऐसे लोगों को कुरआन की इस आयत से इबरत हासिल करनी चाहिये.

छटी आयते करीमह :

शाने नुजूल - आग़ाज़े इस्लाम में जब कि क़दम क़दम पर दुशमनों की यलग़ार से ज़िन्दगी घायल हो रही थी तौहीदे इलाही का इकरार क़यामत को बुला लाने के मुतरादिफ़ था. क़बाइले कुफर के सारे फरमाँ-रवाओं ने रसूल की आवाज़ की समाअत से दुनिया को रोक दिया था. उन्हीं अय्याम में एक दिन अरबी सरकार ﷺ कोहे सफ़ा की चोटी पर चढ़ गए और उन्हें अचानक टूट पड़ने वाले ख़तरे से ख़बरदार करने वाली ज़बान में आवाज़ दी. इस आवाज़ पर सारे एहले मकका बेतहाशा दौड़ पड़े. औपके गिर्द जमा होने वालों में अबू लहब भी था. जब सब जमा हो गए तो हुज़ूर(ﷺ) ने मजमे से सवाल किया : अगर मैं तुम से कहूँ कि इस पहाड़ की घाटी में दुशमन का एक लश्कर छुपा हुआ है और तुमपर हमला करना चाहता है तो कया तुम मेरी इस ख़बर का यक़ीन करोगे. सब ने यक ज़बान होकर कहा : कयों नहीं, इस ज़बान पर कयों नहीं हम एतिमाद करेंगे जो कभी झूट से आलूदा नहीं हुई, जिसकी तहारत पर यक़ीन करने के लिये इतना ही काफ़ी है कि वह मुहंम्मद ﷺ की ज़बान है. इसके बाद इरशाद फ़रमाया :मैं तुम्हें इससे भी ज़ियादा संगीन और तबाहकुन अज़ाब की खबर दे रहा हूँ जो तुम्हारे सरों पर मंडला रहा है. अगर तुम अपनी सलामती चाहते हो तो कुफरो शिर्क की ज़िन्दगी से ताइब होकर परचमे इस्लाम के दारूल अमान में आजाओ.

हुज़ूर(ﷺ) की यह तक़रीर सुनकर अबूलहब के तन-बदन में आग लग गई, आँखों से चिंगारी उडने लगी, गुस्से से चेहरा तमतमा उठा, फ़र्ते ग़ैज़ में जलते हुए कहा :

تَبًّا لَکَ سَائِرَ الْيَوْمِ اَلِهٰذَا جَمَعْتَنَا .

यानी तुम्हारा नास लग जाए, तुमने यही सुनाने के लिये हमें यहाँ जमा किया था.

अबू लहब की बात अभी ख़त्म भी न होने पाई थी कि क़हरे इलाही की एक बिजली चमकी, क़हरे खुदावन्दी की धमक से पहाड़ का कलेजा दहल

गया, फ़र्ते हैबत से हरम की सरज़मीन काँप उठी. इतने में हज़रत रूहुल अमीन के परों की आवाज़ आई. सरकार ﷺ ने निगाह उठाकर देखा तो वह पर समेटे क़हरो जलाल में डूबी हुई ये आयतें हुज़ूर(ﷺ) को सुना रहे थे -

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ • مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ • سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ • وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ • (اللهب: ١ تا ٤)

यानी टूट जाएं दोनों हाथ अबू लहब के और उसका नास लग जाए (तो अज़ाब से छुटकारा पाने के लिये) न उसका माल काम आएगा न उसकी कमाई हुई दौलत. वह और उसकी बीवी जो लकड़ियों का गटठर उठाए फिरती है, दोनों जहन्नम की भड़कती हुई आग में झौंक दिये जाएंगे.

तशरीह - मेहबूब को अज़िय्यत पहुंचाने वाले एक एक फ़िकरे पर ज़रा क़हरे इलाही के चढ़ते हुए दरिया का तलातुम तो देखिये, एक लम्हे में अबू लहब की दुनिया और आख़िरत का फ़ैसला सुना दिया गया.

अबू लहब अपने वक़्त का नया मुज्रिम नहीं है. ग़ज़बनाक तेवर में डूबी हुई आयात कल तक क्यों नहीं उतारी गई थीं. कल भी तो ग़ैरते इलाही को हरकत में लाने वाले अस्बाब उसके ज़रिये सादिर हुए थे. ख़ुदाए वाहिद की परस्तिश से बग़ावत करके हाथ से तराशे हुए अस्नाम को ख़िराजे बन्दगी का मुस्तहिक़ क़रार देना क्या यह कम दर्जे का जुर्म था ?

लेकिन क़ुरबान जाइये इस अदाए महब्बत के कि अपने मुज्रिम का सवाल आया तो मुहलत दे दी लेकिन मेहबूब के मुज्रिम की तअज़ीर के लिये एक लम्हे का इन्तिज़ार भी रवा नहीं रखा गया. फिर कहने वाले ने जो कुछ भी अपने भतीजे को कहा था, दुनिया में कितने ही चचा हैं जो इस से भी ज़ियादा सख़्त जुमले अपने भतीजों के हक़ में इस्तेमाल करते हैं लेकिन भतीजे की तरफ से जवाब देने के लिये कौन खड़ा होता है. सब तो यही कहकर दरगुजर करते हैं कि यह चचा का हक़ है.

लोकिन यह हक़ अपने मेहबूब के बारे में क़ुरआन हरगिज़ तस्लीम नहीं करता. वह निहायत सख़्ती के साथ तम्बीह करता है कि मन्सबे रिसालत का एहतिराम ख़ून के रिश्तों के एहतिराम से कहीं ज़ियादा बाला तर है इस लिये किसी को भी इजाज़त नहीं है कि रिश्तों की ज़बान में कोई मेरे

मेहबूब से गुफतगू करे. वह पहले मेरा मेहबूब है, मेरा मुक़तदिर पैग़म्बर है, कायनात में मेरा नाइबुल सल्तनत है, मेरे जलालो जमाल का आइना है और मेरे ही फ़ज़्लो करम से वह मेरी क़ुदरतो अज़मत का एक बाइख़्तियार नुमाइन्दा है. इसके बाद वह किसी का बाप है, किसी का बेटा है, किसी का शौहर है और किसी का भतीजा है. मेरे अता किये हुए मन्सब का एहतिराम सब के लिये ज़रूरी है इस मन्सब की बेहुरमती एक लम्हे के लिये भी गवारा नहीं की जाएगी.

सातवीं आयते करीमह :

शाने नुज़ूल - मशहूर दुशमने इस्लाम आस इब्ने वाइल के मुतअल्लिक़ मन्क़ूल है कि एक दिन वह मुद्दतों की गली सड़ी और निहायत बोसीदा हड्डी हाथ में लिये हुए सरकार की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उसने हड्डी की तरफ़ उगंलियों से इशारा करते हुए कहा : कयों मुहम्मद (ﷺ) तुम्हारा ख़याल है कि यह हड्डी फिर क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा की जाएगी. दुनिया का कोई दानिशमन्द आदमी भला कया ऐसी मज़हका ख़ेज़ बात कह सकता है जैसी तुम कहते हो. भला इस सड़ी गली और बेजान हड्डी में किस तरह ज़िन्दगी की वापसी का तसव्वुर किया जा सकता है. तुम्हारा इसरार है कि एक खुली हुई नासमझी की बात पर लोग जमा हो जाएं. भला अक़लो होश की सलामती के साथ यह बात मुमकिन हो सकती है.

अभी वह अपनी बात कहकर बैठ भी न पाया था कि हज़रत रूहुल अमीन यह आयत लेकर नाज़िल हुए -

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهُ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ۰ قُلْ
يُحْيِيْهَا الَّذِىْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ ۰ (يٰس: ٧٨ تا ٧٩)

यानी (अक़ीदए हश्र का मज़ाक़ उडाने के लिये) उसने एक मसल तराशी अपनी पैदाइश (का क़िस्सा) भूल गया. उसने (तन्ज़ करते हुए) कहा कि बोसीदा हो जाने वाली हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा. आप कह दीजिये कि वह (क़ादिरो तवाना खुदावन्द) ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार इसे ज़िन्दगी बख़्शी थी और वह अपनी तमाम ख़ल्क़त को ख़ूब जानता है.

तशरीह - ज़रा शाने मेहबूबियत का यह जलवा भी मुलाहिज़ा फ़रमाइये कि सवाल करने वाले ने सवाल किया रसूल से, लेकिन जवाब दे

रहा है खुदाए किर्दगार. मुअज़्ज़िज़ रसूल के सामने सवाल का यह अन्दाज़ क़तअन ग़ैर मुहज़्ज़ब और नाशायस्ता है. कुरआन ने भी जवाब देते वक़्त सवाल के इस रूख़ को सामने रखा है.

अपनी पैदाइश का क़िस्सा भूल गया - नख़वत व बरतरी का ग़ुरूर तोड़ने के लिये यह जुमला नश्तर से भी ज़ियादा तेज़ है. आज जिस ज़िन्दगी की तवानाइयों से तू शराबोर है कल जिस वक़्त तू एक क़तरए बेजान था तो किसने तुझे ज़िन्दगी का यह फ़रोग़ अता किया.

आदमी की ख़ू यह है कि अपनी इज्ज़ो दरमांदगी के अय्याम की याद को वह अपने लिये बाइसे आर समझता है. कुरआन ने एक जुमले में ग़ुरूर का सारा नशा उतार दिया कि उसकी असलियत याद दिला दी और इसके बाद इस बात को कि मरने के बाद जब हड्डियाँ गल सड़ जाएंगी तो कौन उन्हें ज़िन्दा करेगा, इतनी आसानी से दिमाग़ में उतार दिया कि अक़्ले ग़लत-अन्देश मुंह तकती रह गई. इस दलील के सामने सबकी ज़बान बन्द है कि जिसने पहली बार ज़िन्दा किया था, वही दोबारा ज़िन्दा करेगा. मुश्किल काम तो पहली बार का था क्योंकि बिल्कुल अदम से वुजूद में लाना था. दूसरी बार में बहरहाल एक माद्दह तो है माना कि सड़ा गला है लेकिन मअदूम तो नहीं है.

आठवीं आयते करीमह :

शाने नुज़ूल - कहते हैं कि हुज़ूरे अनवर ﷺ ने ज़ैद बिन हारिसा नामी एक अज़ीज़ सहाबी को अपना मुंह बोला बेटा बना लिया था. तकरीबन एक लाख सहाबए किराम में यह तन्हा इस क़ाबिले रश्क एज़ाज़ के हामिल हैं कि कुरआने मजीद ने इनका नाम लिया है.

जब यह एहदे शबाब को पहुंचे तो सरकार ﷺ ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (रदियल्लाहो अन्हा) नामी एक मुअज़्ज़ज़ ख़ातून से इनका निकाह कर दिया. आगे चलकर इन दोनों के बाहमी तअल्लुकात नाख़ुशगवार हो गए और तल्ख़ी यहाँ तक बढ़ी कि अलाहिदगी की नौबत आ गई.

हज़रत ज़ैनब की इद्दते तलाक़ पूरी हो जाने के बाद अचानक एक दिन जिब्रीले अमीन यह हुक्मे इलाही लेकर उतरे :

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا۔ (سورۃ الاحزاب:٣٧)

यानी ज़ैद की हाजत बरारी के बाद हमने आपका निकाह ज़ैनब से

कर दिया.

इस आयत के नुज़ूल के बाद वह निहायत फ़ख्र के साथ सरकार ﷺ के हरम सरा में तशरीफ़ लाईं. इस ऐज़ाज़े खुदावन्दी पर वह हमेशा नाज़ाँ रहीं कि सरकार ﷺ के साथ उनके निकाह का मुतवल्ली ख़ुद परवर्दिगार था. इसमें शक नहीं कि सारे जहाँ में यह ऐज़ाज़ उन्हीं का साथ मख़सूस था.

ज्यों ही इस निक़ाह की तशहीर हुई, दुशमनों ने तअना देना शुरू किया कि मुहम्मद ﷺ ने मआज़ल्लाह अपने बेटे की मन्कूहा के साथ निकाह कर लिया है. खुदाए किर्दगार ने अपने मेहबूब की तरफ़ से दुशमनों के तअन का यह जवाब नाज़िल फ़रमाया :

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ط

وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ۰ (احزاب: ۴۰)

यानी मुहम्मद ﷺ तुम में से किसी मर्द के बाप नहीं हैं. वह अल्लाह के रसूल और सिलसिलए अम्बिया के ख़ातम हैं और अल्लाह हर शय का जानने वाला है.

तशरीह - यह आयते करीमह ताज़ियाना है उन लोगों पर जो खुदा के आख़िरी रसूल ﷺ के साथ भाई का रिश्ता जोड़ते हैं. जब उनके बारे में बाप का रिश्ता ख़ुदा को गवारा नहीं है तो भाई का रिश्ता क्योंकर गवारा होगा. इन ग़फ़लत शिआरों को मालूम होना चाहिये कि पैग़म्बर ख़ुद भाई बनने के लिये नहीं आता है बल्कि भाई बनाने आता है.

ईमानी कैफ़ियत से लब्रेज़ होकर ज़रा सोचिये कि अपने रसूल ﷺ के साथ ख़ुदा के तअल्लुक़ात की नौइयत कितनी महब्बत अन्गेज़ है. क़ुरआन ने रसूल की मन्सबी और ज़ाती हैसियत में कोई फ़र्क़ नहीं किया है. ग़ौर कीजिये तो दुशमनों का यह ऐतिराज़ मन्सबे रिसालत पर नहीं था. ज़ाते रसूल पर था. लेकिन क़ुरआन ने अपने रसूल की विकालत में इस इल्ज़ाम का भी इज़ाला फ़रमा दिया. यहीं से यह बात वाज़ेह हो गई कि जो लोग रसूल की हैसियत मुतअय्यिन करते हैं पैग़म्बराना और ग़ैर पैग़म्बराना, वो क़ुरआन के मिज़ाज से वाक़िफ़ नहीं हैं.

क़ुरआन ने दुशमनों के तअन के जवाब में यह कहकर कि मुहम्मद

ﷺ किसी मर्द के बाप नहीं हैं, उनके फ़िक्री इफ़लास, उनकी ग़लत बयानी और दरोग़-गोई का सारा पर्दा चाक कर दिया है.

जब वह किसी मर्द के बाप नहीं तो हज़रत ज़ैद (रदियल्लाहो अन्हो) को उनका बेटा क़रार देना बिल्कुल सफ़ेद झूट है. मुंह बोले बेटे को हक़ीक़ी बेटे पर क़यास करना भी कितनी बड़ी जिहालत है. वह मुहताजे बयान नहीं. मुंह बोला बेटा अहकाम व तअल्लुक़ात की सतह पर बिल्कुल उसी तरह अजनबी है जिस तरह कोई भी बेगाना आदमी हो सकता है. इस लिये उसकी मन्कूहा को सुल्बी औलाद की मन्कूहा की तरह हराम क़रार देना अक़्ल और दयानत का ख़ून करने के मुतरादिफ़ है. दुनिया में लाखों अफ़राद हैं जिन्होंने अपनी मुंह बोली बहनों से शादी की होगी. लेकिन कौन इन लोगों पर ज़बाने तअन दराज़ करता है कि उन्होंने अपनी बहनों को बीवी बना लिया. इस तरह का ऐतिराज़ वही कर सकता है जिसके दिमाग़ में अक़्ल नाम की कोई चीज़ ही नहीं हो.

नवीं आयते करीमह :

शाने नुज़ूल - बयान करते हैं कि सरवरे दोआलम ﷺ जब मजमए आम में तक़रीर फ़रमाते थे तो कुछ ऐसे मवाक़े भी पेश आ जाते थे कि सहाबए किराम को दोबारा पूछने की ज़रूरत मेहसूस होती थी, इस मुद्आ के लिये वो राइना का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते थे जिसके मानी हैं हुज़ूर हमारी रिआयत फ़रमाइये यानी हमें खोल कर अच्छी तरह समझा दीजिये. लेकिन यहूदियों की ज़बान में इस लफ़्ज़ के मानी इन्तिहाई तौहीन आमेज़ थे. उन्हों ने भी मजमए आम में इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल शुरू कर दिया. फ़र्क़ यह था कि मुसलमान इस लफ्ज़ को बेहतर मानी में इस्तेमाल करते थे लेकिन यहूदी मज़हब के लोग इस लफ़्ज से निहायत ख़राब मानी मुराद लेते थे. यहूदियों को हुज़ूरे पाक ﷺ के साथ जो दुशमनी थी और जिस तरह वो हमेशा दरपए आज़ार रहा करते थे, इस लफ़्ज के ज़रिये उन्हें अपने दिल की भड़ास निकालने का अच्छा मौक़ा मिल गया था. बड़ी मुश्किल यह थी कि यही लफ़्ज़ मुसलमान भी इस्तेमाल करते थे फ़र्क़ जो था वह सिर्फ़ दिल की नियतों का था और ज़ाहिर है कि दिल की नियतों पर कोई क़दग़न नहीं लगाया जा सकता. लेकिन क़ुर्बान जाइये इस अदाए रहमत के जो क़दम क़दम पर अपने मेहबूब की इज्ज़त की मुहाफ़िज़ थी. गुस्ताख़ दिलों के लिये

इतनी गुन्जाइश भी वह गवारा न कर सकी, फ़ौरन ही आसमान से यह आयत नाज़िल हुई -

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٥ (سورة بقره:١٠٤)

यानी ऐ ईमान वालो, अब राइना कहना छोड़ दो और इसकी जगह उन्ज़ुरना (हमारा तरफ़ निगाहे करम मब्जूल कीजिये) कहा करो और (रसूल की बातें) ग़ौर से सुनो और (इन) काफ़िरों के लिये जो दिल में इहानते रसूल का जज़्बा छुपाए रहते हैं निहायत दर्दनाक अज़ाब है.

तशरीह - वह शाख़ ही न रहे जिसपर आशियाना हो. एहले ईमान इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल ही छोड़ दें जिसमें तौहीन के मानी पैदा करने के लिये किसी तरह की भी बईद अज़ बईद गुन्जाइश निकलती हो. इससे बहस नहीं कि वह लफ़्ज़ अपने माहौल में उस मानी का मुतहम्मिल है कि नहीं तौहीन के पहलू का इतना एहतिमाल भी इस लफ़्ज़ पर पाबन्दी आइद करने के लिये बहुत काफ़ी है.

मेहबूब की शान में तौहीन आमेज़ अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल तो बड़ी बात है, यहाँ तो दिल का तौहीन आमेज़ इरादा भी एक लम्हे के लिये गवारा नहीं है. अगरचे राइना का लफ़्ज़ अपने लुग़वी मानी के ऐतिबार से अरबी ज़बान का एक निहायत शायस्ता लफ़्ज़ है लेकिन चूंकि दुशमन इस लफ़्ज़ को अपनी शक़ावते क़लबी की तस्कीन का ज़रिया बना लेते हैं इस लिये इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल ही तर्क कर दिया जाए ताकि दुशमन को लफ़्ज़ में मअनवी तसर्रूफ़ का भा आइन्दा मौक़ा न मिल सके. अब रह गया सवाल गुस्ताखों की सज़ा का तो सुन लें कि आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब उनका मुक़द्दर हो चुका है कयोंकि यह दुनिया दारूल-जज़ा नहीं है इस लिये यहाँ न किसी गुस्ताख़ की ज़बान पकडी जा सकती है, न उसका क़लम थामा जा सकता है. यहाँ ख़ैरो शर की दोनों राहे खुली हैं इन राहों पर वह जितनी दूर तक जाना चाहे जा सकता है. इनआमो सज़ा का मरहला तो आने वाली ज़िन्दगी में पेश आएगा लेकिन इस दुनिया में उन लोगों का इबरत नाक अन्जाम ही पीछे पलट कर ये लोग देख लेते जिन्होंने मेहबूबाने हक़ के साथ ठठ्ठा किया था तो कम अज़ कम यह समझ में आ जाता कि अम्बिया के

गुस्ताख़ों पर ख़ुदा की रहमत का दर्वाज़ा हमेशा के लिये बन्द है.

एक इबरतनाक दास्तान : बात आ गई है तो इस आयत के ज़िम्न में एक निहायत ही इबरतनाक दास्तान का तज़किरह छेड़ना चाहता हूँ.

तक़रीबन निस्फ़ सदी से ज़ाइद का अर्सा हुआ कि हिन्दुस्तान में तक़वियतुल ईमान, तहज़ीरुन्नास, हिफ़्ज़ुल ईमान और फ़तावाए रशीदियह वग़ैरह चन्द ऐसी किताबें लिखी गईं जिनकी इबारात इहानते रसूल के ज़हर से शराबोर थीं. जब वो किताबें छपकर मन्ज़रे आम पर आईं तो मुसन्निफ़ीन और नाशिरीन से दरख्वास्त की गई कि जिस रसूल का तुम कलिमा पढ़ते हो उनकी मअसूम रूह को अज़िय्यत न पहुंचाओ. बारगाहे रिसालत में तौहीन करके तुमने अपना रिश्ता हलक़ए इस्लाम से तोड़ लिया है. फिर दोबारा इस्लाम की तरफ़ आना चाहते हो तो अपनी तौबए शरइय्यह का ऐलान करो और उन नापाक इबारतों को अपनी किताबों से निकाल दो.

बजाय इसके कि वो दाइमी हलाकत की मन्ज़िल से लौटते, उनकी नख़वते फ़िक्र ने उनका दामन थाम लिया. नफ़स के शैतान ने उन्हें यह पट्टी पढ़ाई कि तुम अपनी तक़सीर का ऐतिराफ़ ही न करो. तावीलों का दर्वाज़ा खुला हुआ है, तुम्हारी इबारात से जहाँ कुफ्र की शराब टपकती है वहाँ इस्लाम का भी कोई न कोई पहलू तलाश कर ही लिया जाएगा. बात बढ़ते बढ़ते इस मन्ज़िल तक आ गई जहाँ दो चूक फ़ैसले के लिये किसी सालिस की ज़रूरत पेश आती है. चुनान्चे इस मुकदमें की पूरी फ़ाइल हरमैने तैय्यिबैन के उलमा, मशायख़, असातिज़ह, मुहद्दिसीन, मुफ़्तियाने मज़ाहिबे अरबअ और मुस्तनद कुज़ात के सामने रख दी गई. बिलआख़िर मुद्दतों के ग़ौरो फ़िक्र और बहसो नज़र के बाद हिजाज़े मुक़द्दस और आलमे इस्लाम के तमाम मुफ़तियाने शरीअत और मशायख़े हिदायत ने यह फ़ैसला सादिर फ़रमाया कि इन किताबों में खुली हुई इहानते रसूल है. तौबह के अलावा कोई तावील इन किताबों के मुसन्निफ़ीन को आख़िरत के दाइमी अज़ाब से नहीं बचा सकती.

अब भी मौक़ा था कि इन किताबों के मुसन्निफ़ीन, नाशिरीन और मोअतक़िदीन अपनी उन शक़ावतों पर मुतनब्बह होते और उलटे पाँव इस्लाम की सलामती की तरफ़ लौट आते लेकिन बुरा हो नफ़स के शैतान का कि वो बेजा तावीलों पर उतर आए जिसका नतीजा यह हुआ कि आतिशे

सहरा की तरह यह चिन्गारी फैलती गई और अब आतिशकदए नमरूद की तरह सारा हिन्दो पाक इसके शोलों में जल रहा है.

मुद्दत हुई इन किताबों के मुसन्निफ़ीन अपना अपना अन्जाम देखने के लिये अपने अपने ठिकानों पर पहुंच गए लेकिन उनके कलम के नश्तर से मुसलमानों का सीना आज तक घायल है और नहीं कहा जा सकता कि यह ज़ख़्म कब तक मुन्दमिल होगा.

आज भी वो दिलआज़ार किताबें छपती हैं, आज भी बातिल क़ल्बों की पनाहगाहों में बैठकर दिन दहाड़े मेहबूबे कौनैन की हुरमतों का क़त्ले-आम किया जाता है. यह दुनिया है, यहाँ सरकशी के तूफ़ान पर कोई बन्द नहीं बांधा जा सकता. यहाँ फ़िरऔन व अबूजहल और यज़ीद व चन्गेज़ जैसे बाग़ियों को भी जीने की मुहलत दी जाती है.

आज की सोहबत में देवबन्दी मसलक के नुमाइन्दों से मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूँ कि मज़कूरह बाला किताबों की इबारतों में अगर बिलफ़र्ज़ तुमने इस्लाम का कोई पहलू तलाश कर लिया है तो चश्मे मा रौशन दिले मा शाद. लेकिन इस हक़ीक़त से तो तुम इन्कार नहीं कर सकते कि इन इबारतों का एक रूख़ इहानते रसूल ﷺ पर मुश्तमिल ज़ररूर है क्योंकि अगर इन इबारतों में इहानते रसूल का कोई पहलू न होतो तो तावील की ज़रूरत ही क्यों पेश आती.

पस क़ुरआन की हिदायत के मूजिब अगर राइना के लफ़्ज़ पर सिर्फ़ इस वजह से पाबन्दी आइद की जा सकती थी कि इस लफ़्ज़ में दुशमनाने रसूल के तईं इहानत का कोई पहलू निकल सकता था तो उसी क़ानून की रौशनी में क्या इन किताबों पर पाबन्दी आइद नहीं की जा सकती कि जिनकी इबारतों में इहानते रसूल का वाज़ेह पहलू मौजूद है.

लेकिन बावर कीजिये कि क़ुरआन पर सही ईमान होता, हुब्बे रसूल की कुछ भी ग़ैरत होती और ख़ुदा की ख़ुशनूदी का ज़रा भी पास व लिहाज़ होता तो इहानत अन्गेज़ किताबों को कब का दरियाए शोर में नाबूद कर दिया गया होता ताकि दुनियाए इस्लाम में बेचैनियों की जो आग सुलग रही है वह बुझ जाती और जो लोग आज एहले इश्क़ो महब्बत की ठोकरों में भी जगह पाने के क़ाबिल नहीं हैं वो सरों पर बैठते और दिलों पर हुकूमत करते और इस तरह वो लोग उलमाए दीन का सही मक़ाम हासिल कर लेते.

दसवीं आयते करीमह :

कहते हैं कि सरकारे अक़्दस ﷺ के एहदे पाक में एक मुनाफ़िक़ और एक यहूदी के बीच खेत में पानी पटाने पर झगड़ा हो गया. यहूदी का खेत पहले पड़ता था. मुनाफ़िक का खेत उसके बाद था. यहूदी का कहना था कि पहले मेरा खेत सैराब होगा तब तुम्हारे खेत में पानी जाने दूंगा. मुनाफ़िक़ का इसरार था कि पहले मैं अपने खेत को सैराब करूंगा इसके बाद तुम्हारे खेत में पानी जाएगा.

जब यह झगड़ा किसी तरह तय न हो सका तो किसी सालिस के ज़रिये फ़ैसला कराने की बात ठहरी. यहूदी ने कहा कि मैं तुम्हारे पैग़म्बर ﷺ ही को अपना सालिस मानता हूँ. उनसे इख़्तिलाफ़ के बावजूद मुझे यक़ीन है कि वह हक़ के सिवा किसी की भी पासदारी न करेंगे. मुनाफ़िक़ ने यह सोचकर कि यहूदी के मुकाबले में यक़ीनन वह मेरी रिआयत करेंगे क्योंकि मैं अपने आपको मुसलमान कहता हूँ, यहूदी की पेशकश क़ुबूल कर ली.

चुनान्चे यहूदी और मुनाफ़िक दोनों अपना मुकदमा लेकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए. सरकार ने दोनों फ़रीक़ का अलग अलग बयान सुना. नज़ाअ की तफ़सील यह वाज़ेह कर रही थी कि हक़ यहूदी के साथ है. चुनान्चे हुज़ूर मे यहूदी के हक़ में फ़ैसला सुना दिया.

यहूदी फ़रहाँ व शादाँ वहाँ से उठा और बाहर आकर मुनाफ़िक से कहा कि अब तो मेरे हक़ से तुम्हें इन्कार न होगा. मुनाफ़िक ने मुंह लटकाए, पेशानी पर बल डाले जवाब दिया कि मैं यह फ़ैसला तस्लीम नहीं करता, मेरे साथ इन्साफ़ नहीं किया गया. तुम्हें मन्ज़ूर हो तो हम अपना मुकदमा हज़रत उमर के पास ले चलें वह सही फ़ैसला करेंगे. यहूदी ने जवाब दिया तुम जिस से भी फ़ैसला कराओ, रसूले खुदा का फ़ैसला अपनी जगह पर बहाल रहेगा.

चुनान्चे दोनों हज़रत उमरे फ़ारूक़ ☐के दौलत कदए इकबाल पर हाज़िर हुए. मुनाफ़िक ने मुकदमे की तफ़सील बताते हुए इस बात की बार बार तकरार की कि मैं मुसलमान हूँ और यह यहूदी है, मज़हबी इनाद की वजह से यह मुझे नुकसान पहुंचाना चाहता है. मुनाफ़िक़ का बयान ख़त्म हुआ तो यहूदी सिर्फ़ इतना कहकर ख़ामोश हे गया - यह सही है कि मैं यहूदी हूँ और यह अपने आपको मुसलमान कहता है लेकिन सुन लिया जाए

कि जो मुकदमा यह आपके पास लेकर आया है उसका फ़ैसला पैग़म्बरे इस्लाम ने मेरे हक़ में कर दिया है. यह मुसलमान होकर कहता है कि मुझे उनका फ़ैसला तस्लीम नहीं है. यह अपने नुमाइशी इस्लाम की रिशवत देकर आप से रसूले ख़ुदा के ख़िलाफ़ फ़ैसला कराने आया है. अब आपको इख़्तियार है कि जो फ़ैसला चाहे कर दें.

यहूदी का यह बयान सुनकर फ़ारूक़े अअज़म की आँखें सुर्ख हो गई. चेहरा फ़र्ते जलाल से तमतमा उठा. आलमे ग़ैज़ में मुनाफ़िक़ से सिर्फ इतना दरियाफ़त किया कि कया यहूदी की बात सही है.

मुनाफ़िक्क ने दबी ज़बान से ऐतिराफ़ किया कि उसने ठीक ही कहा है.

मुनाफ़िक़ पर बग़ावत का जुर्म साबित हो गया. फ़ारूक़े अअज़म की अदालत में एक मुर्तद की सज़ा के लिये अब कोई लम्हए इन्तिज़ार बाक़ी नहीं था. उसी आलमे क़हरो ग़ज़ब में अन्दर तशरीफ़ ले गए. दीवार से लगी हुई एक तलवार लटक रही थी उसे बेनियाम किया. क़ब्ज़े पर हाथ रखे हुए बाहर निकले. फ़र्ते हैबत से मुनाफ़िक्क की आँखें झपक कर रह गईं.

ग़ैरते जलाल में डूबी हुई एक आवाज़ फ़ज़ा में गूंजी - हाकिमे अर्ज़ो समावात के फ़ैसले का मुन्किर इस्लाम का खुला हुआ बाग़ी है और उसके हक़ में उमर का फ़ैसला यह है कि उसका सर क़लम कर दिया जाए.

यह कहते हुए एक ही वार में मुनाफ़िक्क के टुकडे उडा दिये. एक लम्हे के लिये लाश तड़पी और ठन्डी हो गई.

इसके बाद मदीने में एक भौंचाल सा आगया. यह ख़बर बिजली की तरह सारे शहर में फैल गई. चारों तरफ़ से मुनाफ़िक्कीन ग़ोल दर ग़ोल दौड़ पड़े. गली गली में शोर बरपा हो गया कि हज़रत उमर ने एक मुसलमान को क़त्ल कर दिया. दुशमनाने इस्लाम की बन आई थी. अपनी जगह उन्हों ने यह भी प्रोपगन्डा शुरू कर दिया कि अब तक तो मुहम्मद ﷺ के साथियों की तलवारें सिर्फ़ मुश्रिकीन का ख़ून चाटती थीं लेकिन अब ख़ुद मुसलमान भी उनके वार से मेहफ़ूज़ नहीं हैं.

बात पहुंचते पहुंचते आख़िरेकार सरकार ﷺ की बारगाह तक पहुंची. मस्जिदे नबवी के सहन में सब लोग जमा हो गए. हज़रत फ़ारूक़े अअज़म की तलबी हुई. ग़ैरते हक़ का तेवर अभी तक उतरा नहीं था. आँखों में जलाले इशक़ का खुमार लिये हुए हाज़िरे बारगाह हुए. सरकार ﷺ ने

दरियाफ़त फ़रमाया - कयों उमर, मदीने में यह कैसा शोर है. कया तुमने किसी मुसलमान को क़त्ल कर दिया है.

जज़बात के तलातुम से आँखें भीग गई थीं. दिल का आलम ज़ेरो ज़बर हो रहा था. बज़्में जानाँ में पहुंचकर इश्क़ में दबी हुई चिन्गारी भड़क उठी थी. बेखुदी की हालत में खड़े होकर जवाब दिया -

उमर की तलवार किसी मुसलमान के ख़ून से कभी आलूदा नहीं होगी. मैंने ऐसे शख़्स को क़त्ल किया है जिसने आपके फ़ैसले से इन्कार करके अपनी जान का रिश्ता हल्क़ए इस्लाम से तोड़ लिया था.

अपनी सफ़ाई पेश करके हज़रत फ़ारूक़े अअज़म अभी बैठे ही थे कि फ़ज़ा में शहपरे जिब्रील अलैहिस्सलाम की आवाज़ गूंजी. अचानक आलमे ग़ैब की तरफ़ सरकार ﷺ की तवज्जह मुन्अतिफ़ हो गई. दम के दम में मेहफिल का रंग बदल गया. हज़रते रूहुल अमीन ने खुदाए ज़ुल जलाल की तरफ़ से हज़रते उमर फ़ारूक़े अअज़म के मुकदमे का फ़ैसला सुनाया. वही जवाब जो फ़ारूक़े अअज़म ने दिया था, इस आयते क़ुरआनी में हमेशा के लिये ढल गया. हदीसों में आया है कि हज़रते उमर फ़ारूक़े अअज़म की खुसूसियात में से एक खुसूसियत यह थी कि अल्लाह तआला उनकी ज़बान पर कलाम करता है -

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتّٰى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِىٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ٭ (نسآء : ٥٦)

यानी क़सम है आपके परवर्दिगार की कि वो उस वक़त तक मुसलमान हो ही नहीं सकते जब तक कि अपने झगड़ों में वो आपको अपना हकम न मान लें और फिर जब आप उनका फ़ैसला कर दें तो वो अपने दिलों में किसी तरह की ख़लिश न मेहसूस करें और आपका फ़ैसला खुले दिल से तस्लीम करें.

तशरीह - यह आयत अपने मौक़ए नुजूल की रौशनी में मन्दरजए ज़ैल उमूर को ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह करती है :

(१) कलिमा और इस्लाम की नुमाइश किसी को भी बग़ावत की सज़ा से नहीं बचा सकती. मदनी ताजदार ﷺ की सरकार में ज़रा सी गुस्ताख़ी भी यकलख़्त इस्लाम का वह सारा इस्तेहक़ाक़ छीन लेती है जो कलिमा पढ़ने

के बाद हासिल होता है.

(२) पैदायशी तौर पर जो लोग इस्लाम से बेगाना हैं और जिन्होंने कभी भी अपने आपको कलिमए तैय्यिबह से वाबस्ता नहीं किया है, उनके वुजूद को किसी न किसी हालत में यक़ीनन बर्दाश्त किया जा सकता है लेकिन अपने इस्लाम का एलान कर देने के बाद जो मुन्किर हो गए या अपने आपको मुसलमान कहते हुए जिन्होंने नबीये मुर्सल की शान में तौहीन आमेज़ रवैय्या इख़्तियार किया, उन्हें हरगिज़ मआफ़ नहीं किया जाएगा. इस्लाम की ज़बान में वो मुर्तद हैं. उनका हाल बिल्कुल उस दोस्त की तरह है जो रगे जाँ से क़रीब हो जाने के बाद यक बयक दग़ा दे दे. किसी बेगाने को तो गले लगाया जा सकता है लेकिन किसी ऐसे दोस्त के मुंह पर कोई थूकना भी गवारा नहीं करेगा.

इन्सान की यह आलमगीर फ़ितरत है. हर शख़्स की ज़िन्दगी में इस तरह की दो चार मिसालें ज़रूर मिल सकती हैं. लेकिन मातम यह है कि फ़ितरत का यह तक़ाज़ा इन्सान अपने बारे में तो तस्लीम करता है लेकिन ख़ुदा व रसूल के मामले में फितरत का यह तक़ाज़ा फ़रामोश कर देता है.

यह इस्लाम व अक़्ल की फ़ितरत ही तो थी कि जिस फ़ारूक़े अअज़म ने बड़े बड़े काफ़िराने दुनिया को ज़िन्दगी का हक़ दिया, वही फ़ारूक़े अअज़म आज कलिमए इस्लाम से बरगश्ता हो जाने वाले मुर्तद को एक लम्हा भी ज़िन्दा देखना नहीं चाहते थे.

(३) इस आयत से यह हक़ीक़त भी वाज़ेह हो गई कि कुफ़्रो इर्तिदाद कुछ तैहीदो रिसालत या मज़हबे इस्लाम से खुल्लम खुल्ला इन्कार पर ही मुन्हसिर नहीं है. यह भी इन्कार ही के हम-मानी है कि ख़ुदा को अपना ख़ुदा, या रसूल को अपना रसूल और इस्लाम को अपना इस्लाम कहते हुए किसी भी रूख़ से मन्सबे रिसालत की तन्क़ीस कर दी जाए.

इन (सहाबए किराम) की पाकीज़ा ज़िन्दगी का अगर बेग़ुबार आँखों से मुतालिआ किया जाए तो हज़ारों वाक़िआत शहादत देंगे कि जब तक वो ज़िन्दा रहे नबी के क़दमों के नीचे उनके दिल बिछे रहे. दीन व दुनिया की सारी कामरानियों और अर्जुमन्दियों को उन्हों ने अपने हबीब के दामन से इस तरह बांधा था कि किसी गिरह का खुलना तो बड़ी बात. ढीली तक न हुई.

अपने प्यारे नबी ﷺ की ख़ुशनूदी के रास्ते में अगर अपना लाडला

बेटा भी हाइल हो गया तो उनकी ग़ैरते इश्क़ की तलवार ने उसे भी मुआफ़ नहीं किया. उनकी दोस्ती और दुशमनी का मेहवर नबीये पाक ﷺ की मुकद्दस पेशानी पर उभरती हुई लकीरों और चेहरए ताबाँ की मुस्कुराहटों के गिर्द हमेशा घूमता रहता था. ईमान के इस तक़ाज़े के साथ उनकी ज़िन्दगी का यह पैमाना कभी नहीं टूट सका कि जो नबी का है वही उनका है और जो नबी का नहीं उसके साथ उनका कोई रिश्ता नहीं, चाहे ख़ून ही की ख़मीर से वह रिश्ता क्यों न वुजूद में आया हो.

गयारहवीं आयते करीमह :

शाने नुजूल - मन्क़ूल है कि एक मौक़े पर सरकारे वाला तबार ﷺ की ख़िदमत में हज़रत उमरे फ़ारूक़ और दूसरे अजिल्लए सहाबा मौजूद थे. किसी मआमले पर हुजूर ﷺ उनसे मशवरह फ़रमा रहे थे. बात आगे बढ़ी और गुफतगू का सिलसिला दराज़ हो गया यहाँ तक कि एक मौक़े पर बात की रौ में इन बुजुर्गों की आवाज़ बलन्द हो गई. ख़ुदाए किर्दगार को अपने मेहबूब की जनाब में यह अन्दाज़े गुफतगू सख़्त नापसन्द हुआ. ग़ुलामों के इन्तिबाह के लिये फ़ौरन ही यह हिदायतनामा नाज़िल फ़रमाया -

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ •

(حجرات : ٢)

यानी ऐ ईमान वालो, नबी की आवाज़ पर अपनी आवाज़ को बलन्द न होने दो. और उनसे इस तरह चिल्ला कर गुफतगू न करो जिस तरह आपस में एक दूसरे से करते हो ऐसा न हो कि कहीं तुम्हारे सारे अआमाल अकारत हो जाएं और तुम्हें ख़बर तक न हो.

तशरीह - ग़ौर करने की बात यह है कि नबी की आवाज़ पर जिन सहाबए किराम की आवाज़ बलन्द हो रही थी उनकी नियाज़-मन्दी व अक़ीदत की क़सम खाई जा सकती थी. जज़बात की रौ में ऐसा हो गया था वरना दिल की कायनात तौक़ीरे रिसालत के जज़बे से मअमूर थी. तन्क़ीसे शाने रिसालत की बात वो ख़्वाब में भी नहीं सोच सकते थे. आलमे बेदारी की तो बात ही कया है.

लेकिन अपने मेहबूब की रिफ़अते शान के लिये ज़रा मशिय्यते

इलाही का यह एहतिमाम मुलाहिज़ा फ़रमाइये कि इतनी बात भी गवारा नहीं है कि बेख़याली में भी काकुले रूख़ के ग़ुलामों से कोई ऐसी बात सादिर हो जाए जो जलालते शान के ख़िलाफ़ हो.

वारफ्तगीये इश्क़ का इख़लास अपनी जगह पर है, दिले नियाज़मन्द का हाल भी छुपा हुआ नहीं, लेकिन मन्सब की शौकतों का पास तो करना ही होगा. मेहबूब से तख़ातुब के लिये जहाँ अल्फ़ाज़ की नोक पलक और तअबीर की नज़ाकतों पर निगाह रखना ज़रूरी है वहाँ आवाज़ का लबो-लहजा भी आज़ाद नहीं है. फिर आयते बाला में अन्दाज़े बयान का वह तेवर जिसकी दहशत से ख़ून सूख जाता है. यह है कि इन्सान अपनी सरिश्त के लिहाज़ से बे-ऐब व बे-ख़ता नहीं है, तरह तरह के मआसी का वह बार बार इर्तिकाब करता है लेकिन रहमते यज़दानी का यह एहसाने आम है कि किसी भी नए गुनाह के इर्तिकाब से वह नेकियों के पिछले ज़ख़ीरे को बर्बाद नहीं करता. कुफ्रो शिर्क के अलावा बड़े से बड़े जुर्म के लिये यही क़ानून है कि मुज्रिम ने किसी जुर्म का इर्तिकाब किया, नामए अअमाल में एक फ़र्दे गुनाह का इजाफ़ा हो गया. पिछली नेकियाँ अपनी जगह पर साबितो बरक़रार हैं लेकिन मेहबूब की शान में गुस्ताख़ी इतना बड़ा जुर्म है कि पिछली नेकियों का ज़ख़ीरा भी ख़त्म कर दिया जाता है.

यह सोचकर कलेजा काँप जाता है कि मेहबूबे बारी की जनाब में ज़रा सी आवाज़ ऊंची हो गई तो इसकी सज़ा सिर्फ़ इतनी ही नहीं है कि नामए अअमाल में एक गुनाह का इन्दराज कर लिया जाए. बल्कि कुरआन कहता है कि इसके साथ साथ पिछली नेकियाँ भी मस्ख़ कर दी जाएंगी और इबादतो इताअत का सारा अन्दोख़्ता भी मस्ख़ कर दिया जाएगा और सबसे बड़ा ग़ज़ब यह कि लुट जाने वाले को इसकी ख़बर भी न हो सकेगी कि उम्र भर की नेकियों का ख़िरमन कब लुटा और कैसे लुटा. क़यामत के दिन जली हुई ख़ाकस्तर जब सामने आएगी अचानक मेहसूस होगा कि हम लुट गए.

ज़रा नख़वते इल्मो अदब की ताराकी से बाहर निकल कर सोचिये जब नबी के हुजूर ज़रा सी ऊंची आवाज़ करने की यह सज़ा मिलती है तो जिन लोगों ने उनकी तन्क़ीसे शान को ही अपना शिआर बना लिया है उनकी बर्बादियों का कौन तसव्वुर कर सकता है.

ख़ुदा इस हलाकत-खेज़ आज़ार से अपने मेहबूब की उम्मत को

मेहफ़ूज़ रखे. दीनो दुनिया की तबाही के लिये शैतान के पास इस से ज़ियादा खौफ़नाक और कोई हथियार नहीं कि वह तौहीदे इलाही के नाम पर रसूले अरबी ﷺ की तरफ़ से दिलों का रूख़ फेर देता है, ज़िल्लतो रूस्वाई के इसी मरहले से चूंकि वह ख़ुद भी गुज़र चुका है इस लिये वह इस भेद से वाक़िफ है कि किसी की दुनिया व आख़िरत किस तरह आने वाहिद में तबाह की जा सकती है.

क़ुरआने करीम की जो आयात ऊपर पेश की गई हैं वो कलाम किसी इन्सान का नहीं बल्कि इन्सानों के ख़ुदा का है. इन आयात की रौशनी में आसानी से दरियाफ़त किया जा सकता है कि जिस मदनी रसूल का ऐज़ाज़ ख़ुदा के तईं इस दर्जे का है तो ख़ुदा के बन्दों के तईं किस तकरींमो ऐज़ाज़ का वह मुस्तहिक़ होगा. ज़रा आँखें बन्द करके सोचिये तो सही कि कहाँ ख़ुदा की ज़ात जो मुहम्मद ﷺ का ख़ालिक़ है, मालिक है, मअबूद है, मस्जूद है, इतनी लाशरीक अज़मतों के बावजूद वह अपने भेजे हुए रसूल का कितना लिहाज़ फ़रमाता है कि अपने नादान बन्दों को उनके दरबार का अदब सिखलाता है और कहाँ यह नाचीज़ बन्दे जिन्हें तअज़ीम के लिये सिर्फ़ खड़े होने में कसरे शान नज़र आती है.

बारहवीं आयते करीमह :

शाने नुज़ूल - कहते हैं कि ठीक दोपहर के वक़्त बेताब शैदाइयों का एक वफ़्द मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर पहुंचा. वो बहुत दूर दराज़ के एक क़बीले से आया हुआ था. रसूलुल्लाह ﷺ के दस्ते हक़ परस्त पर मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने का इज़्तिराब और शौक़ यहाँ तक खींच लाया था. जिन ऊंटों पर वो सवार थे उन्हें बिठा भी नहीं पाए थे कि वहीं से खड़े खड़े दरियाफ़त किया - नबीये आख़िरूज़्ज़माँ इस वक़्त कहाँ मिल सकेंगे.

लोगों ने जवाब दिया : वह अपने काशानए रहमत में आराम फ़रमा रहे होंगे.

बस इतना सुनना था कि बेताबीये शौक़ में वहीं से नीचे कूद पड़े और सरकार ﷺ के दौलत सराय इज़्ज़त पर खड़े होकर आवाज़ देना शुरू किया. उनकी आवाज़ पर हुज़ूर ﷺ कच्ची नींद उठ गए. बाहर तशरीफ़ लाए और उन्हें दौलते ईमान से फ़ैज़याब किया.

अभी इस मेहफ़िले नूर से उठे भी न थे कि हज़रत जिब्रीले अमीन

अलैहिस्सलातु वस्सलाम खुदाए ज़ुल जलाल की तरफ़ से आयते करीमह लेकर नाज़िल हुए. आयत का मज़मून पढ़ने के बाद बिल्कुल ऐसा मेहसूस होता है कि सुल्ताने कायनात ने अपने नाइबुस्सलतनत के दरबार में हाज़िरी के आदाब सिखाने के लिये अपनी रिआया के नाम एक फ़रमान जारी किया है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَکَ مِنْ وَّرَاءِ الْحُجُرَاتِ اَکْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ • وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰی تَخْرُجَ اِلَیْهِمْ لَکَانَ خَیْرًا لَّهُمْ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ •

(الحجرات : ۴)

यानी ऐ मेहबूब, जो लोग कमरों के बाहर खड़े होकर आपको आवाज़ दे रहे हैं उनमें ज़ियादा तर ऐसे हैं जो (मन्सबे नबुव्वत के आदाब से) नाबलद हैं. अगर वो सब्र के साथ आपकी तशरीफ़ आवरी का इन्तिज़ार करते तो यह उनके हक़ में कहीं बेहतर होता और (चूंकि इस नादानी का इर्तिकाब जज़बए शौक़ की वारफतगी में इनसे हुआ है) अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है अपनी रहमतों से वह इन्हें मआफ़ कर देगा.

तशरीह - रिश्तए महब्बत की ज़रा नज़ाकत मुलाहिज़ा फ़रमाइये. नबी का मन्सबी फ़रीज़ा है कि वह लोगों को खुदाए वाहिद का परस्तार बनाए. ज़ाहिर है कि जो लोग कलिमए तौहीद का इश्तियाक़ लेकर पैग़म्बर की चौखट तक आए उनकी बेक़रारी क़तअन एक ऐसे फ़र्ज़ के लिये है कि जिसका तअल्लुक मन्सबे नबुव्वत से भी है. इसके लिये आज वो खुद आवाज़ दे रहे हैं. आवाज़ के पीछे क़स्द की हम-आहन्गी से कौन इन्कार कर सकता है लेकिन इसके बावजूद खुदाए किर्दगार के तईं यह काम मेहबूब के ख़्वाबे नाज़ से ज़ियादा अहम नहीं हो सकता. दोनों जहाँ का चैन जिसकी राहते जाँ से वाबस्ता है उसके आराम में ख़लल डालने के मानी सिवाय इसके और क्या हैं कि पूरी कायनात की आसाइश को छेड़ दिया जाए. फिर वारफतगीये शौक़ का यह मतलब भी हरगिज़ नहीं है कि आदाबे इश्क़ की उन हुदूद से कोई तजावुज़ कर जाए जहाँ तन्क़ीसे शान का शुबह होने लगे.

अरब का ज़र्रा नवाज़ तुम्हें अपने पहलू में बिठा लेता है तो इस एहसाने बेपायाँ का शुक्र अदा करो कि एक पैकरे नूर से ख़ाकसारों का रिश्ता ही कया. और एक लम्हे के लिये भी इसे न भूलो कि वह रूए ज़मीन का

पैग़म्बर ही नहीं है, ख़ुदाए ज़ुल जलाल का मेहबूब भी है.

उनकी बारगाह के हाज़िरबाश शैवए अदब सीखें. पैकरे बशरी से धोखा न खाएं. अपने वक़्त का सब से बड़ा ज़ाहिद इसी तक़सीर पर आलमे क़ुदस से निकाला गया था. फ़रज़न्दाने आदम को ग़फ़लत से चौंकाने के लिये तअज़ीराते इलाही की यह पहली मिसाल काफ़ी होगी कि मेहबूब के दामन से मर्बूत हुए बग़ैर ख़ुदा के साथ सज्दए बन्दगी का भी कोई रिश्ता क़ाबिले ऐअतिना नहीं हो सकता.

तेरहवीं आयते करीमह :

शाने नुज़ूल - मदीने के मुनाफ़िक़ीन का तज़्करह आप पिछले औराक़ में पढ़ चुके हैं कि वो रसूले मुज्तबा ﷺ की तरफ़ से अपने दिलों में कैसा बुग़्ज़ो इनाद रखते थे और ऊपर से इस्लाम का लबादा ओढ़कर मुसलमानों को किस तरह धोखा देते थे. नमाज़े पंजगाना में भी हाडिजर होते और मुजाहिदीन के लश्कर में भी शरीक रहते थे. दीन के णामले में उनकी यह दोग़ली पालीसी सिर्फ़ इस लिये था कि मुसलमान उन्हें अपना समझें और कुफ़्फार व मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ जो ख़ुफ़िया मन्सूबे तैयार किये जाते हैं वो इन्हें मालूम हो जाया करें क्योंकि ऊपर से वो इस्लाम और मुसलमानों से दोस्ती का दम भरते थे और अन्दर से दुशमनाने इस्लाम के साथ उनका ख़ुफ़िया साज़ बाज़ था.

इन्हीं मुनाफ़िक़ीन के साथ अबू आमिर फ़ासिक़ नाम के एक अन्सारी का बहुत गहरा तअल्लुक था. यह ग़ज़वए ख़न्दक़ तक हर लड़ाई में दुशमनों की तरफ से नबीये अकरम ﷺ के साथ बरसरे पैकार रहा. जब ग़ज़वए ख़न्दक़ में कुफ़्फारो मुश्रिकीन को शिकस्त हो गई तो वह मुल्के शाम की तरफ़ भाग गया और वहाँ से उसने मदीने के मुनाफ़िक़ीन को कहला भेजा कि जब तक मुसलमानों में फूट नहीं डाली जाएगी पैग़म्बरे इस्लाम की अस्करी ताक़त कमज़ोर नहीं हो सकेगी. इस लिये तुम लोग मदीने में एक अलग मस्जिद तअमीर करो और पैग़म्बरे इस्लाम के ख़िलाफ़ तख़रीबी साज़िशों के लिये उसे एक मेहफ़ूज़ अड्डे के तौर पर इस्तेमाल करो. मस्जिद की वजह से मुसलमानों के लिये इस शुबह की गुन्जाइश भी नहीं रहेगी कि तुम लोग उनकी जमाअती कुव्वत तोड़ने के लिये कोई ख़ुफ़िया मरकज़ बना रहे हो. मुसलमानों में फूट डालने और उनकी कुव्वते जिहाद को पारा पारा करने के

लिये इस से बेहतर और कोई हीला नहीं है कि नमाज़ के नाम पर तुम उन्हें अपनी मस्जिद में लाओ और रफ़ता रफ़ता पैग़म्बर की तरफ़ से उनके दिलों में इस तरह के शुकूको शुबहात पैदा कर दो कि उनकी वालिहाना अक़ीदत में फ़ुतूर पैदा हो जाए और पैग़म्बर के गिर्द जान देने वालों की जो एक मज़बूत फ़सील खड़ी है वह जगह जगह से टूट जाए. उसने यह इत्तिला भी भेजी कि मैं क़ैसरे रूम के पास जा रहा हूँ और कोशिश कर रहा हूँ कि एक नाक़ाबिले तस्ख़ीर सिपाह के साथ मदीने पर चढ़ाई करा दूँ. तुम लोग सामाने हर्ब के साथ तैयार रहना.

चुनान्चे अबू आमिर फ़ासिक़ के मशवरे पर मदीने के मुनाफ़िक़ीन ने कुबा नाम के महल्ले में चुपके से एक मस्जिद की बुनियाद रख दी. जब मस्जिद बनकर तैयार हो गई तो मुनाफ़िक़ीन के चन्द सरग़ने हुजूर नबीये करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और निहायत अदब के साथ अर्ज़ किया कि मस्जिदे नबवी शरीफ़ हमारे महल्ले से काफ़ी फ़ासले पर है इस लिये हम लोगों ने अपने महल्ले के बूढों और मअज़ूर लोगों के लिये क़रीब ही में एक मस्जिद की तअमीर कर ली है. हमारी और तमाम नमाज़ियों की दिली ख़्वाहिश है कि हुजूर इस मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें और दोगाना पढ़कर इसका इफतिताह फ़रमा दें ताकि आपके क़दमों की बरकत से हमारी नमाज़ें ख़ुदा के दरबार में दर्जए क़ुबूल को पहुंच जाएं.

उनका यह मअरूज़ा तो सिर्फ़ दिखावे का था वरना दर अस्ल उनकी नियत यह थी कि जब हुजूर ﷺ इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ लेंगे तो इससे सनदे क़ुबूल हासिल हो जाएगी और आम मुसलमानों को भी इस मरकज़ में आने से कोई उज़्र न होगा.

हुजूर ﷺ ने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि मैं तो अभी तबूक के सफ़र पर जा रहा हूँ जो रूम की सरहद पर वाक़े है वहाँ ईसाइयों के साथ एक बहुत बड़ा मअरकह दरपेश है. जब मैं वहाँ से वापस आऊंगा तो इन्शाअल्लाह तुम्हारी मस्जिद में चलूंगा. जब हुजूरे अकरम सैय्यिदे आलम ﷺ दो महीने बाद ग़ज़वए तबूक की मुहिम से लौटे और मदीने के क़रीब पहुंचे तो हज़रत जिब्रीले अमीन अलेहिस्सलाम यह आयते करीमह लेकर नाज़िल हुए :

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا م بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ط وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ط وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۰ لَاتَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ط (توبہ: ١٠٧، ١٠٨)

यानी और वो लोग जिन्हों ने मस्जिद बनाई है ताकि मुसलमानों को ज़रर पहुंचाएं और वहाँ से कुफ़्र फैलाएं और मुसलमानों में फूट डालें और उस शख़्स के वास्ते इसे कमीनगाह बनाएं जो पहले से ख़ुदा व रसूल से लड़ रहा है, वह क़सम खाकर यक़ीन दिलाएंगे कि मस्जिद की तअमीर का मक़सद सिवा भलाई के कुछ नहीं है और अल्लाह गवाही देता है कि वो झूटे हैं. आप हरगिज़ उनकी मस्जिद में न जाएं.

इस आयते करीमह के नुज़ूल के बाद हुज़ूर पैकरे नूर ﷺ जब मदीनए मुनव्वरह में रौनक़-अफ़रोज़ हुए तो अपने दो सहाबी हज़रत मालिक इब्ने ख़िशम और हज़रत मअन इब्ने अदी इजलानी को हुकम दिया कि वह मस्जिदे ज़िरार है उसे जाकर गिरा दो और जला दो. (हवाले के लिये देखिये तफसीरे दुर्रे मन्सूर और वफ़ाउल वफ़ा)

तशरीह - अपने दिमाग़ का दरवाज़ा खोलकर दिल की तहारत के साथ अगर आप इस आयते करीमह का मुतालआ करेंगे तो वहिये इलाही की रौशनी में इश्क़ो ईमान के बहुत सारे हक़ाइक़ आप पर रौशन होंगे.

(१) सबसे पहली बात आप पर यह मुन्कशिफ़ होगी कि नबी की तरफ से मुसलमानों को बदअक़ीदा बनाने के लिये मुनाफ़िक़ीन खुली मुख़ालिफ़त का रास्ता नहीं इख़्तियार करते बल्कि नमाज़ और इस्लाह के नाम पर वो मस्जिदों को अपने ख़ुफ़िया मिशन का मरकज़ बनाते हैं और वहाँ से दीन के नाम पर बेदीन बनाने की मुहिम चलाते हैं.

(२) दूसरी बात यह मालूम होगी कि वो खुले बन्दों इसका इज़हार नहीं करते कि नबीये रहमत ﷺ की तरफ़ से मुसलमानों को बदअक़ीदा बनाना उनके तब्लीग़ी मिशन का मक़सद है बल्कि क़स्में खा खा कर वो यक़ीन दिलाते हैं कि हमारा मक़सद सिर्फ़ मुसलमानों की इस्लाह है.

(३) तीसरी बात यह मालूम होगी कि नबी की अज़मत को मजरूह करने वाला कोई मशहूर बाग़ी ज़रूर इनकी पुश्त पर है और मुसलमानों में उसकी ईमान सोज़ तअलीमात फैलाने के लिये वो मस्जिदों को कमीनगाहों

और छावनियों के तौर पर इस्तेमाल करते हैं.

(४) चौथी बात यह मालूम होगी कि मस्जिदों में तब्लीग़ी मरकज़ के क़याम से उनका बुनियादी मक़सद मुसलमानों में अक़ीदे की तफ़रीक़ पैदा करके उनके दरमियान फूट डालना है.

(५) पांचवीं बात यह मालूम होगी कि अल्लाह के नज़्दीक न उनकी मस्जिद, मस्जिद है और न उनकी नमाज़ नमाज़, अगर ऐसा होता तो अल्लाह तआला हरगिज़ अपने पैग़म्बर को वहाँ जाने से न रोकता और न पैग़म्बर उसके मुन्हदिम करने और जलाने का हुक्म देते.

(६) छटी बात यह मालूम होगी कि मस्जिद और नमाज़ के नाम पर मुसलमानों को हरगिज़ धोखा नहीं खाना चाहिये क्योंकि जब उनकी मस्जिद में जाने से ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को रोक दिया तो एहले ईमान को उनकी इस रसूल दुशमन तहरीक में शामिल होना क्योंकर दुरूस्त होगा जिसकी तकमील के लिये उन्हों ने मस्जिद बनाई है.

(७) सातवीं बात यह मालूम होगी कि जहाँ भी नबी की बग़ावत के लिये कोई मरकज़ क़ाइम हो चाहे क़ाइम करने वाले नाम के मुसलमान ही क्यों न हों, वफ़ादार उम्मत पर लाज़िम है कि पूरी क़ुव्वत के साथ उनकी मुखालिफ़त करें और उनके नापाक मक़सद को बेनिक़ाब करके मुसलमानों को उनके शर से बचाएं.

इन सारी तफ़सीलात के बाद मुझे मुसलमानों से सिर्फ़ इतना कहना है कि इस आयते करीमह की रैशनी में निहायत होश मन्दी के साथ वो उन तब्लीग़ी मराकज़ का जयज़ा लें जो कलिमा व नमाज़ के नाम पर आज मस्जिदों में चलाए जा रहे हैं, उन्हें सिर्फ़ बाहर ही से नहीं अन्दर से भी देखें. इस रूख़ से भी देखें कि किन मशहूर गुस्ताख़ों के चेहरे इनके पीछे हैं . पेशानियों पर सिर्फ़ सज्दों का दाग़ न देखें कि ये निशान मुनाफ़िक़ीन की पेशानी पर भी था बल्कि यह भी देखें कि नबी ﷺ की तरफ़ से उनके दिलों का कया हाल है.

यह भी मालूम करें कि जाने वाले चिल्लों में जाते वक़्त तअज़ीमे रसूल और अक़ीदते औलिया का जो जज़बा अपने साथ लेकर गए थे वह रास्ते में कहाँ लुट गया. उन आबादियों को भी देखें कि जहाँ उनके पहुंचने से पहले दीनी इत्तिहाद था, उनके पहुंचने के बाद वहाँ के मुसलमानों में फूट

क्यों पड़ गई. इसके बाद फ़ैसला करें कि इन हालात में क़ुरआन की यह आयते करीमह हम से और आप से क्या कहती है. जब ख़ास एहदे रिसालत में कुफ़्रो निफ़ाक़ का इतना कड़ा जाल रचाया जा सकता है तो आज के दौरे पुर-फ़रेब का क्या पूछना. ख़ुदा हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए.

• • • • • • • • •

नोट - ईमान की पुख़्तगी के लिये अल्लामा की किताब ज़लज़लह, ज़ेरो ज़बर, दअवते इन्साफ़, तब्लीग़ी जमाअत, वग़ैरह का मुतालआ करें जिससे हक़ीक़त खुलकर सामने आएगी.

फ़रमूदाते ग़ज़ाली की रौशनी में

दौरे हाज़िर के इख़्तिलाफ़ी अक़ाइद व मसाइल का हल

लेखक : *मौलाना फ़ैज़ अहमद उवैसी रिज़वी, लाहौर*

जिन हज़रात को इमाम ग़ज़ीली क़ुद्दस सिर्रहू की शख्सियत पर हुस्ने ऐतिक़ाद है उन्हें दअवते हक़ पेश है कि दौरे हाज़िर के इख़्तिलाफ़ी मसाइल का हल इमाम ग़ज़ाली क़ुद्दस सिर्रहू के अक़ाइदो मअमूलात को बनाइये. अल्हम्दुलिल्लाह फ़क़ीर पूरे वुसूक़ से कह रहा है कि दौरे हाज़िर में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब व मसालिक में हक़ पर वो हैं जिन्हें सुन्नी बरेलवी कहा जाता है क्योंकि यही अक़ाइद व मअमूलात इमाम ग़ज़ाली क़ुद्दस सिर्रहू और जुमला असलाफ़े सालिहीन के थे.

हाज़िरो नाज़िर :

(१) अत्तहियात की बहस में लिखा कि :

واحضر فی قلبک النبی صلی اللہ علیہ وسلم و شخصہ الکریم وقل السلام علیک ایھا النبی ﷺ ورحمۃ اللہ وبرکاتہ. (احیاء العلوم . ج ۱، ص ۱۵۷)

यानी - और अपने दिल में नबीये पाक ﷺ की ज़ाते पाक को सामने रख और कह आप पर सलाम हो ऐ नबी और अल्लाह तआला की रहमत और बरकतें.

(२) और मिरक़ात में हज़रत मुल्ला अली क़ारी ने इमाम ग़ज़ाली क़ुद्दस सिर्रहू का क़ौल नक़ल फ़रमाया कि

قال الغزالی سلم علیہ اذا دخلت فی المسجد فانہ علیہ السلام یحضر فی المسجد.

यानी इमामे ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह ने फ़रमाया कि जब तुम मस्जिद में जाओ तो हुज़ूर ﷺ को सलाम अर्ज़ करो इस लिये कि आप ﷺ मस्जिद में हाजिर होते हैं.

नीज़ इहयाउल उलूम में लिखा है कि

ولا تظن ان ذلک لم یکن مکشوفا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فان من لم یعرف نفسہ فکیف یعرف اللہ سبحانہ فلا یبعد ان یکون

ذلک مکشوفا لبعض الاولیاء والعلماء.

यानी यह गुमान मत कर कि रूह की हक़ीक़त रसूलुल्लाह ﷺ पर मुन्कशिफ़ न थी इस लिये कि जो ख़ुद को नहीं जानता वह अल्लाह तआला को कैसे जानेगा बल्कि यह भी बईद नहीं कि रूह की हक़ीक़त बअज़ औलिया और बअज़ उलमा पर मुन्कशिफ़ थी.

क़यामे तअज़ीमी :

इमामे ग़ज़ाली कुद्दस सिर्रहू सिमाअ की बहस अदबे ख़ामिस में लिखते हैं :

किसी के लिये तअज़ीमन खड़ा हो जाना अरब का तरीक़ा न था चुनान्चे सहाबा बअज़ औक़ात आँहज़रत के लिये खड़े नहीं होते थे जैसा कि हज़रत अनस रदियल्लाहो तआला अन्हु से मरवी है लेकिन चूंकि इसके मुतअल्लिक़ कोई नहिये आम नहीं वारिद है इस लिये जिन मुल्कों में इसका रिवाज है हमारे नज़्दीक वहाँ क़यामे तअज़ीमी करना कुछ मज़ायक़े की बात नहीं कयोंकि इससे मक़सूद तअज़ीमो तकरींम है. इस क़िस्म की और बातें भी जो किसी क़ौम में रिवाज पा गई हैं जाइज़ बल्कि मुस्तहसन हैं अल्बत्ता जिस फ़ेअल के मुतअल्लिक़ कोई ऐसी नहिय वारिद हो जिसकी तावील नहीं हो सकती तो वह बेशक नाजाइज़ है.

फ़ायदा : तअज़ीमे अम्बिया व औलिया, उलमा व मशायख़ और अकाबिरे एहले सुन्नत के शिआर में से समझी जाती है जिसे मुख़ालिफ़ीने इस्लाम और मुन्किरीने कमालाते अम्बिया व औलिया शिर्क व बिदअत गरदानते हैं. इमामे ग़ज़ाली कुद्दस सिर्रहू ने इसे एक आमी वज्द करने वाले के लिये मुस्तहसन क़रार दिया तो अम्बिया व औलिया के लिये तो बतरीक़े औला मुस्तहसन है.

हयातुल अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) वल इख़्तियार :

हज़रत इमाम इस्माईल हक़्की हनफ़ी कुद्दस सिर्रहू अपनी तफ़सीरे रूहुल बयान सूरतुल मुल्क में इमामे ग़ज़ाली कुद्दस सिर्रहू का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि

قال الامام الغزالی والرسول علیہ السلام لہ الاخیار فی طواف العالم مع ارواح الصحابۃ لقدر اہ کثیر من الاولیاء.

यानी इमामे ग़ज़ाली ने फ़रमाया कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम को दुनिया में अपने सहाबा समेत सैर करने का इख़्तियार है. आपको बहुत से औलिया किराम ने देखा है.

अल-इस्तिमदाद :

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह ने अशअतुल-लमआत, बाबे ज़ियारत में हज़रत इमामे ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह की तरफ़ मन्सूब करके लिखा कि :

امام غزالی گفتہ ہر کہ استمد اد کردہ شود بودے در حیات استمد اد کردہ می شود بعد از وفات .

यानी - हज़रत इमामे ग़ज़ाली क़ुद्दस सिर्रहू ने फ़रमाया कि जिसे उसकी ज़िन्दगी में मदद मांगी जा सकती है उससे उसकी वफ़ात के बाद भी मदद मांगी जा सकती है.

अस्लुल अशिया अल इबाहा :

इमाम साहिब ने मुआशिरत व अख़लाक़ की बुनियाद अगरचे तमाम मज़हब पर रखी है और इसी वजह से हर उनवान की इब्तिदा में शरई दलीलों से इस्तिम्बात करते हैं लेकिन इस नुकते को इस जगह मल्हूज़ रखा है कि शारेअ के कौन से अफ़आल रिसालत की हैसियत से तअल्लुक रखते हैं और कौन से मआशिरत व आदत की हैसियत से. आदाबे तआम पर जो मुस्तक़िल मज़मून लिखा है उसमें जहाँ खाना खाने के क़ाइदे लिखे हैं एक क़ाइदा लिखा है कि खाना दस्तर ख़्वान पर चुनकर खाना चाहिये, मेज़ या सन्दूक पर रख कर नहीं खाना चाहिये, इसकी सनद में हज़रत अनस रदियल्लाहो तआला अन्हु की एक हदीस नक़ल की है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कभी सन्दली पर रख कर नहीं खाया. फिर क़दिमाए सलफ़ का यह मकूला नक़ल किया है कि दो चार चीज़ें बिदअत हैं जो आँहज़रत ﷺ के बाद राइज हुईं. खाने की मेज़ या सन्दलियाँ, फलनी (छलनी) अशनान, पेटभर कर खाना. इन अक़वाल के बाद लिखते हैं कि गो दस्तरख़्वान पर खाना अच्छा है लेकिन इसके मानी ये नहीं हैं कि सन्दली पर खाना मकरूह या हराम है क्योंकि इस क़िस्म का कोई हुकम शरीअत में नहीं. बाक़ी रहा यह अम्र कि ये चीज़ें आँहज़रत ﷺ के बाद ईजाद हुईं तो यह कोई कुल्लियह

नहीं कि ईजाद बिदअत है, बिदअते नाजाइज़ वह है जो किसी सुन्नत के ख़िलाफ़ हो या जिस से शरीअत का कोई हुकम बावजूद बक़ाए इल्लत के बातिल हो जाए वरना इकतज़ा के मुवाफ़िक़ बअज़ ईजादात मुस्तहब और पसन्दीदा हैं. सन्दली पर खाने में सिर्फ़ यह बात है कि खाना ज़मीन से ज़रा ऊंचा हो जाता है और खाने में आसानी होती है और यह कोई ममनूअ अम्र नहीं. जिन चार चीज़ों को बिदअत कहा गया है सब यकसाँ नहीं हैं. अशनान एक घास का नाम है जो साबुन के बजाय हाथ धोने के वक़्त इस्तेमाल की जाती थी. हाथ धोना तो अच्छी बात है क्योंकि इसमें सफ़ाई और नफ़ासत है. खाना खाने के बाद हाथ धोने में तो और ज़्यादा सफ़ाई है. अगले ज़माने में अगर इसका इस्तेमाल नहीं किया जाता था तो उसकी वजह यह होगी कि उसका रिवाज न था या वह मयस्सर न आती होगी या वो लोग ऐसी मुहिम्मात में मशग़ूल थे जो सफ़ाई पर मुक़द्दम थे यहाँ तक कि वो हाथ भी नहीं धोते थे और तलवों में हाथ पौंछ लिया करते थे लेकिन इससे यह नतीजा नहीं निकलता कि हाथ धोना मुस्तहब नहीं .

फ़ाइदह : यह वह क़ाइदा है जिस से बीसियों इख़्तिलाफ़ी मसाइल आसानी से हल किये जा सकते हैं. इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी क़ुद्दस सिर्रहू ने बहुत से बद मज़ाहिब के बेशुमार मसाइल का इसी क़ाइदे पर रद फ़रमाया और मुतअद्दिद तसानीफ़ इसी क़ाइदे पर मुरत्तब फ़रमाईं. मसलन मुनीरुल ऐनैन, ख़ालिलसुल ऐतिक़ाद, अल-अम्नु वल उला, अद-दूलतुल मक्कियह वग़ैरह वग़ैरह.

ज़ियारते क़ुबूरे अम्बिया व औलिया :

फ़रमाते हैं सरकार इमामे ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह, वह सफ़र जो इबादत के वास्ते हो, अम्बिया व औलिया, सहाबा और ताबिईन की क़ब्रों की ज़ियारत बल्कि उलमा और बुज़ुर्गाने दीन की ज़ियारत बल्कि उलमा और बुज़ुर्गाने दीन की मुलाक़ात. क्योंकि उनकी सूरत देखना इबादत है और उनकी दुआ में बड़ी बरकत है, उनकी मुलाक़ात के फ़ाइदों में एक यह है कि उनकी पैरवी का शौक़ पैदा होता है. क़स्दन बुज़ुर्गों के मशहद और मक़बरे पर जाना दुरूस्त है और यह जो रसूल ﷺ ने फ़रमाया है :

لا تشدوا الرحال الا الى ثلاثة مساجد.

यानी मक्कए मुकर्रमह और मदीनए मुनव्वरह और बैतुल मक़दिस

के सिवा किसी मस्जिद के वासते सवारी पर सफ़र न करो. यह ज़ाहिर दलील है कि इन तीन मस्जिदों के अलावा और मस्जिदों से बरकत हासिल करना बराबर मगर जितने उलमा कि ज़िन्दा हों जिसतरह वो इस हुकम में दाख़िल नहीं हैं उसी तरह जो उलमा इन्तिक़ाल कर गए हैं वो भी इस हुकम में दाख़िल नहीं हैं. यानी ज़िन्दा आलिमों की मुलाज़िमत और आलिमों की क़ब्रों की ज़ियारत इस हुकम से ममनूअ नहीं है तो इस क़स्द से अम्बिया औलिया की क़ब्रों की ज़ियारत को जाना और इस नियत से सफ़र करना दुरूस्त है. (कीमियाए सआदत , पान ६१)

मदीनए मुनव्वरह का क़स्द करके जाना :

फ़रमाते हैं इमामे अजल्ल हज़रत ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह कि ताजदारे मदनी ﷺ ने फ़रमाया : जो मेरी ज़ियारत के लिये आया सिवाय मेरी ज़ियारत के और किसी हाजत के लिये न आया तो मुझ पर हक़ है कि क़यामत के दिन उसका शफ़ीअ बनूं.

बुजुर्गाने दीन के हाथों को बोसा देना :

फ़रमाते हैं हज़रत हुज्जतुल इस्लाम हज़रत इमामे ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह कि बुजुर्गाने दीन के हाथों को बोसा देना सुन्नत है. हज़रत उबैदह बिन अल-जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हु ने अमीरुल मूमिनीन हज़रत उमरे फ़ारूक़ के हाथ को बोसा दिया. (कीमियाए सआदत, सफ़हा १०७)

औलिया-अल्लाह का वुजूद : फ़रमाते हैं हज़रत इमामे ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह कि अगर कोई हमनशीं तुमको ऐसा मिल जाए जिसकी सूरत व सीरत तुमको अल्लाह तआला की याद दिलाए तो उसका साथ दो और उसको ग़नीमत समझो और उससे अलाहिदा न हो कि आक़िल के हक़ में उसका कसीराँ सोने की चिड़िया है. (इहयाए उलूमिद्दीन, सफ़हा १८८, मत्बूअह लाहौर)

बिदअत की सही तअरीफ़ : हज़रत इमामे ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़रमाते हैं कि ज़मानए नबवी ﷺ के बाद जो काम ईजाद हुआ है बिदअत है तो इसका जवाब यह है कि हर एक नौ ईजाद बिदअत की मुमानिअत नहीं जब्कि उसका मुकाबिल कोई सुन्नत हो यानी जिससे सुन्नत मिटने का ख़तरा हो. (इहयाए उलूमिद्दीन, सफ़हा ४७३) मज़ीद तफ़सील

फ़क़ीर की किताब अक़ाइदुल मुजद्दिदीन में देखिये.

एहले सुन्नतो जमाअत ही निजात पाएगा : हज़रत इमामे ग़ज़ाली रहमतुल्लाहे तआला अलैह अपनी किताब कीमियाए सआदत में इरशाद फ़रमाते हैं - हर शख़्स को चाहिये कि ऐतिक़ादे एहले सुन्नत को अपने दिल में जमाए कि यही उसकी सआदत का तुख़्म होगा. (कीमियाए सआदत, मत्बूअह लखनऊ सफ़हा ५८)

शफ़ाअते अम्बिया व औलिया : बुज़ुर्ग लोग गुनाहगारों में से जिसकी शफ़ाअत करेंगे अरहमुर राहिमीन उसे बख़्श देगा और जिसकी शफ़ाअत न करेंगे, फ़िरिश्ते उसे दोज़ख़ में ले जाएंगे. (कीमियाए सआदत, सफ़हा ६१)

आक़ाए दो आलम नूरे मुजस्सम ﷺ को इल्मे गैब अताई हासिल है :

आँहज़रत ﷺ ने ग़ैब की बातों की ख़बर दी मसलन हज़रत उस्मान रदियल्लाहो अन्हु को ख़बर दी कि तुमको बलवह पहुंचेगा जिसके बाद जन्नत है और हज़रत अम्मार रदियल्लाहो अन्हु को फ़रमाया कि उनको बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा और हज़रत इमामे हसन रदियल्लाहो अन्हु के बाब में इरशाग फ़रमाया कि अल्लाह तआला अम्म नवालहू उनके सबब मुसलमानों की दो भारी जमाअतों में सुलह करा देगा और एक शख़्स को जिसने अल्लाह की राह में जिहाद किया था आपने फ़रमाया कि यह दोज़ख़ी होगा तो ऐसा ही हुआ यानी उस शख़्स ने खुद अपने आपको हलाक किया.

गुज़िश्ता बाला उमूर न नुजूम से न कहानत से न रमल से न फ़ाल से मालूम हो सकते हैं सिर्फ़ अल्लाह तआला जल्ल जलालहू के आगाह करने और वही से आपको मअलूम हुए थे और सफ़रे हिजरत में सुराक़ह बिन जअशम ने आपका तअक़्क़ुब किया तो उसके घोड़े के पाँव ज़मीन में उतर गए, एक धुँआ उसके पीछे आया यहाँ तक कि उसने फ़रियाद की, आपने उसके लिये दुआ फ़रमाई तो घोड़ा छूट गया और फ़रमाया तेरे हाथों में किसरा बादशाह के कंगन पहनाए जाएंगे. चुनान्चे ऐसा ही हुआ. और आपने एक झूटे के क़त्ल की खबर दी जिसने नबुव्वत का झूटा दावा किया उसके क़त्ल की ख़बर दी वह शब बयान की जिस रात वह मारा गया हालांकि वह सनआ यमन में क़त्ल हुआ था और क़ातिल का नाम भी इरशाद फ़रमाया. (इहयाए उलूमिद्दीन, सफ़हा ६६, मत्बूअह लाहौर)☆☆☆

तिहत्तर में एक
इरशादाते ग़ौसे पाक की रौशनी में

अस्हाब का ज़िक्र - रसूलुल्लाह सल्लाहो अलैहे वसल्लम का इरशाद है कि जब मेरे अस्हाब का ज़िक्र हो तो तुम ज़बान रोको (यानी किसी सहाबी को बुरा न कहो) दूसरी हदीस शरीफ़ मे है, मेरे सहाबा के बाहमी नज़ाअत से अपने को बचाए रखो (किसी को बुरा न कहो) अगर तुम में से कोई शख़्स भी उहद पहाड़ के बराबर सोना राहे खुदा में सर्फ़ कर देगा जब भी सहाबा के एक मुद्द बल्कि आधे मुद्द के बराबर सवाब न पाएगा.

हज़रते अनस रदियल्लाहो अन्हु से मरवी हदीस में आया है हुज़ूर(ﷺ)ने फ़रमाया कि वह शख़्स कितना खुशनसीब है जिसने मुझे देखा और वह शख़्स जिसने मेरे देखने वाले को देखा. रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया मेरे सहाबी को गाली न दो , जो उनको गाली देगा उसपर खुदा की लअनत.

हज़रते अनस रदियल्लाहो अन्हु की रिवायत में आया है कि हुज़ूर(ﷺ) ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझे चुन लिया और मेरे लिये मेरे सहाबा को चुन लिया, उनको मेरे लिये अन्सार और मेरा रिश्तेदार बनाया. आख़िर ज़माने में ऐसा गिरोह पैदा होगा जो सहाबा के मर्तबे को घटाएगा, ख़बरदार तुम उनके साथ खाना न खाना, न निकाह का सिलसिला करना, न उनके साथ नमाज़ पढ़ना, न उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना. ऐसे लोगों पर लअनत करना जाइज है.

हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हु रिवायत करते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया दरख़्त (हुदैबियह) के नीचे जिसने मुझ से बैअत की वह कभी दोज़ख़ में नहीं जाएगा. हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने अस्हाबे बद्र की हालत को देखकर ही फ़रमाया है कि जो चाहो करो मेंने तुमको बख़्श दिया.

हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहों अन्हुमा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं तुम इनमें से जिसकी पैरवी

करोगे सीधा रास्ता पाओगे. हज़रत बुरीदह रदियल्लाहो अन्हु की रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जिस ज़मीन पर मेरा कोई सहाबी फ़ौत होगा उसको उस ज़मीन वालों के लिये क़यामत के दिन शफ़ीअ बनाया जाएगा. हज़रत सुफ़ियान बिन ऐनियह का क़ौल है कि रसूलुल्लाह ﷺ के अस्हाब के मुतअल्लिक़ जो शख़्स एक लफ़्ज़ (बद) भी कहेगा वह गुमराह और बदराह होगा.

एहले सुन्नत व जमाअत की पैरवी : साहिबे अक़लो बीनश मूमिन के लिये बेहतर है कि वह सुन्नत व जमाअत की पैरवी करे, बिदअत से इज्तिनाब करे और दीन में ज़ियादा ग़ुलू न करे, न गहराई में जाए, न तसन्नोअ से काम ले ताकि गुमराही से बचे और उसके क़दम को लग़ज़िश न हो जो हलाकत की बाइस है. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हु का इरशाद है - इत्तिबाअ करो और बिदअत से बचो यह तुम्हें काफ़ी है. हज़रत मआज़ बिन जबल ने फ़रमाया तुम पोशीदा बातों की टोह लगाने से बचो और यह बात मत कहो कि यह बात क्यों है. जब मुजाहिद ररिदयल्लाहो अन्हु को हज़रत मआज़ ररिदयल्लाहो अन्हु के इस क़ौल की इत्तिला मिली तो उन्होंने कहा कि पहले हम बअज़ चीज़ों के अहकाम के मुतअल्लिक़ कहा करते थे यह कया है, मगर अब ऐसा नहीं कहेंगे. लिहाज़ा ईमानदार शख़्स पर लाज़िम है कि सुन्नत का इत्तिबाअ और जमाअत की पैरवी करे. सुन्नत उस तरीक़े को कहते हैं जिसके रसूले ख़ुदा ﷺ ने शुरू फ़रमाया और उसपर गामज़न रहे और जमाअत उसे कहते हैं जिसपर चारों ख़ुलफ़ाए किराम की ख़िलाफ़त के ज़माने में अस्हाबे रसूल ﷺ ने इत्तिफाक़ किया.

नोट : एहले बिदअत से मुराद गुमराह बदअक़ीदा फ़िर्क़े हैं जो ख़ुद बिदअती हैं मगर एहले सुन्नत व जमाअत को बिदअती क़हते हैं.

एहले बिदअत से इज्तिनाब : दानिशमन्द मूमिन पर यह भी लाज़िम है कि एहले बिदअत से तअल्लुक न रखे और न उनकी महब्बत व क़ुर्बत इख़्तियार करे, न उनको सलाम करे. हमारे इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि जिस ने किसी एहले बिदअत को सलाम किया वह गोया उससे महब्बत रखता है (इस लिये कि रसूलुल्लाह ﷺ का इरशाद है कि बाहम सलाम की कसरत करो ताकि महब्बत बढ़े) यह भी

लाज़िम है कि बिदअतियों का हमनशीन न बने न उनके पास जाए और उनको ईदों और खुशी के मवाक़ेअ पर मुबारकबाद न दे न उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़े. जब उनका ज़िक्र आजाए तो उनके लिये दुआए रहमत भी न करे बल्कि उनसे अलग रहे और महज़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के लिये उनसे अदावत रखे और इसपर अज़ीम अज्रो सवाब का यक़ीन रखे. हुज़ूर(ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने एहले बिदअत को महज़ अल्लाह के लिये अपना दुशमन जाना उसके दिल को अल्लाह तआला ईमान से भर देता है और जो शख़्स उनको खुदा का दुशमन जानकर मलामत करे अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको अम्नो अमान में रखेगा. और जो शख़्स ऐसे लोगों को ज़लील करे उसको बहिश्त में सौ दर्जे मिलेंगे और जो बिदअती से कुशादा रूई और ख़न्दा पेशानी से मिला उसने उस दीन की तौहीन की जो अल्लाह तआला ने मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ पर नाज़िल फ़रमाया था.

अबू मुग़ीरह ने हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत की कि आँहज़रत ﷺ ने इरशाद फ़रमाया जब तक बिदअती बिदअत को तर्क न करदे अल्लाह उसके नेक अमल को क़ुबूल करने से इन्कार करता है. हज़रत फ़ुजैल बिन अयाज़ रदियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि एहले बिदअत के साथ दोस्ती रखने वाले के नेक अअमाल ज़ाया कर दिये जाते हैं और अल्लाह तआला उसके दिल से नूरे ईमान निकाल देता है और जो शख़्स एहले बिदअत से दुशमनी रखता है उसे अल्लाह तआला बख़्श देता है चाहे उसके नेक अअमाल थोड़े ही क्यों न हों. जब तुम किसी बिदअती को रास्ते में देखो तो दूसरा रास्ता इख़्तियार करलो. हज़रत फ़ुजैल बिन अयाज़ कहते थे कि मैंने खुद हज़रत सुफ़ियान बिन ऐनिय्यह रदियल्लाहो अन्हु को यह कहते सुना कि जो शख़्स किसी बिदअती के जनाज़े के साथ जाता है तो जब तक वह वापस नहीं लौट आता अल्लाह का अज़ाब उसपर नाज़िल होता रहता है. (माख़ूज अज़ - ग़ुनियतुत तालिबीन)

☆☆☆

मअमूलाते एहले सुन्नत

शारहे बुखारी मुफ़ती मुहम्मद शरीफुल हक़ अमजदी रहमतुल्लाहे अलैह

बुनियादी सवाल : मीलाद, क़याम, बादे नमाज़ सलातो सलाम, नियाज़ फ़ातिहा, सोयम, दहुम, चालीसवाँ, बरसी उर्स वग़ैरह के बारे में तक़रीबन हर जगह से सवाल होता है कि कया रसूलुल्लाह ﷺ या सहाबए किराम या ताबिईन या अइम्मए मुज्तहिदीन ने यह काम किया. अगर नहीं किया तो यह काम बिदअत हुआ और हस्बे फ़रमाने हदीस बिदअत गुमराही और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है.

पहला जवाब : इसका पहला इल्ज़ामी जवाब यह है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने या सहाबा ने या ताबिइन ने या तबए ताबिईन ने या अइम्मए मुज्तहिदीन ने इन चीज़ों से मना किया? अगर मना किया हो तो सुबूत लाओ और अगर मना न किया और सही यही है कि नहीं मना किया तो बक़ौल आप लोगों के यह मना करना भी बिदअत हुआ, जहन्नम में ले जाने वाला हुआ और इस लिये कि सवाले मज़कूर से ज़ाहिर हो गया कि जो काम भी इन हज़रात ने न किया हो वह बिदअत है और मना करना भी यक़ीनन एक काम है और इन हज़रात ने नहीं किया तो यह भी बिदअत हुआ.

दूसरा जवाब : आप लोगों के मदारिस में क़ाइदए बग़दादी से लेकर बुखारी शरीफ़ तक जितनी किताबें पढ़ाई जाती हैं, सिवाए कुरआने मजीद के इन किताबों को हुजूरे अक़दस ﷺ ने पढ़ा या पढ़ाया? सहाबए किराम ने पढ़ा या पढ़ाया? ताबिईन, तबए ताबिईन, अइम्मए मुज्तहिदीन में से किसी ने पढ़ा या पढ़ाया. इसका जवाब भी यक़ीनन यही है कि नहीं. इस लिये कि इनमें सबसे क़दीम किताब बुखारी शरीफ़ है जो तीसरी सदी में लिखी गई है बक़िया किताबें बाद की हैं. जब इन हज़रात में से किसी ने इन किताबों में से किसी एक को नहीं पढ़ा, पढ़ाया तो बक़ौल आप लोगों के इन किताबों को पढ़ना पढ़ाना भी बिदअत और जहन्नम में ले जाने वाला हुआ. जहाँ से आप लोग इन किताबों के पढ़ाने का इस्तहसान या जवाज़ साबित करेंगे वहीं से हम इन तमाम मअमूलाते एहले सुन्नत का भी जवाज़ साबित कर देंगे.

तीसरा जवाब : आप लोग भी अपने हर जल्से का इफ़्तिताह क़ुरआने मजीद की तिलावत और नअत से करते हैं, क्या हुज़ूरे अक़्दस ﷺ या सहाबए किराम या ताबिईन व तब्ए ताबिईन व अइम्मए मुज्तहिदीन भी अपनी तक़रीरों, ख़ुत्बों से पहले क़ुरआने मजीद की तिलावत और नअत शरीफ़ पढ़ते थे? इसका जवाब भी सिवाय नहीं के और कुछ नहीं. फिर अपने ही क़ाइदे से आप लोग बिदअत का इर्तिकाब करके क्या हुए? इसका जवाब आप लोग दें.

चौथा जवाब : एक शख़्स रोज़ाना बिला नाग़ा बिल-इल्तिज़ाम बाद नमाज़े फ़ज्र बैठकर क़ुरआने मजीद की तिलावत करता है, फ़रमाइये यह शख़्स बिदअती जहन्नमी है कि नहीं? बताइये क्या हुज़ूरे अक़्दस ﷺ या सहाबए किराम या ताबिईन व तब्ए ताबिईन व अइम्मए मुज्तहिदीन रोज़ाना बिला नाग़ा बिल-इल्तिज़ाम नमाज़े फ़ज्र के बाद बैठकर क़ुरआने मजीद की तिलावत करते थे? इसका जवाब भी सिवाय इस के और कुछ नहीं हो सकता कि इसका कोई सुबूत नहीं. फिर यह बक़ौल आप लोगों के बिदअत और जहन्नम में ले जाने वाला हुआ. फिर फ़रमाइये क्या फ़तवा है उन मुसलमानों के बारे में जो रोज़ाना बिला नाग़ा नमाज़े फ़ज्र के बाद क़ुरआने मजीद की तिलावत करते हैं.

पाँचवाँ जवाब : एक शख़्स रोज़ाना बअद नमाज़े इशा बैठकर सौ बार दरूद शरीफ़ पढ़ता है. फ़तवा दीजिये उस शख़्स का यह फ़ेअल इबादत व बाइसे सवाब है या नहीं? अगर सवाब है तो फ़रमाइये क्या हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने रोज़ाना बिला नाग़ा नमाज़े इशा के बाद बैठकर दरूद शरीफ़ पढ़ा, या सहाबए किराम ने पढ़ा? या ताबिईन व तब्ए ताबिईन व अइम्मए मुज्तहिदीन ने पढ़ा? अगर जवाब अस्बात में है तो सुबूत दीजिये और नफ़ी में है और यक़ीनन नफ़ी में है तो फिर यह हराम और बिदअत क्यों नहीं? सरे दस्त ये पांच सवालात हैं. ये बज़ाहिर तो सवालात हैं मगर हक़ीक़त में ऐसे क़तई व मुस्कत जवाबात हैं कि कोई कितना ही बड़ा से बड़ा हो इनके जवाबात के बाद एहले सुन्नत के मअमूलात को बिदअत व हराम साबित नहीं कर सकता. जहाँ से जिस तरीक़े से वो इन उमूर को इस्तेहसान व बाइसे सवाब होना साबित करेगा वहीं से उसी तरीक़े से हम अपने मअमूलात का इस्तेहसान व जवाज़ साबित कर देंगे.

तहक़ीक़ी जवाब : अवाम को ज़रूर उलझन होगी, यह मआमला क्या है. इस लिये हक़ के मुतलाशी को मुत्मइन करने के लिये उस बुनियाद की तशरीह करते हैं जिसपर इन तमाम बातों का इस्तेहसान और जवाज़ क़ाइम है.

अहकामे शरअ की दो क़िस्में : अस्ल मआमला यह है कि शरीअत ने हमें जिन जिन चीज़ों के करने का हुकम दिया है उनकी दो क़िस्में हैं - एक वो जिनकी वज़अ व हैअत, अरकान के माबैन तरतीब वग़ैरह मुअय्यन फ़रमा दी हैं जैसे नमाज़. इस लिये इन उमूर की अदायगी सिर्फ़ उन्हीं वज़अ व हैअत व अरकान के साथ लाज़िम व ज़ररूरी है. उसमें कोई भी तब्दीली ज़रूर बिदअत, हराम और गुनाह है. मसलन कोई नमाज़ में एक रूकूअ के बजाय दो रूकूअ और दो सज्दे की जगह एक सज्दा करे या पहले सज्दा करे और रूकूअ बाद में तो नमाज़ न होगी. फिर इनकी भी दो क़िस्में हैं - फ़राइज़ व नवाफ़िल. फ़राइज़ के लिये औक़ात मुक़र्रर हैं, इन औक़ात से पहले अदा करेंगे, अदा न होंगे. इन औक़ात के बाद अदा करेंगे, क़ज़ा होंगे. नवाफ़िल के लिये कोई वक़त मुक़र्रर नहीं है जब तक किसी ख़ास वक़त के बारे में मुमानिअत न हो अदा करना सही और मुजिबे अज्र है. किसी वक़त भी कोई नवाफ़िल पढ़े वह दुररूस्त है और इबादत है अगरचे उस वक़त नफ़ल पढ़ना अस्लाफ़ से मन्क़ूल न हो.

दूसरी क़िस्म वो मामूरात हैं जिनके लिये न कोई वज़अ मुकर्रर है न हैअत न वक़त. जैसे क़ुरआने मजीद की तिलावत, दरूदो सलाम, इल्मे दीन की तअलीमो तअल्लुम. इनका हुकम यह है कि जिस वकत जिस हैअत व वज़अ के साथ किया जाए हुकमे इलाही की तअमील और मूजिबे अज्र होगा जब तक किसी ख़ास वक़त या हैअत से मना न किया गया हो. इसे उसूले फ़िकह में मुत्लक़ कहते हैं और मुत्लक़ का हुकम यह है कि इसके जिस फ़र्द को अदा किया जाए मामूर बिह की अदाइगी होगी.

मसलन अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फरमाया -

وَاتْلُ مَا اُوْحِيَ اِلَيْكَ

यानी तुम्हारी जानिब जो वही की गई है उसकी तिलावत करो. तिलावत की कोई वज़अ कोई वक़त कोई हैअत कोई तरीक़ा मुकर्रर न फ़रमाया यानी यह नहीं हुकम दिया कि बैठकर तिलावत करो या खड़े होकर,

बलन्द आवाज़ से करो या आहिस्ता, दिन में करो या रात में, नमाज़ के पहले करो या बाद में. तो बन्दे को इख़्तियार है जिस वक़्त जिस तरीक़े से भी तिलावत करेगा वह इसी हुकमे इलाही की तअमील होगी और मूजिबे सवाब. हाँ जिन मख़सूस औक़ात व हालात में मुमानिअत है मसलन हालते जनाबत में वो मुस्तस्ना रहेंगे. अब अगर कोई बुज़ुर्ग किसी वक़्त या किसी तरीक़े से तिलावत को हराम व गुनाह कहेंगे तो उनको साबित करना होगा कि इस तरीक़े या इस वक़्त तिलावत मना है. इस लिये अगर कोई फ़ज्र के बाद मसलन बैठकर तिलावत करता है तो वह ज़रूर हुकमे ख़ुदावन्दी की तअमील कर रहा है और सवाब का मुस्तहिक़ है इसी तरह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने मुत्लक़न इरशाद फ़रमाया है :

فَلَوْ لَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ •

यानी - तो हर गिरोह में से एक जमाअत क्यों न निकली कि दीन में समझ हासिल करती.

दीन में तफ़क़्क़ुह हासिल करने के लिये न कोई ख़ास तरीक़ा मुअय्यन फ़रमाया, न वक़्त, न जगह, न किताब. इस लिये दीन सीखने वाले सिखाने वाले जो तरीक़े भी अपनी सवाबे दीद से मुकर्रर कर लें वो इसी हुकमे इलाही की तअमील होगी जो किताब जो निसाब जो वक़्त मुअय्यन कर लें, सब इसी में दाख़िल और इसी हुकमे ख़ुदावन्दी की तअमील होगी. यूंही हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

نضر الله امرأ سمع منا حديثا فحفظه حتى يبلغه .

यानी अल्लाह उसको तरो ताज़ा रखे जिसने मुझ से कोई हदीस सुनी और उसे याद रखा यहाँ तक कि उसे दूसरे को पहुंचाया. (अबू दाऊद, जिल्द २, सफ़हा 159, किताबुल इल्म, बाब फ़ज़्ले नश्रुल इल्म)

यहाँ भी हदीस याद रखने और दूसरे तक पहुंचाने का कोई तरीक़ा मख़सूस नहीं किया गया इस लिये जिस तरीक़े से भी अहादीस याद रखी जाएं, सुनाई जाएं, पढ़ाई जाएं, सब इसी इरशादे नबवी की तअमील होगी. चाहे ज़बानी सुनी और सुनाई जाएं चाहे किताबें लिखी जाएं, पढ़ाई जाएं चाहे बुख़ारी हो या मुस्नदे इमामे अअज़म, मुअत्ता इमामे मुहम्मद हो या मुअत्ता इमामे मालिक कोई किताब हो. इसी की फ़रअ सिहाहे सित्तह और

मिशकात वग़ैरह का दर्स व तदरीस है. किसी हदीस की किताब के बारे में यह सवाल कि कया हुजूरे अक़दस ﷺ या सहाबा या ताबिईन या तबए ताबिईन या अइम्मए मुज्तहिदीन ने पढ़ा या पढ़ाया, जिहालत है इस लिये कि जब हमें अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़िक़्ह हासिल करने और हुजूरे अक़दस ﷺ ने हदीस हासिल करने का हुकम मुत्लक़न दिया है तो हम हदीस की कोई भी किताब लिखें, पढ़ें, पढ़ाएं वह सब इरशादे रब्बानी और फ़रमाने नबवी की तअमील होगी. ये मुत्तफ़िक़ अलैह मसाइल हैं जिनमें किसी कलिमा गो फ़िर्के का इख़्तिलाफ़ नहीं.

इसी तरह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हमें मुत्लक़न हुकम दिया है :

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا .

यानी - ऐ ईमान वालो, नबी पर दरूद भेजो और ख़ूब ख़ूब सलाम पढ़ो.

यहाँ भी कोई वक़्त कोई तरीक़ा मुअय्यन नहीं फ़रमाया मुत्लक़ रखा इस लिये हम जिस वक़्त भी जिस तरह भी दरूद व सलाम पढ़ें वह इसी फ़रमाने इलाही की पैरवी होगी. इस लिये कोई शख़्स बअदे नमाज़े इशा बैठकर सौ बार दरूद शरीफ़ पढ़ता है तो वह ज़रूर सवाब का मुस्तहिक़ है और वह इसी फ़रमाने इलाही की तअमील कर रहा है. अब अगर कोई यह सवाल करे कि कया ख़ास नमाज़े इशा के बाद बैठकर दरूद हुजूरे अक़दस ﷺ ने पढ़ा, या सहाबा ने या ताबिईन ने या तबए ताबिईन या अइम्मए मुज्तहिदीन ने पढ़ा तो यह उसकी जिहालत होगी.

इसी तरह अगर कोई मुसलमान नमाज़े फ़ज्र या नमाज़े इशा या पंजगाना या जुमुए के बाद खड़े होकर बलन्द आवाज़ या पस्त आवाज़ से दरूदो सलाम पढ़ता है या मीलाद पढ़ता है तो यह सब इसी हुकमे इलाही की तअमील है और बिला शुबह मुजिबे सवाब है बिल्कुल उसी तरह जैसे नमाज़े इशा के बाद बैठकर पढ़ना था जैसे वहाँ यह सवाल कि कया हुजूरे अक़दस ﷺ या सहाबा या ताबिईन या अइम्मए मुज्तहिदीन ने इशा के बाद बैठकर दरूदो सलाम पढ़ा है जिहालत है, उसी तरह नमाज़ों के बाद खड़े होकर या मीलाद में खड़े होकर दरूदो सलाम पढ़ने के बारे में मज़कूरा बाला सवाल जिहालत और लग़्व है.

मुतनाज़आ उमूर का अस्बात : जब यह बात आपके ज़हन नशीन हो चुकी तो अब आइये बित-तरतीब नियाज़, फ़ातिहा के मुरव्विजह तरीक़ों का सुबूत लीजिये. पहले सुन्नत के साथ मोअतज़िलह और ख़वारिज के अलावा तमाम कलिमा गो फ़िर्के चाहे वो देवबन्दी हों या ग़ैर मुक़ल्लिद चाहे मौदूदी, सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ईसाले सवाब जाइज़, न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुस्तहसन और मामूर बिही है. नीज़ यह कि इसका भी शरीअत ने कोई ख़ास तरीक़ा मुकर्रर नहीं फ़रमाया है और न कोई ख़ास वक़्त मुअय्यन किया है, इसे भी मुत्लक़ रखा है. तो जिस तरह उन तमाम अहकाम में जो मुत्लक़ हैं हमें यह इख़्तियार है कि हम जिस तरीक़े से करें जिस वक़्त करें मामूर बिही की अदायगी होगी और जो सवाब अस्ल मामूर बिही पर मुरत्तब है उस ख़ास तरीक़े पर भी ज़रूर मुरत्तब है जिसकी एक नहीं तीन नज़ीरें गुज़र चुकीं. तिलावते क़ुरआने करीम, इल्मे दीन की तअलीम, दरूदो सलाम. शरीअत ने इनका भी मुत्लक़ हुक्म दिया था और आज हम भी और हमारे हरीफ़ भी इन सबको अपने अपने तौर पर किसी न किसी ख़ास तरीक़े से अदा करते हैं और इसे बाइसे अज्रो सवाब जानते हैं. इसी तरह ईसाले सवाब भी जब मुत्लक़ है और इसका भी कोई तरीक़ए ख़ास मुकर्रर नहीं तो हम जिस तरीक़े से भी करें जिस वक़्त भी करें वो मुत्लक़ ईसाले सवाब के अफ़राद होंगे और न सिर्फ़ जाइज़ और मुस्तहसन बल्कि मूजिबे अज्रो सवाब होंगे जब तक कि किसी ख़ास तरीक़े से या किसी ख़ास वक़्त में शरीअत ने मना न किया हो. मसलन कहीं यह रिवाज है कि मैय्यत की रूह पर्वाज़ करने के बाद जब मुतअल्लिक़ीन के होशो हवास दुरुस्त होते हैं तो ईसाले सवाब के लिये क़ुरआने मजीद की तिलावत शुरू कर देते हैं इससे कहीं शरीअत में मुमानिअत नहीं इस लिये यह मुत्लक़ ईसाले सवाब का फ़र्द होने की वजह से मुस्तहसन व मुजिबे अज्रो सवाब है. कहीं यह रिवाज है कि दफ़न के दूसरे ही दिन कहीं तीसरे दिन मैय्यत के अइज़्ज़ा व अक़रबा इकठठे होकर क़ुरआने मजीद की तिलावत करते हैं कलिमा शरीफ़ पढ़ते हैं इससे भी शरीअत ने मना नहीं फ़रमाया है इस लिये यह भी मुत्लक़ ईसाले सवाब के अफ़राद में होने की वजह से मुस्तहसन व मूजिबे अज्रो सवाब है. इसी तरह दसवें दिन, बीसवें दिन, चालीसवें दिन या साल पूरा होने पर इज्तिमाई या इन्फ़िरादी तौर पर लोग फ़ातिहा कर लेते हैं, ये सब

उसी मुत्लक़ ईसाले सवाब के अफ़राद हैं और ईसाले सवाब के दीगर तरीक़ों की तरह मुस्तहसन और मूजिबे अज्रो सवाब हैं.

एक और सवाल : और अगर कोई साहिब इन मामूरात के लिये भी जो मुत्लक़ हैं यह ज़रूरी क़रार दें कि उनका ख़ास तरीक़ा उनकी ख़ास वज़अ उनका ख़ास वक़्त भी शारेअ से मन्क़ूल होना ज़रूरी है और उनकी अदायगी सिर्फ़ उसी ख़ास वज़अ, तरीक़े और वक़्त में जाइज होगी बक़िया तरीक़ों और औक़ात में हराम व बिदअत है इस लिये चूंकि तीसरे दिन, दसवें दिन, बीसवें दिन, चालीसवें दिन, साल पूरा होने पर फ़ातिहा करना अस्लाफ़ से मन्क़ूल नहीं इस लिये यह भी बिदअत और हराम है तो ऐसे मुज्तहिद हज़रात से हमारा सवाल यह है कि अब आप बताइये कि हम ईसाले सवाब किस तरह करें, किस वक़्त करें. आप जो भी तरीक़ा और वक़्त बताएं आपके ईजाद कर्दा उसूल की बिना पर ज़रूरी होगा कि इसका सुबूत दें कि अस्लाफ़ ने उस तरीक़े से उस वक़्त ईसाले सवाब किया है अगर न दे सकें तो फिर ख़ुद ही बताएं कि अपने बताए हुए तरीक़े और वक़्त के लिये यह अपना ही क़ाइदा क्यों टूट गया. मसलन आपने कहा कि दफ़्न के बाद फ़ौरन करें तो अस्लाफ़ से सुबूत लाइये अगर आप कहें कुरआने मजीद की तिलावत के बजाय दस अदद तक़्वियतुल ईमान ख़रीद कर मस्जिदों में रखदो तो अस्लाफ़ से इसका सुबूत लाओ और हम कहे देते हैं कि क़यामत तक इसका सुबूत न ला सकोगे इसका मतलब यह हुआ कि जो अहकाम मुत्लक़ हैं उनपर अमल करना ही आपके नज़्दीक हराम और बिदअत है.

मीलाद : इसी तरह मीलाद को ले लीजिये. अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हमें हुकम दिया :

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّکَ فَحَدِّثْ .

यानी - अपने रब की नेअमत को ख़ूब बयान करो. और फ़रमाया :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِکَ فَلْيَفْرَحُوْا . (پ ١١ آيت ٨٥)

यानी - अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर ख़ुशी मनाओ.

हर मुसलमान का यह ईमान है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की सबसे बड़ी नेअमत, सबसे बड़ी रहमत, सबसे बड़ा फ़ज़्ल हुज़ूरे अक़दस ﷺ हैं

इस लिये इन दोनों आयतों से साबित है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करना और इसपर ख़ुशी ज़्यादा से ज़्यादा मनाना इस हुकमे ख़ुदावन्दी की तअमील है और मेहफ़िले पाक भी इसी का फ़र्द. इस लिये यह भी इसी हुकमे ख़ुदावन्दी की तअमील होगी.

क़याम : हमें अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने मुत्लक़न हुकम दिया है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا .

यानी ऐ ईमान वालो नबी पर दररूद भेजो और ख़ूब ख़ूब सलाम पढ़ो.

किसी वक़्त किसी वज़अ किसी तरीक़े की तख़सीस नहीं फ़रमाई और बिला शुबह मीलाद की मेहफ़िल के इख़्तिताम पर खड़े होकर इज्तिमाई तौर पर दरूदो सलाम पढ़ते हैं वह भी इसी हुकमे मुत्लक़ का एक फ़र्द है इस लिये यह भी मुजिबे अज्रो सवाब है.

नमाज़ों के बाद दररूदो सलाम : इसी तरह नमाज़े पंजगाना या नमाज़े जुमुआ के बाद खड़े होकर जो दरूदो सलाम पढ़ते हैं वह भी इसी हुकमे मुत्लक़ का फ़र्द है वह भी इसी में दाख़िल है और मूजिबे अज्रो सवाब.

उर्स : हुज़ूरें अक़दस ﷺ ने हमें हुकम दिया :

كنت نهيتكم عن زيارة القبور فزوروها فانها تزهد فى الدنيا و تذكر الاخرة . (ابن ماجہ جنائز، باب ماجاء فی زیارۃ القبور، ص:۳۱۱)

यानी - मैंने तुम लोगों को क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया था, अब क़ब्रों की ज़ियारत किया करो इस लिये कि यह दुनिया से बे-रग़बत बनाती है और आख़िरत की जानिब राग़िब करती है.

यह भी मुत्लक़ है इस लिये अगर हम ने साल में कोई दिन किसी बुज़ुर्ग के मज़ारे पाक की ज़ियारत के लिये मुकर्रर कर लिया तो यह भी उसी मुत्लक़ का फ़र्द और मुस्तहसन और बाइसे अज्र है. उर्स इसी का नाम है कि किसी बुज़ुर्ग के मज़ारे पाक की ज़ियारत के लिये कोई तारीख़ मुकर्रर कर ली गई हो. उस तारीख़ पर मज़ारे अक़दस पर हाजिर होते हैं और ईसाले सवाब करते हैं और उनके तवस्सुल से दुआ करते हैं. इमाम अबूबक्र बिन शैबह ने यह हदीस रिवायत की :

ان النبي ﷺ كان يأتي قبور الشهداء بأحد علىٰ راس كل حول .

(رد المحتار، جلد ۱، ص: ۶۰۲)

यानी नबी ﷺ हर साल के शुरू में शुहदाए उहद के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते.

इस सिलसिले में अवाम को वरग़लाने के लिये मुख़ालिफ़ीन आम तौर पर यह कहा करते हैं कि चूंकि ये मअमूलात क़रूने ऊला में नहीं थे इस लिये ये नाजाइज़ो हराम व बिदअत हैं. इसका एक जवाब तो ऊपर गुज़र चुका कि बहुत से काम आप लोग भी करते हो मगर वो क़रूने ऊला में न थे. मसलन मदारिस की तअलीम का पूरा निज़ाम और निसाब, इनमें से कोई भी क़रूने ऊला में न था. न यह निज़ाम था, न औक़ात और अय्याम की यह तअय्युन थी, न इम्तिहान होता था, न पास फ़ेल था, न ये किताबें थीं. क़ाइदए बग़दादी से लेकर बुखारी शरीफ़ तक सिवाए क़ुरआने मजीद के किसी किताब का वुजूद न था. ये कान्फ्रेन्स ये इजलास और इजलास के औक़ात की तअय्युन और इसकी पाबन्दी कुछ भी न थी. बल्कि जिस तरह बुखारी शरीफ़ वग़ैरह लिखी गई हैं उस तरह क़रूने ऊला में किताबें भी नहीं लिखी गई थीं. बाब, फ़स्ल और उनके ज़िम्न में अपनी राएं, मुख़ालिफ़ीन का रद वग़ैरह. इस सिलसिले में जो जवाब आपका होगा वही जवाब हमारा होगा.

इस ख़ुसूस में जनाब गन्गोही साहिब ने यह मन्तक़ियाना व फ़ल्सफियाना नुकता-आफ़रीनी की है कि अहदासे फ़िद-दीन हराम और बिदअत है और अहदासे लिद-दीन जाइज़ो मुस्तहसन. यह हदीसे सही का रद है. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

من سن فی الاسلام سنة حسنة فله اجرها واجر من عمل بها من بعده من غیر ان ینقص من اجورهم شیء ومن سن فی الاسلام سنة سیئة کان علیه وزرها وزر من عمل بها من بعده من غیر ان ینقص من اوزارهم شیء.

(مسند امام احمد، جلد خامس، ص: ۳۵۷، مسلم زکوۃ، ص: ۳۲۷، العلم، ص: ۳۴۱، نسائی، زکوۃ، ص: ۳۵۶، مشکوۃ، ص: ۳۳)

यानी - जो शख़्स इस्लाम में अच्छा तरीक़ा ईजाद करेगा उसे उसका सवाब मिलेगा और जितने लोग उसके बाद उसपर अमल करेंगे सबके बराबर

उसे सवाब मिलेगा बग़ैर इसके कि उनके सवाब में कोई कमी की जाए और इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा ईजाद करेगा उसपर उसका गुनाह होगा और जो लोग उसके बाद उसपर अमल करेंगे सबके बराबर उसपर गुनाह होगा बग़ैर इसके कि उनके गुनाह में कोई कमी की जाए.

इस हदीस के मन्दर्जा ज़ैल फ़वाइद हासिल हुए :

नाज़िरीन ग़ौर कीजिये - अहदास फ़िल-इस्लाम का लफ़ज़ है लिल-इस्लाम का नहीं. इस लिये इस हदीस से साबित हुआ कि वह अहदास फ़िद दीन बिदअत ज़िलालत व हराम है जो बुरा हो. रह गया वह अहदास फ़िद दीन जो हसनह हो अच्छा हो वह इस हदीस की रू से मूजिबे सवाब है. इस लिये गन्गोही साहिब का यह कहना कि अहदास फ़िद दीन हराम व बिदअत है इस हदीस का रद है.

बिदअते हसनह और सैय्यिअह : इसी तरह इस हदीस से साबित हो गया कि बिदअत की दो क़िस्में हैं - हसनह और सैय्यिअह. बिदअते हसनह के ईजाद करने वालों को भी सवाब मिलता है और अमल करने वालों को भी और क़यामत तक अमल करने वालों के बराबर ईजाद करने वालों को. इसके बिल मुक़ाबिल बिदअते सैय्यिअह ईजाद करने वालों को ईजाद पर भी गुनाह होता है और अमल पर भी और सब अमल करने वालों के बराबर ईजाद करने वालों को. हसनह और सैय्यिअह की तक़सीम से इन्कार करना इस हदीस का रद है.

क़रूने ऊला में किसी चीज़ का न होना उसके हराम होने की दलील नहीं है. इसी तरह इस हदीस से साबित हो गया कि महज़ इस बिना पर कि कोई अमल क़रूने ऊला में राइज न था, बाद में ईजाद हुआ तो उसे हराम कहना इस हदीस का रद है. बल्कि इस हदीस की रू से यह देखना होगा कि वह अमल अच्छा है या बुरा, अगर अच्छा है तो मूजिबे सवाब है, अगर बुरा है तो मूजिबे गुनाह.

हसनह और सैय्यिअह का मिअयार : अब यह तहक़ीक़ करना है कि हसनह और सैय्यिअह का मिअयार क्या है. उलमा ने इसकी तस्रीह फ़रमाई है कि बिदअते मज़्मूमह वह है जो क़ुरआन व हदीस, असर और इज्माअ के ख़िलाफ़ हो यानी क़ुरआने मजीद में, अहादीस में, या सहाबा से या इज्माअ से एक हुकम साबित है कोई उसके ख़िलाफ़ कुछ करे या कहे वह

बिदअते मज़्मूमह ज़िलालत व हराम है.

बिदअते हसनह वह अमले ख़ैर है जो क़ुरआन, हदीस, असर और इज्माअ के मुख़ालिफ़ न हो. मिर्क़ात शरहे मिशकात (जिल्द ४, सफ़हा ३६०) में है :

قال الشافعی رحمه الله ما احدث ما یخالف الکتاب والسنة او الاثر والاجماع فهو ضلالة. وما احدث من الخیر مما لا یخالف شیئاً من ذلک فلیس بمذموم.

यानी इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया क़ुरआन, सुन्नत, असर और इज्माअ के ख़िलाफ़ जो चीज़ ईजाद की जाए वह गुमराही है और ऐसी चीज़ ईजाद करना जो उनमें से किसी के मुख़ालिफ़ न हो वह मज़्मूम नहीं. इस लिये जो भी क़याम, मीलाद, नमाज़ के बाद सलातो सलाम, नियाज़, फ़ातिहा, उर्स वग़ैरह को नाजाइज़ हराम बिदअत कहे, मुसलमानों पर लाज़िम है कि उससे पूछें कि यह क़ुरआन की कौन सी आयत किस हदीस किस असर किस इज्माअ के ख़िलाफ़ है और हम दअवे से कहते हैं कि क़यामत तक कोई एक आयत, या हदीस या असर और इज्माअ पेश नहीं कर सकता जिस के ये उमूर मुख़ालिफ़ हों इस लिये इन्हें हराम कहना हदीसे मज़्कूर का रद करना है.

एक सवाल और जवाब : आम तौर पर बेपढ़े लिखे लोगों को यह कहकर बहकाया जाता है कि अगर ये चीज़ें अच्छी होतीं, इनमें सवाब होता तो हुज़ूरे अक़दस ﷺ और सहाबा ताबिईन अइम्मए मुज्तहिदीन ने क्यों नहीं किया. अब हम पलट कर फिर वहीं सवाल करेंगे कि बिऐनिही यही सवाल मदरसों के निज़ाम, निसाब, किताबों पर होता है आप जो जवाब देंगे वही जवाब हमारा होगा. मेहरबानों से कलाम इतने ही पर पूरा हो गया मगर हम नाज़िरीन के इत्मीनान के लिये इसकी भी तौज़ीह किये देते हैं.

बात अस्ल यह है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ अपनी उम्मत पर बहुत ही रहीम व रऊफ़ थे. हुज़ूर(ﷺ) की यह ख़्वाहिश हमेशा रहती थी और रही कि मेरी उम्मत ज़ियादा से ज़ियादा ऐसे काम करे जो सवाब बलन्दिये दरजात के मूजिब हों. चूंकि किसी अच्छे तरीक़े का ईजाद करने वाला लाखों लाख सवाब का मुस्तहिक़ होता है, ईजाद का सवाब अलग, उसपर अमल का सवाब अलग और ईजाद के बाद क़यामत तक अमल करने वालों के बराबर अलग इस लिये अअमाले हसनह की ईजाद का दरवाज़ा खुला रखा कि मेरे

बाद मेरी उम्मत इनको ईजाद करके बेशुमार सवाबों की मुस्तहिक़ हो जाए और अगर ईजाद का दरवाज़ा बन्द फ़रमा देते तो उम्मत उन अनगिनत सवाबों से मेहरूम रहती इसी लिये हर क़र्न में नए नए अअमाले हसनह हमेशा से ईजाद होते आए. मसलन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हु ने कुरआने मजीद को एक मुस्हफ़ में जमा फ़रमाया. हज़रत फ़ारुक़े अअज़म रदियल्लाहो अन्हु ने नमाज़े तरावीह बाजमाअत का हुकम दिया, हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हु ने जुमुए की पहली अज़ान का इजाफ़ा फ़रमाया. ताबिईन ने अहादीस को किताबों में जमा फ़रमाया. अइम्मए मुज्तहिदीन ने फ़िक़्ह पर मुस्तक़िल किताबें लिखीं . मुहद्दिसीन ने अक़ाइद व फ़िक्ह के मसाइल के अबवाब क़ाइम करके उनके ज़िम्न में अहादीस जमा कीं. सूफ़ियाए किराम ने इस्लाहे बातिन व तज़्कियए नफ़स के लिये नए तरीक़े ईजाद किये, वग़ैर ज़ालिक. इसी की कड़ी मीलाद, क़याम, बादे नमाज़ दरूदो सलाम, नियाज़ फ़ातिहा वग़ैरह भी हैं.

तअय्युने औक़ात : इन मअमूलात पर यह भी ऐतिराज़ है कि चूंकि इनको तारीख़े मुअय्यन पर करते हैं और कोई भी मन्दूब काम जिसके लिये शरीअत ने वक़्त मुअय्यन न किया हो तअय्युने वक़्त के साथ करना ममनूअ है. जो भी ज़ी-अक़्ल दयानत दार ऊपर ज़िक्र की हुई बातों पर ग़ौर करेगा वह इस ऐतिराज़ पर हैरत करेगा. आप लोग मदारिस के खुलने बन्द होने के लिये तारीख़ें मुकर्रर किये हुए हैं, ये क्या हैं ?

आप लोग तो इतने ही से चकरा गए होंगे. आइये हम से सुनिये. इसकी अस्ल यह हदीस है जिसे इमाम बुखारी ने अबू वाइल रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत किया है. वह कहते हैं :

كان عبد الله يذكر الناس كل خميس-

यानी - हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हु लोगों के सामने हर जुमेरात को वअज़ कहते थे. इसी में हज़रत अबू सईद खुदरी रदियल्लाहो अन्हु से है कि औरतों ने ख़िदमते अक़दस में अर्ज़ किया - आप से अख़ज़ में मर्द हमपर ग़ालिब हो गए. हुज़ूर, हमारे लिये कोई दिन मुअय्यन फ़रमा दें.

فوعدهن يوما لقيهن فيه فوعظهن وامرهن-(صحيح بخارى، باب هل يجعل للنساء يوما عليحدة فى العلم-ص٢٠)

यानी उन से एक दिन वअदा फ़रमा लिया. उस दिन औरतों से

मुलाक़ात फ़रमाई, उन्हें नसीहत की और उन्हें हुकम दिया.

मुस्लिम वग़ैरह में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है :

رأيت رسول الله ﷺ ياتيه كل سبت ﷺ - (مسلم، باب فضل مسجد قبا، ص ٤٨٣)

यानी रसूलुल्लाह ﷺ हर सनीचर को क़ुबा आते थे.

इन अहादीस से साबित होगया कि किसी फ़ेअले मुस्तहब व मन्दूब के लिये दिन तारीख़ ﷺ मुकर्रर करना और उस मुकर्रर तारीख़ पर उसे करना हुज़ूरे अक़दस ﷺ की सुन्नत और सहाबए किराम का तरीक़ा है. दिन तारीख़ वक़्त की तअय्युन की वजह से किसी चीज़ को हराम कहना इन अहादीस का रद है.

पाबन्दी : कभी आजिज़ आकर कहते हैं कि किसी मुस्तहब ﷺ मन्दूब फ़ेअल पर पाबन्दी हराम है. यह भी हदीस का रद है. हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

ان احب الاعمال مادام وان قل - (بخارى، كتاب اللباس، باب، الجلوس على الحصير، ص:١٧٨)

यानी सबसे ज़ियादा पसन्दीदा अमल वह है जिसपर आमिल पाबन्दी करे अगरचे वह थोड़ा ही हो.

इस हदीस से साबित हुआ कि जो अअमाल पाबन्दी के साथ किये जाएं वो बनिस्बत उनके ज़ियादा पसन्दीदा हैं जिन्हें कुछ दिन किया जाए फिर छोड़ दिया जाए. इस लिये पाबन्दी की वजह से किसी चीज़ को हराम कहना शरीअत पर इफ़्तिरा है. हाँ अगर शरीअत ने किसी काम के लिये कोई वक़्त मुकर्रर नहीं फ़रमाया है और कोई यह ऐतिक़ाद करे कि यह फ़लाँ वक़्त में सही होगा, दूसरे वक़्त में नहीं, या तअय्युन को वाजिब जाने, तो ज़रूर यह ऐतिक़ादे फ़ासिद है. मगर बिहम्दिही तबारक व तआला एहले सुन्नत के अवाम भी इन तअय्युनात को वाजिब फ़र्ज़ नहीं जानते. सब यह जानते हैं कि किसी भी वक़्त किया जाए, दुरूस्त है अलबत्ता बअज़ मसालेह और सहूलतों के पेशे नज़र ये औक़ात मुकर्रर करते हैं उनमें शरअन कोई हरज नहीं. जैसा कि ऊपर अहादीस से गुज़रा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहो अन्हु ने जुमेरात का दिन वअज़ के लिये मुकर्रर फ़रमा लिया था और हुज़ूरे अक़दस ﷺ शम्बे को क़ुबा तशरीफ़ ले जाते. हर साल की इब्तिदा में शुहदाए उहद के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते. ☆☆☆

फ़िर्क़ए नाजियह

लेखक : *हाफ़िजे मिल्लत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे मुरादाबादी क़ुद्दस सिर्रहू*

फ़रमाने ख़ुदावन्दी व इरशादे नबवी यक़ीनन हिदायत व सिराते मुस्तक़ीम है इसपर जो शख़्स ईमान लाकर साबित क़दम रहेगा वह यक़ीनन मूमिन है. इस लिये कि निजाते अबदी व सआदते सरमदी इसी पर मौक़ूफ़ है. अगरचे मुद्दइय्याने इस्लाम के तमाम फ़िर्के क़ुरआनो हदीस पर पूरे तौर पर ईमान रखने वाला सवादे अअज़म सिर्फ़ एहले सुन्नत व जमाअत है इस लिये सिर्फ़ इसी को कामिल निजात है बाक़ी सब फ़िर्के नारी हैं. इसको दलीले क़तई यक़ीनी से जानने के लिये मुकद्दिमाते ज़ैल का ज़हन नशीन करना ज़रूरी है.

(१) क़ुरआने मजीद व हदीसे शरीफ़ बिला इस्तस्ना तमाम जिन्नो इन्स के लिये हादी यानी रहनुमा हैं. हर शख़्स के लिये मशअले हिदायत हैं. जो शख़्स अपने इरादे से ईमान लाकर इनकी रौशनी में चलेगा, निजात पाएगा. यह नहीं कि क़ुरआन व हदीस के ज़िम्मे बिल-जब्र मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंचाना ज़रूरी है.

(२) ईमान सिर्फ़ ज़बान से इकरार करना नहीं बल्कि अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ के तमाम इरशादात की यानी जमीअ ज़रूरियाते दीन की दिल से तस्दीक़ करना और तस्लीम करना शरीअत में ईमान है. ज़बान से इकरार इजराए अहकाम के लिये शर्त है, कमा फ़ी शरहे अक़ाइद वग़ैरह.

(३) क़ुरआन व हदीस पर ईमान लाने का मतलब यह है कि पूरे क़ुरआन व हदीस को माने. अगर किसी एक आयत या हदीसे मुतवातिर का इन्कार करे तो वह क़ुरआन व हदीस का मानने वाला नहीं.

(४) आयाते क़ुरआनी व अहादीसे नबविय्यह का सही मतलब वही है जो हुज़ूर ﷺ और आपके सहाबए किराम ने बयान फ़रमाया इसी मतलब पर ईमान लाना ज़रूरी है इसके ख़िलाफ़ कोई दूसरे मअना अपनी राय से गढ़ना गुमराही है.

(५) हिदायत पाने की इस्तेअदाद जिन्न व इन्स के हर हर फ़र्द में मौजूद है क्योंकि हर शख़्स को ख़ुदावन्दे तआला ने इसपर क़ुदरत दी है कि वह अपने क़स्द व इरादे से ईमान लाए. पस जिसने अपने क़स्द व इरादे को काम में लाकर सरे नियाज़ झुका दिया वह हिदायत पा गया और जिसने सरकशी व तमर्रूद की, गुमराह हुआ. इसमें क़ुरआन व हदीस व रहनुमायाने दीने मतीन का कोई क़ुसूर नहीं उसी गुमराही का क़ुसूर है कि ख़ुदा की दी हुई क़ुदरत को काम में न लाया और अपने इरादे से गुमराही इख़्तियार की.

(६) हर दअवे के सुबूत के लिये दलील ज़रूरी है. दअवा बिला दलील क़ुबूल नहीं. दलील वह है जो नफ़सुल अम्र में दअवे की मुस्बित हो न यह कि मुद्दई जो कुछ कह दे उसके दअवे के सुबूत में काफ़ी मान लिया जाए.

(७) मुद्दइय्याने इस्लाम के तमाम फ़िर्क़ों में सिर्फ़ एक फ़िर्क़ा नाजी (निजात याफ़्ता) है बाक़ी तमाम नारी (जहन्नमी) हैं ऐसी सूरत में अगर नाजी फ़िर्क़े को मुम्ताज़ न कर दिया जाता तो दीन का नुक़सान बल्कि सख़्त गुमराही थी इस लिये जब सहाबए किराम रदियल्लाहो तआला अन्हुम ने फ़िर्क़ए नाजियह के बारे में दरियाफ़्त किया तो नबीये करीम अलैहिस्सलातो वत्तस्लीम ने फ़रमाया : ما انا عليه واصحابى यानी निजात पाने वाला वह गिरोह है जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर क़ाइम रहे. दूसरी हदीस में फ़रमाया : وهي الجماعة यानी वह नाजी गिरोह बड़ी जमाअत है.

अगरचे इन मुक़द्दिमाते यक़ीनियह मुसल्लमह में ग़ौर करने से साहिबे इल्मो अक़्ल सवाल के तमाम पहलू हल कर सकता है कि फ़िर्क़ए नाजियह सिर्फ़ एहले सुन्नत व जमाअत है बाक़ी तमाम फ़िर्क़े नारी हैं. लेकिन तस्हील के लिये कुछ तफ़सील की जाती है. वहुवल मुईन.

मेहबूबे किब्रिया जल्ल जलालहू ने जब तब्लीग़े इस्लाम की और तमाम मख़्लूक़े ख़ुदा को दीने हक़ की दअवत दी तो उस आवाज़ को सुनकर बहुत से बदक़िस्मतों ने इसकी हिदायत से अपनी आँखें बन्द करके साफ़ इन्कार कर दिया और बहुत से बदनसीबों ने ज़ाहिर में इक़रार भी किया तो दिल से नहीं. पहला गिरोह कुफ्फार दूसरा मुनाफ़िक़ीन कहलाया और उनका ठिकाना जहन्नम है. मुनाफ़िक़ीन इस्लाम के दअवेदार थे, ज़बान से कलिमा पढ़ते, क़स्में खा खा कर हुजूर ﷺ की रिसालत की शहादत देते लेकिन क़ुरआने मजीद ने उनको झूटा बताया और उनका इक़रार करना क़स्में खाना

मुअतबर न माना. जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद हुआ :

اِذَا جَاءَکَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّکَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ اِنَّکَ لَرَسُوْلُهٗ وَاللّٰهُ یَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ لَکٰذِبُوْنَ۔(سورة المنافقون:۱)

यानी - जब मुनाफ़िक तुम्हारे हुजूर हाज़िर होते हैं कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुजूर बेशक यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक ज़रूर झूटे हैं.

लिहाज़ा मअलूम हुआ कि सिर्फ़ ज़बान से कलिमा पढ़ना और अपने ईमान व इस्लाम का इकरार करना ख़्वाह क़स्में खाकर क्यूं न हो वह ईमान के लिये काफ़ी नहीं जब तक दिल से न माने मूमिन नहीं हो सकता. दिल से मानना जभी मुअतबर हो सकता है कि इस इकरार के साथ इसमें कोई वजहे कुफ्र न पाई जाए.

और जिन खुशकिस्मत हस्तियों ने ज़ाहिरो बातिन में रसूल माना वो मूमिनीन के लक़ब से मुलक़्क़ब हुए. इन्हीं को या अय्युहल लज़ीना आमनू के ख़िताब से मुख़ातब फ़रमाया, इन्हीं के लिये कुरआने मजीद में अज्रो सवाब का वादा फ़रमाया, वही गिरोह दीने हक़ और सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाइम है.

सद्रे अव्वल यानी नबीये करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम की हयाते ज़ाहिरी और एहदे सहाबा में यह मानने वाली जमाअत अक़ीदए सहीहह व ऐतिक़ादाते हक़्क़ह पर क़ाइम रही और इन्शाअल्लाहुल अज़ीज़ क़यामत तक क़ाइम रहेगी जैसा कि हदीसे सही में फ़रमाया :

لا یزال من امتی امة قائمة بامر اللّٰه لا یضرهم من خذلهم و لا من خالفهم حتی یاتی امر اللّٰه وهم علی ذلک۔

मगर एहले हक़ के पर्दे में ईमान के दअवेदार बन कर बहुत से फ़िर्के जो हक़ीक़त में मूमिन नहीं, पैदा होने वाले थे. मुख़्बिरे सादिक़ ﷺ ने उनकी ख़बर दी ताकि एहले हक़ उनसे बाख़बर रहें उनके जाल में न आएं. फ़रमाया :

وتفترق امتی علیٰ ثلث و سبعین ملة کلهم فی النار الا ملة واحدة قالوا من هي يا رسول اللّٰه قال ما انا علیه واصحابی. (رواه الترمذی)

यानी मेरी उम्मते इजाबत जो मुझको नबी माने और क़िबला-रू नमाज़ पढ़े वह तिहत्तर फ़िर्के हो जाएगी, सब फ़िर्के दोज़ख़ी हैं सिर्फ़ एक

फ़िर्क़ा जन्नती होगा.

كما الشيخ فى اشعة اللمعات فى تفسير هذاالحديث وتفترق امتى على ثلث و سبعين ملة

सहाबा ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह, निजात पाने वाली जमाअत कौन है? फ़रमाया: जिसपर मैं और मेरे सहाबा हैं. अहमद व अबूदाऊद की रिवायत में फ़रमाया: वह जन्नती गिरोह बड़ी जमाअत है. हदीस का खुलासा व मतलब यह हुआ कि मुद्दइय्याने इस्लाम के तिहत्तर फ़िर्के हो जाएंगे, बहत्तर दोज़ख़ी और एक जन्नती. वह जन्नती फ़िर्क़ा मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर क़ाइम रहने वाला है और वह बड़ी जमाअत है. दूसरी हदीस में इरशाद फ़रमाया: اتبعوا السواد الاعظم فانه من شذ شذ فى النار यानी बड़ी जमाअत का इत्तिबाअ करो क्योंकि जो बड़ी जमाअत से अलाहिदा हुआ, दोज़ख़ में डाला जाएगा. एहदे सहाबा व ताबिईन से लेकर आज तक बावुजूदेकि ये तमाम फ़िर्के ज़हूर में आए लेकिन हर क़र्न व हर ज़माने में बड़ी जमाअत वही रही जिसपर सहाबा व ताबिईन व तबए ताबिईन अइम्मए मुज्तहिदीन उलमाए मुअतमिदीन औलियाए कामिलीन क़ाइम रहे, वही मज़हब एहले सुन्नत व जमाअत का है. आज भी बिफ़ज़्लिल्लाहे व बिकरमे हबीबिही ﷺ एहले सुन्नत व जमाअत की वह बड़ी जमाअत है कि तमाम दुनिया के मुद्दइय्याने इस्लाम के कुल फ़िर्के जमा कर लिये जाएं तब भी इसकी तअदाद को न पहुंच सकें.

लिहाज़ा दोनों हदीसों से साफ़ नतीजा निकला कि निजात पाने वाला गिरोह सवादे अअज़म सिर्फ़ एहले सुन्नत व जमाअत है बाक़ी तमाम फ़िर्के मसलन देवबन्दी, ग़ैर मुक़ल्लिद, क़ादियानी, नेचरी वग़ैरह सब दोज़ख़ी.

मगर अफ़सोस सद अफ़सोस कि हदीसे करीम की इस तस्रीह के बावुजूद आँखें बन्द करके लोग गुमराही में पड़े हुए हैं, अपनी अपनी टोलियाँ अलग अलग बनाकर जहन्नम में जा रहे हैं, मज़हबे एहले सुन्नत व जमाअत क़ुबूल करके निजात पाने वाली जमाअत में शरीक नहीं होते. यह उनकी मेहरूमी और बदक़िस्मती है. मौला तआला हिदायत दे.

बहरहाल इरशादे नबवी के मुताबिक़ सदियों बाद ये गुमराह फ़िर्के पैदा हुए जो इस्लाम के दअवेदार, क़ुरआन व हदीस पर ईमान व अमल के

मुद्दई, क़िबला रूख़ होकर नमाज़ पढ़ने वाले, अपने को बड़ा पक्का सच्चा मुसलमान कहते हैं मगर इन सबने वह मज़हबे हक़ जिसपर हुज़ूरे अकदस ﷺ और आपके सहाबा क़ाइम थे, छोड़कर अपनी अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद अलग चुनीं और من شذ شذ فی النار के मिस्दाक़ हुए और आयाते क़ुरआनियह व अहादीसे मशहूरह के ख़िलाफ़ अक़ीदे गढ़े और जिन अक़ाइद पर सहाबए किराम व ताबिईने इज़ाम की जमाअत क़ाइम रही उनका ख़िलाफ़ किया अपने अक़ाइदे बातिलह और मज़ाहिबे फ़ासिदह कासिदह की तर्वीज के लिये फ़लासफ़ा के दामन में चंगल मारा और मुसलमानों को गुमराह करने और अपना गिरोह बढ़ाने के लिये क़ुरआनो हदीस का नाम लेते रहे कि हम क़ुरआन व हदीस के मानने वाले हैं. वरना क़ुरआन व हदीस का मानने वाला तो सिर्फ़ वही मुसलमान हो सकता है जो सहाबा और ताबिईन रिदवानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन का पैरौ हो , वही अक़ाइद मानता हो. इस लिये कि क़ुरआन व हदीस के सही मआनी समझने वाले और मानने वाले वही हज़रात हैं क्योंकि उनको नबीये करीम ﷺ ने क़ुरआन व हदीस की तअलीम फ़रमाई तो जो सहाबए किराम की जमाअत के ख़िलाफ़ अक़ीदा रखे वह क़ुरआन का मानने वाला कैसे हो सकता है. सिर्फ़ ज़बानी दअवा है जिसपर कोई दलील नहीं.

इन फ़िर्क़ए बातिलह के बुतलान के लिये सिर्फ़ इतना ही काफ़ी है कि सद्रे अव्वल के बाद ही इनके अक़ाइद सहाबाए किराम की जमाअत के ख़िलाफ़ हैं बावुजूद इसके कि इन सब ने आयाते क़ुरआनियह व अहादीसे सरीहा शहीरह का ख़िलाफ़ किया है. इस इज्माल की कद्रे तफ़सील यह है कि फ़िरक़े इस्लामिया आठ हैं - मुअतज़िलह, शीअह, ख़वारिज, मर्जियह, नजारियह, जब्रियह, मुश्बिहा, नाजियह. मुअतज़िलह के बीस फ़िर्के हैं, शीअह के बाईस, और ख़वारिज के बीस, मर्जियह के पांच, नजारियह के तीन, जब्रो मुश्बिहा का एक एक फ़िर्क़ा. ये बहत्तर फ़िर्के हैं और तिहत्तरवाँ नाजियह सिर्फ़ एहले सुन्नत व जमाअत है.

इनमें बहत्तर फ़िर्क़े गुमराह हैं जिनमें पहला फ़िर्क़ा मुअतज़िलह का है जो सदियों के बाद ताबिईन के जमाने में पैदा हुआ. इसने कुफ़्रो ईमान के दरमियान एक फ़िर्क़ा निकाला और कहा :

من ارتکب الکبیرۃ فھو لیس بمومن ولا کافر

यानी जो शख़्स गुनाहे कबीरह करेगा वह न मूमिन है न काफ़िर. हज़रते हसने बसरी रदियल्लाहो तआला अन्हु ने इसको जमाअते हक़्क़ा से ख़ारिज क़रार दिया और फ़रमाया : قد اعتزل عنا.

यानी बेशक वह हम से अलाहिदा हो गया. इस फ़िर्क़े ने आसी को दोज़ख़ में और मुतीअ को जन्नत में दाख़िल करना अल्लाह तआला पर वाजिब कर दिया, सिफ़ाते इलाही का इन्कार कर दिया और इस गन्दे अक़ीदे पर फ़ख़्र करते हुए अपना नाम अस्हाबुल अदले वत्तौहीद रखा. अफ़आल का ख़ालिक़ बन्दों को माना, जो आयत والله خلقكم وما تعملون के ख़िलाफ़ है, ईसाले सवाब के मुन्किर हुए, ऐसे अक़ीदे गढ़े जो क़ुरआन व हदीस व जमाअते सहाबए किराम रिदवानुल्लाहे अलैहिम अज्मईन के ख़िलाफ़ हैं.

लिहाज़ा यह फ़िर्क़ा मए अपनी तमाम शाख़ों के एहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज फ़िर्क़ाए नारियह हुआ. फ़िर्क़ाए शीअह ने तमाम क़ुरआने मजीद को नातमाम व ग़ैर मेहफ़ूज माना जिससे आयते करीमह نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ. का इन्कार होता है. ख़िलाफ़ते अस्हाबे सलासह में सिद्दीक़े अकबर व फ़ारूक़े अअज़म व उस्माने ग़नी रदियल्लाहो तआला अन्हुम के मुन्किर हुए जो उम्मत का इज्माअ है. इसी तरह उनके बहुत से गन्दे अकीदे हैं. लिहाज़ा यह भी मए अपने तमाम शोअबों के एहले सुन्नत व ज़माअत से ख़ारिज हुआ.

फ़िर्क़ाए ख़ारिजियह ने यह अक़ीदा गढ़ा कि गुनाहे कबीरह करने से मूमिन काफ़िर हो जाता है उसकी मगफ़िरत हरगिज़ नहीं हो सकती. यह अक़ीदा एहले सुन्नत व जमाअत के ख़िलाफ़ है. इससे आयते करीमह:
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ. का इन्कार होता है. इसी तरह और भी बहुत से गन्दे अक़ीदे हैं और यह फ़िर्क़ा भी मए अपने तमाम फ़िर्क़ों के एहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज हुआ.

फ़िर्क़ाए मर्जियह ने एहले सुन्नत व जमाअत के ख़िलाफ़ यह अक़ीदा तराशा कि ईमान लाने के बाद कोई गुनाह ज़रर नहीं देता यानी गुनाहे कबीरह पर मुआखज़ह नहीं. यह आयते करीमह :. مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ के ख़िलाफ़ है. लिहाज़ा यह भी मए अपनी जमाअत के एहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज हुआ. इसी तरह नजारियह, जब्रियह, मुश्बिहा, अपने अक़ाइदे ख़बीसा की बुनियाद पर जमाअते हक़्क़ह से निकल कर फ़िरक़े

नारियह में शामिल हुए. आजकल हिन्दुस्तान में जो गुमराह फ़िर्क़े मसलन देवबन्दी, ग़ैर मुकल्लिद, नेचरी, क़ादियानी वग़ैरह हैं, ये उन्हीं गुमराह फ़िर्क़ों की शाख़ें हैं और इनके गन्दे अक़ीदे जमाअते सहाबा रदियल्लाहो अन्हुम के ख़िलाफ़ हैं अगरचे ये अपने मज़हब की तर्वीज में आयात व अहादीस ज़रूर पेश करते हैं मगर आयात व अहादीस के वो मआनी गढ़ते हैं जो हुजूरे अक़दस ﷺ और सहाबा रिदवानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन की तअलीम व तस्रीह व तन्सीस के ख़िलाफ़ हैं. मसलन आयत - ولكن رسول الله وخاتم النبيين का मअना ख़त्मे ज़मानी. खुद हुजूर ﷺ ने फ़रमाया - لا نبي بعدى यानी मेरे ख़ातिमुन्नबिय्यीन होने के मअनी ये हैं कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है. यही मआनीये ख़त्मे ज़मानी सहाबा से मन्क़ूल, इसी पर उम्मत का इज्माअ, लेकिन क़ादियानी दज्जाल और देव बन्दी कज़्ज़ाब ने आयत का मअना ख़त्मे ज़ाती गढ़े, चुनान्चे देवबन्दियों के पेशवा मौलवी क़ासिम नानौतवी ने अपनी किताब (तहज़ीरुन्नास) में इसी मअनिये ख़त्मे ज़मानी को अवाम का ख़याल बताया और साफ़ लिख दिया कि - अवाम के ख़याल में तो रसूलुल्लाह ﷺ का ख़ातिम होना बईं मअनी है कि आपका ज़माना अम्बियाए साबिक़ के ज़माने के बाद और आप सब में आख़िरी नबी हैं मगर एहले फ़हम पर रौशन होगा कि तकद्दुम या तअख़िरे ज़मानी में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं फिर मक़ामे मदह में **वलाकिन रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबिय्यीन** फ़रमाना कयोंकर सही हो सकता है. (तहज़ीरुन्नास : सफ़हा २)

इसमें हुजूरे अक़दस ﷺ और आपके सहाबा रदियल्लाहो तआला अन्हुम और तमाम अकाबिरीने उम्मत को अवाम बताया और खुद एहले फ़हम बना और इस आयत को ख़त्मे ज़ाती पर महमूल करके हुजूर के बाद नबुव्वत का दर्वाज़ा खोल दिया चुनान्चे क़ादियानी क़ासिम नानौतवी की इस कमाई को ले उडा और नबी बन बैठा.

मौलवी अशरफ अली थानवी ने हुजूर ﷺ के इल्मे ग़ैब को जानवरों पागलों से तशबीह दी. अपनी किताब हिफ़्ज़ुल ईमान में लिख दिया : अगर बअज़ उलूमे ग़ैबियह मुराद हैं ते इसमें हुजूर की कया तख़सीस है ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद अम्र बल्कि हर सबी, मजनून बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम को भी हासिल है. (हिफ़्ज़ुल ईमान सफहा ७)

मौलवी रशीद अहमद गन्गोही व ख़लील अहमद अम्बेठी जो देव बन्दियों के पेशवा हैं, उन्होंने अपनी किताब बुराहीने क़ातिअह में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के झूट बोलने को मुमकिन मानना पुराना अक़ीदा बताया और लिख दिया कि : इम्काने किज़्ब का मसअलह तो अब जदीद किसी ने नहीं निकाला, क़दिमा में इख़्तिलाफ़ हुआ है कि ख़ल्फ़ वईद आया जाइज़ है या नहीं. (बुराहीने क़ातिअह, सफ़हा २)

इसी अपनी बुराहीने क़ातिअह में सफ़हा ५१ पर हुज़ूर(ﷺ) के इल्म को शैतान मलऊन के इल्म से घटाया. शैतान मरदूद के लिये वुस्अते इल्म क़ुरआन व हदीस से साबित मानी. हुज़ूर ﷺ के लिये इसी का इन्कार किया. हुज़ूर ﷺ के लिये पूरी ज़मीन का इल्म शिर्के ख़ालिस बताया और इसी को शैतान के लिये क़ुरआन व हदीस से साबित माना. इबारत यह है : अल्हासिल ग़ौर करना चाहिये कि शैतान व मलकुलमौत का हाल देख कर इल्म मुहीते ज़मीन का फ़ख़्रे आलम को ख़िलाफ़े नुसूसे क़तइय्यह के बिला दलील महज़ क़यासे फ़ासिदह से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है. शैतान व मलकुल मौत को यह वुस्अत नस्स से साबित हुई. फ़ख़्रे आलम को वुस्अते इल्म की कौन सी नस्से क़तई है जिससे तमाम नुसूस को रद करके एक शिर्क साबित करता है. इन्तिहा. (बुराहीने क़ातिअह. सफ़हा : ५१)

इसके अलावा क़ादियानी दज्ज़ाल व देवबन्दियों के हज़ारों गन्दे अक़ीदे हैं, हिन्दुस्तान के गोशे गोशे में जिनकी तशहीर हो चुकी है वो सब जमाअते सहाबा व ताबिईन के ख़िलाफ़ हैं. लिहाज़ा ये एहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज होकर फ़िर्क़ाए नारियह में दाख़िल हुए.

क़ादियानी और देवबन्दियों के कुफ़्र पर उलमाए मक्कए मुकर्रमह व मदीनए तैय्यिबह ने फ़तवे दिये जिनकी तफ़सील फ़तावा हुसामुल हरमैन शरीफ़ में मज़कूर है. ग़ैर मुक़ल्लिदीन अक़ाइद में देवबन्दियों के शरीक हैं. तक़वियतुल ईमान जो कुफ़रियात का मजमूआ है इसपर ईमान रखते हैं. मअहज़ा तक़लीदे शख़्सी को जिस पर उम्मत का इज्माअ हो चुका है, शिर्क कहते हैं लिहाज़ा जमाअते हक़्क़ा एहले सुन्नत से ख़ारिज होकर फ़िर्क़ाए नारियह हुए.

नेचरी अज़ाबे क़ब्रो हश्र, अज्साद व जन्नत व दोज़ख़ के मुन्किर हैं.

मोअजिज़ाते अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का इन्कार करते हैं. उनके अक़ाइदे फ़ासिदह इस मज़हबे हक़ के ख़िलाफ़ हैं जिसपर सहाबा व ताबिईन की जमाअत गुजरी. लिहाज़ा यह फ़िर्क़ा भी एहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज है.

अलबत्ता ये तमाम फ़िरक़े बातिला मुद्दइय्याने इस्लाम अपनी अपनी हक़्क़ानियत का शोर मचाते और अपने मज़ाहिबे बातिला के लिये क़ुरआन व हदीस पढ़ते और आयात व अहादीस दलील में पेश करते हैं मगर क्या किसी दअवे पर सिर्फ़ कोई आयत या हदीस पढ़ देना काफ़ी है, इसी से वह दअवा साबित हो जाएगा? अगर ऐसा हो तो हर शख़्स हर रोज़ ब-तअदादे आयाते क़ुरआने मजीद कम अज़ कम ६६६६ दअवे साबित कर लिया करे. नहीं नहीं, हरगिज़ नहीं. क़ुरआन व हदीस से किसी दअवे के साबित करने के लिये यह देखा जाएगा कि आयत व हदीस का जो मतलब उसने बयान किया है वह तअलीमे मुहम्मदी व तअलीमे सहाबा व ताबिईन के फ़रमान के ख़िलाफ़ तो नहीं. अगर इन दीन परवर हज़रात के इरशाद के मुताबिक़ है तो क़ुबूल और मुख़ालिफ़ है तो मरदूद. और ऊपर की तफ़सील से मालूम हो चुका कि कितने फ़िरक़े बातिलह हैं. सब आयात व अहादीस का मतलब ख़िलाफ़े तअलीमे सहाबा व ताबिईन व सलफ़े सालिहीन रदियल्लाहो तआला अन्हुम अज्मईन लेते हैं बल्कि उनके अक़वाल व अक़ाइद आयाते क़ुरआनी सरीहा के मआरिज़ हैं. लिहाज़ा सही तौर पर क़ुरआन व हदीस के मानने वाले हरगिज़ नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़बानी दअवेदार हैं जिसका हरगिज़ ऐतिबार नहीं.

तम्बीह : कुफ़्र व बेदीनी के लिये यह ज़रूरी नहीं कि क़ुरआने मजीद की हर हर आयत का ख़िलाफ़ किया जाए, तमाम अहादीस का इन्कार किया जाए बल्कि किसी एक आयत का ख़िलाफ़ भी कुफ़्र बेदीनी के लिये काफ़ी है अगरचे बाक़ी तमाम क़ुरआने मजीद पर ईमान रखता हो. लिहाज़ा ये फ़िरक़े बातिलह अगरचे बअज़ अक़ाइद व अअमाल में एहले सुन्नत व जमाअत से मुत्तफ़िक़ भी हों लाकिन चूंकि उनके बअज़ गन्दे अक़वाल व अक़ाइद बअज़ आयात व अहादीस व अक़ाइद सलफ़े सालिहीन के ख़िलाफ़ है इस लिये वो बद दीन व गुमराह फ़िरक़े नारियह में शुमार हैं.

इस तफ़सील से साबित हुआ कि क़ुरआन व हदीस का मानने वाला

वही गिरोह है जिसके जमीअ अक़ाइद सहाबा व ताबिईन सलफ़े सालिहीन के मुताबिक़ हों और वह गिरोह सिर्फ़ एहले सुन्नत व जमाअत है क्योंकि यह गिरोह वही अक़ाइद रखता है, उसी मज़हब का पैरौ है जिसपर सहाबए किराम व ताबिईने इज़ाम, अइम्मए दीन, उलमाए मुअतमिदीन, औलियाए कामिलीन, सलफ़े सालिहीन क़ाइम रहे. इसके सिवा बाक़ी तमाम फ़िर्के नारी हैं अगर इस पर भी कोई बद दीन हठधर्मी ज़िद्दी न माने और मुंह ज़ोरी करे तो हम ऐलान करते हैं कि हदीस व तफ़सीर, इल्में कलाम व फ़िक्ह, व तसव्वुफ व सियर व तवारीख़ की तमाम मोअतबर किताबें सब के सब जमा करो, सहाबा व ताबिईन और सलफ़े सालिहीन के अक़ाइद तलाश करो, तमाम किताबों में उनके वही अक़ाइद हैं जो इस वक़्त एहले सुन्नत व जमाअत के अक़ाइद हैं और मज़्कूरह बाला किसी गुमराह फ़िर्के की उनमें हरगिज़ हरगिज़ ताईद नहीं मिल सकती.

लिहाज़ा अहादीसे करीमह में जो नाजी फ़िर्के की अलामत बयान फ़रमाई हैं :

ما انا علیه واصحابی واتبعوا السواد الاعظم

उनका मिस्द्राक़ यक़ीनन हत्मन यक़ीनन सिर्फ़ एक फ़िर्क़ए नाजियह एहले सुन्नत व जमाअत है लिहाज़ा यही नाजी है.

کما فصل الشیخ فی اشعة اللمعات واللہ الهادی الی سبیل الرشاد وهو الموفق السداد وهو اعلم وعلمه اتم واحکم.

☆☆☆

इस्तिआनत व इस्तिम्दाद

(ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना कैसा ?)

मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी रहमतुल्लाहे अलैह

الحمد لولیه والصلوٰۃ علی نبیه وعلیٰ آله وصحبه

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के मेहबूबाने बारगाह से उनकी हयाते ज़ाहिरी में भी और दुनिया से पर्दा फ़रमाने के बाद भी इस्तिआनत व इस्तिम्दाद इस दौर का बहुत मुतनाज़अ फ़ीह मसअला बन चुका है. इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी की तहरीक से मुतास्सिर अफ़राद उसे नाजाइज़ व हराम बल्कि शिर्क तक कहते हैं. इसमें उस तब्क़े का इतना ग़ुलू व तशद्दुद है कि अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम से इस्तिआनत करने वाले मुसलमानों को अबूजहल के बराबर मुश्रिक जानते हैं. इसी बिना पर वहाबियों की शाख़ के तमाम फ़िर्क़े वाले इन मुसलमानों के साथ मुश्रिकीन जैसा सुलूक करते हैं बल्कि उससे भी बदतर, जिसका सुबूत नज्दियों के वो सफ़्फ़ाकाना सुलूक हैं जो उन्होंने हरमैने तैय्यिबैन पर अपने तग़ल्लुब के वक़्त किये और हिन्दुस्तान के तूलो अर्ज़ में होने वाले वहाबी सुन्नी फ़सादात हैं. उन्हीं लोगों की निशानदिही इस हदीसे पाक में की गई है :

یقتلون اهل الاسلام و یدعون اهل الاصنام، اولٰئک هم شر البریة.

यानी मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और बुत परस्तों को कुछ न कहेंगे. ये लोग बद-तरीन मख़लूक हैं.

इनके बरख़िलाफ़ पूरी दुनिया के मुसलमानों की अकसरियत का यह अक़ीदा है कि अम्बियाए किराम व औलियाए इजाम से इम्दादो इस्तिआनत बिला शुबह जाइज व मुस्तहसन. सलफ़ से लेकर ख़लफ़ तक पूरी उम्मत का मअमूल बिह और हल्ले मुश्किलात के लिये मुजर्रब है.

इस मसअले के चन्द पहलू हैं. अव्वल अम्बिया व औलिया से उनकी हयाते ज़ाहिरी में इस्तिआनत. दुव्वम बादे विसाल उनसे इस्तिआनत. सुव्वम इस मअनाकर इस्तिआनत कि उनके तवस्सुल से अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की बारगाह में दुआ की जाए या यह कि ख़ुद उनसे यह दर्ख़्वास्त की जाए कि

आप हमारा यह काम कर दें. क़ुरआन व हदीस से क्या साबित है और उम्मत का क्या मअमूल रहा है.

यहाँ एक ख़ास नुकता क़ाबिले लिहाज़ है कि अस्ले अशिया में इबाहत है यानी जब तक किसी ऐतिक़ाद या क़ौल या फ़ेअल के बारे में क़ुरआन व हदीस में कोई तस्रीह न हो तो वह ऐतिक़ाद रखना या वह बात कहनी या वह अमल करना जाइज़ रहता है. एहले सुन्नत व जमाअत अम्बिया व औलियाए किराम से इस्तिआनत को जाइज मानते हैं और करते हैं इसके सुबूते जवाज़ के लिये इतना ही काफ़ी है कि क़ुरआन व अहादीस में इसकी कोई मुमानिअत नहीं जो लोग इसे नाजाइज और शिर्क कहते हैं उनके ज़िम्मे लाजिम है कि क़ुरआन की एक आयत पेश करें, एक हदीस पेश करें जिसमें फ़रमाया गया हो कि अम्बिया व औलिया से इस्तिआनत नाजाइज व हराम व शिर्क है और हम दअवे के साथ कहते हैं कि मरते मरते मर जाएंगे मगर कोई आयत कोई हदीस ऐसी पेश नहीं कर सकेंगे.

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوْا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ

यह तो बरसबीले तनज़्ज़ुल था वरना क़ुरआन व अहादीस से निहायत सराहत के साथ साबित है कि अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम से इस्तिआनत बहरहाल जाइज़ और मअमूल बिही है. इन ग़रीबों को जब कोई ठिकाना नहीं मिलता तो अवाम को भड़काने के लिये उन आयतों को पेश करते हैं जो बुत-परस्तों और बुतों के बारे में नाज़िल हुई हैं. हालांकि हर ज़ी इल्म मुसलमान जानता है कि बुत-परस्तों और एहले सुन्नत के एतिक़ाद में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है.

बुत परस्त बुतों को मअबूद जानते हैं और उन्हें मअबूद समझ कर उनसे हाजतें तलब करते हैं या उनसे तवस्सुल करते हैं, इबादत में अल्लाह का शरीक ठहराते हैं. क़ुरआने मजीद नें उनके ऐतिक़ाद को इन अल्फ़ाज़ में नक़ल फ़रमाया है :

وَمَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَا اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى (سورۃ زمر آیت ۳، پارہ ۲۳)

यानी - हम इनको सिर्फ़ इस ग़रज से पूजते हैं कि हमें अल्लाह से क़रीब कर दें.

मुसलमानाने एहले सुन्नत अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम की न इबादत करते हैं न उन्हें मअबूद जानते हैं बल्कि मअबूदे बरहक़ जल्ल मज्दहू के बन्दे मगर मेहबूब बन्दे ऐतिक़ाद करते हैं. अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम का मेहबूब बन्दा होना और साहिबे तसर्रूफ़ होना हदीस से साबित है. इमाम बुखारी सैय्यिदुना अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत करते हैं :

ما يزال عبدى يتقرب الىّ بالنوافل حتى احببته فاذا احببته فكنت سمعه الذى يسمع به وبصره الذى يبصر به ويده التى يبطش بها ورجله التى يمشى بها وان سئلنى لا عطينه وان استعاذنى لاعيذنه . (مشكوٰة : ص ۱۹۷)

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है : बन्दा नवाफ़िल के ज़रिये मुझ से क़रीब होता रहता है यहाँ तक कि मैं उसको मेहबूब बना लेता हूँ तो जब मैं उसे मेहबूब बना लेता हूँ तो मैं उसका कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है, मैं उसकी आँख हो जाता हूँ जिससे वह देखता है, उसका हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकडता है, उसका पाँव हो जाता हूँ जिससे वह चलता है. अगर वह मुझ से कुछ मांगे तो उसे ज़रूर ज़रूर देता हूँ और अगर वह मेरी पनाह मुझ से मांगे तो उसे ज़रूर देता हूँ.

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहे अलैह ने अशअतुल लम्आत जिल्द दुव्वम में फ़रमाया :

ودر بعضے روایات وفواده الذى يعقل به ولسانه الذى يتكلم به" ودر آخرایں حدیث در بعضے روایات ایں نیز زیادہ می کنند کہ فبى يسمع وبى يبصر وبى يبطش وبى يمشى.

यानी - और बअज़ रिवायतों में आया है : और उसका दिल हो जाता हूँ जिससे वह समझता है, उसकी ज़बान हो जाता हूँ जिससे वह बोलता है. और इस हदीस के आख़िर में बअज़ रिवायतों में ज़ियादा करते हैं : पस वह बन्दा मुझी से सुनता है, मुझी से देखता है, मुझी से पकडता है, मुझी से चलता है.

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल आँख, कान, हाथ, पाँव, दिल, ज़बान तमाम जिस्म व जिस्मानियात से मुनज़्ज़ह है और इससे और ज़ियादा मुनज़्ज़ह है कि किसी बन्दे का कान आँख हाथ पाँव वग़ैरह हो.

تعالی الله عن ذالک علوا کبیرا.

फिर इस हदीस का क्या मतलब है. इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी अपनी मशहूर व मअरूफ़ तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

و کذالک العبد اذا واظب علی الطاعات بلغ الی المقام الذی یقول الله تعالیٰ کنت له سمعا و بصرا فاذا صار نور جلال الله سمعا له یسمع القریب والبعید واذا صار ذالک النور بصر اله یبصر القریب والبعید واذا صار ذالک النور ید اله قدر علی التصرف فی السهل والصعب والقریب والبعید.

यानी - बन्दा जब ताआत पर हमेशगी करता है तो उस मक़ाम पर पहुंच जाता है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है कि मैं उसका कान और आँख हो जाता हूँ. नूरे जलाले इलाही जब बन्दे का कान हो जाता है तो क़रीब और दूर की आवाज़ सुनता है और वह नूर जब उसकी आँख हो जाता है तो नज़्दीक और दूर देखता है और जब वह नूर उसका हाथ हो जाता है तो नर्म व सख़्त क़रीब व बईद पर तसर्रूफ़ करने पर क़ादिर हो जाता है.

इस हदीस से दो बातें साबित हुईं. एक तो यह कि अल्लाह तआला के कुछ बन्दे ऐसे हैं जिन्हें वह अपना मेहबूब बना लेता है, उन्हीं मेहबूब बन्दों को अम्बिया व औलिया कहा जाता है. दूसरी बात यह साबित हुई कि अल्लाह के मेहबूब बन्दे जैसे नज़्दीक देखते हैं वैसे ही दूर भी देखते हैं, जैसे सामने की चीज़ देखते हैं वैसे ही छुपी हुई चीज़ों को भी देखते हैं, जैसे क़रीब की आवाज़ सुनते हैं वैसे ही दूर की आवाज़ भी सुनते हैं, जैसे क़रीब की चीज़ों में तसर्रूफ़ कर सकते हैं वैसे ही दूर की चीज़ों में भी तसर्रूफ़ करने पर क़ादिर हैं.

बहस की बुनियाद यही चीज़ है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम को माफ़ौक़ुल फितरत क़ुव्वतें अता फ़रमाई हैं या नहीं. अगर अता फ़रमाई हैं तो फिर उनसे इस्तिम्दाद व इस्तिआनत बिला शुबह जाइज व मुस्तहसन है और अता नहीं की हैं तो फिर उनसे इस्तिम्दाद व इस्तिआनत लग़्व बेकार साबित होगी.

बुख़ारी शरीफ़ की हदीसे मज़कूर इस पर नस्स है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम को आम इन्सानों से बाला तर ऐसी क़ुव्वतें अता फ़रमाई हैं कि वो ख़िरके आदत पर क़ादिर हैं. इस लिये उनसे इस्तिम्दाद व इस्तिआनत बिला शुबह जाइज व मुस्तहसन.

इसके अलावा कुरआने करीम की मुतअद्दिद आयतों से साबित है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम को माफ़ौक़ुल फ़ितरत आम इन्सानों से बाला तर कुव्वतें अता फ़रमाई हैं. इरशाद है :

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِيْهَا .
(انبیاء: آیت ۸۱)

यानी - और हमने सुलैमान के बस में तेज़ हवा को कर दिया जो उसके हुकम से ज़मीन की तरफ जाती जिसमें हमने बरकत रखी. दूसरी जगह इरशाद है :

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ رَوَاحُهَا شَهْرٌ . (سبا: آیت ۱۲)

यानी - और सुलैमान के बस में हवा कर दी जिसकी सुबह की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह.

हवा का बस में होना, माफ़ौक़ुल फ़ितरत कुव्वत है. बनस्से क़ुरआन यह हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिये साबित है.

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का क़ौल मन्क़ूल है :

اِنِّیْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِیْ بُيُوْتِكُمْ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ • (سورة آل عمران: ایت ۴۹)

यानी - मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूँ फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह फ़ौरन परिन्दह हो जाती है अल्लाह के हुकम से, और मैं शिफ़ा देता हूँ मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को और मुर्दे जिलाता हूँ अल्लाह तआला के हुकम से. और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो. बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो.

ये सब कुव्वतें माफ़ौक़ुल फ़ितरत हैं और हज़रत ईसा को हासिल थीं. अम्बियाए किराम को आम इन्सानों से बाला तर माफ़ौक़ुल फ़ितरत जो कुव्वतें हासिल थीं उसके ये चन्द नमूने हैं. औलियाए किराम को भी ये कुव्वतें

हासिल थीं. यह भी क़ुरआन से साबित है. जब मल्कए सबा बिल्क़ीस हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िरी के लिये चलीं जिस दिन वह पहुंच रही थीं और दरबार से सिर्फ़ एक फ़र्सन्ग का फ़ासला रह गया था उस दिन दरबार मुन्अक़िद करने के बाद हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने दरबारियों से यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि कोई उनका तख़्त मुलके सबा से लाकर दरबार मुनअक़िद होने से पहले पहले यहाँ रख दे. इस पर एक सरकश जिन्न ने अर्ज़ किया कि मैं दरबार बरख़ास्त होने से पहले पहले ला सकता हूँ. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के एक उम्मती वली ने अर्ज़ किया

اَنَا اٰتِیۡکَ بِہٖ قَبۡلَ اَنۡ یَّرۡتَدَّ اِلَیۡکَ طَرۡفُکَ . (نحل : آیت ۴۰)

यानी - में इसे ख़िदमते अकदस में एक पलक मारने से पहले हाज़िर कर दूंगा.

और उस वली ने जिसका नाम आसिफ़ बिन बर्ख़िया था एक पल के अन्दर अन्दर यह तख़्त लाकर हाज़िर कर दिया. हज़ारों मील की दूरी से एक पल के अन्दर अन्दर तख़्त लाकर हाज़िर करना बिला शुबह माफ़ौक़ुल फ़ितरत क़ुव्वत है. यह हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के एक उम्मती को हासिल थी, इसपर क़ुरआन शाहिद है. जब क़ुरआन और अहादीस से साबित है कि अम्बियाए किराम और औलियाए इजाम को माफ़ौक़ुल फ़ितरत क़ुव्वतें हासिल हैं तो उनसे इस्तिम्दाद व इस्तिआनत के जवाज़ व इस्तहसान पर कोई शुबह बाक़ी नहीं रह जाता.

रह गई यह बात कि बादे विसाल उनकी ये क़ुव्वतें सल्ब हो जाती हैं, एक बेहूदा बकवास है.

हदीस में है:

وانما مثل المومن حین تخریج نفسه کمثل رجل کان فی سجن فاخرج منه فجعل یتقلب فی الارض ویفسح فیها . (مسند احمد: ص ۲۰۶ ج ۲ بحواله امام احمد رضا اور علم حدیث دوم ص ۹۹)

यानी - और मूमिन की जब रूह निकल जाती है तो उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई क़ैद में हो फिर उससे निकाला जाए तो वह ज़मीन में जहाँ चाहे बा फ़राग़त चलता फिरता है. दूसरी हदीस में है:

فاذا مات المومن یخلی سربه یسرح حیث شاء. (ایضا) رواه عبد

اللہ بن مبارک و ابو بکر بن ابی شیبة.

यानी - जब मुसलमान मरता है तो उसकी राह खोल दी जाती है कि जहाँ चाहे सैर करे.

ये दोनों हदीसें इस पर नस्स हैं कि मूमिन की क़ुव्वत बादे मौत व निस्बत दुनियवी ज़िन्दगी के बढ़ जाती है. इन्हीं अहादीस के मुताबिक़ हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहे अलैह अशअतुल लम्आत शरहे मिशकात जिल्द अव्वल बाबे ज़ियारतुल क़ुबूर में फ़रमाते हैं: हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्द ग़ज़ाली ने कहा है कि जिससे ज़िन्दगी में मदद तलब की जाती है उससे उसकी वफ़ात के बाद भी मदद तलब की जा सकती है. मशायख़ में से चार शख़्स को देखा कि वो अपनी क़ब्रों में वैसे ही तसर्रुफ़ करते हैं जैसे अपनी ज़िन्दगी में या कुछ और ज़ियादा. शैख़ मअरूफ़ कर्ख़ी व शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी और दो दूसरे हज़रात को और मक़सूद हस्र नहीं, जो खुद देखा और पाया कहा और सैय्यिदी अहमद बिन सर्ज़ूक़ ने जो उज़्माए फ़ुकहा व उबाद व मशायख़े मग़रिब में से हैं फ़रमाया कि एक दिन शैख़ अबुल अब्बास हिदरमी ने मुझ से पूछा कि ज़िन्दा की इम्दाद ज़ियादा क़वी है या फ़ौत शुदा की? मैं ने कहा एक क़ौम कहती है कि ज़िन्दा की इम्दाद ज़ियादा क़वी है और मैं कहता हूँ कि फ़ौत शुदा की इम्दाद ज़ियादा क़वी है तो शैख़ ने फ़रमाया: हाँ इस लिये कि वह बारगाहे हक़ में है और उसके हुजूर में उस गिरोह से. इस मअनी की नक़ल हस्रो हिसार की हद से बाहर है. किताबो सुन्नत और अक़वाले सलफ़ में कोई ऐसी बात नहीं पाई जाती जो इसके मुनाफ़ी हो और इसको रद कर दे.

इसीलिये मुसलमानों का एहदे सहाबा से यह दस्तूर रहा है कि मुसीबतों के वक़्त मेहबूबाने बारगाह के मज़ारात पर उनकी अरवाह से इस्तिआनत के लिये हाज़िर होते हैं. हदीस में है, एहदे फ़ारूक़ में एक बार क़हत पड़ा. एक साहिब यानी हज़रत बिलाल बिन हारिस मज़नी सहाबी रदियल्लाहो अन्हु ने मज़ारे अक़दस पर हाज़िर होकर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह, अपनी उम्मत के लिये अल्लाह तआला से पानी मांगिये कि वह हलाक हुई जाता है. रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन सहाबी के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए, इरशाद फ़रमाया: उमर से जाकर सलाम कहो और कहो कि लोगों को ख़बर दे दो कि जल्द पानी बरसने वाला है.

शाह वलियुल्लाह क़ुर्रतुल ऐन में यह हदीस नक़्ल करके लिखते हैं : रवाहो उमर फिल इस्तीआब. इमाम कुस्तलानी ने मवाहिब में फ़रमाया यह हदीस सही है. मिशकात शरीफ़ बाबुल करामात में एक हदीस मन्क़ूल है : एहले मदीना सख़्त क़हत में मुब्तिला हुए. उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा की खिदमत में हाज़िर होकर अपनी तकलीफ़ बयान की. उन्होंने फरमाया : नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मज़ारे अक़दस पर हाज़िर हो. उसकी छत में एक सूराख बनाओ ताकि क़ब्रे अनवर और आसमान के माबैन कोई आड़ न रहे. लोगों ने ऐसा ही किया. बहुत काफ़ी बारिश हुई इतनी घास उगी कि ऊंट उसे चर चर कर इतने मोटे हो गए कि चर्बी की ज़ियादती से उनकी खाले फट गईं. इसी वजह से उस साल का नाम आम्मुल फितक़ रखा गया.

☆☆☆

मुसलमानों के फ़िर्क़े

शारहे बुख़ारी मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी रहमतुल्लाहे अलैह

(१) हर मज़हब की बुनियाद दो बातों पर क़ाइम है. पहली यह कि एक ऐसी ज़ात ज़रूर मौजूद है जो सारी मौजूदात से ज़ियादा कुव्वत और क़ुदरत रखती है. उसी ने सारी दुनिया को पैदा किया और दुनिया का सारा निज़ाम हक़ीक़त में उसी के क़ब्ज़े में है. वह हाकिमे मुत्लक़ है, उसके ऊपर कोई हाकिम नहीं वह सब पर हाकिम है सबका मालिक है वह जो चाहे करे, वह जिलाता भी है मारता भी है, वही पैदा भी करता है वही फ़ना भी करता है और तमाम आलम में जो कुछ भी होता है सब उसी के हुकम से होता है. उसका कोई शरीक नहीं, न ज़ात में न सिफ़ात में, न इबादत में . वह बेमिस्ल व बेमिसाल है. उसकी कोई सूरत और शकल नहीं . वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा. और न वह कभी पैदा हुआ है और न कभी मरेगा. वह हर आन दुनिया के ज़र्रे ज़र्रे की ख़बर रखता है. सब कुछ सुनता देखता है जानता है मगर न उसे कान है न आँख है न दिमाग़ है. वह जिस्मानी अअज़ा और अवारिज से पाक है. उसी ज़ात को हम लोग अल्लाह कहते हैं. दूसरी यह कि उसने बन्दों की हिदायत के लिये कुछ मख़सूस इन्सानों को चुन लिया है जिनके पास वह डायरैकट भी और फ़िरिश्तों के वास्ते से भी अपना पैग़ाम भेजता है, इन मख़सूस इन्सानों को नबी और रसूल कहा जाता है. इसलिये मुसलमान होने के लिये अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल को भी मानना ज़रूरी है और रसूल को भी मानना ज़रूरी है.

(२) मानने का मतलब यह है कि रसूलों के ज़रिये अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का जो पैग़ाम इन्सानों तक आए या रसूल जो फ़रमाएं उन सब को दिल से सच्चा माने और ज़बान से उनके सच्चा होने का इकरार भी करे. रसूल की बात बिला चूनो चिरा तस्लीम करे.

(३) अल्लाह की शान में या रसूल की शान में कोई गुस्ताख़ी का जुमला बोलना उनकी तहक़ीर करना ईमान नहीं, कुफ़्र है.

(४) रसूल जो अल्लाह का पैग़ाम लाए या रसूल ने जो कुछ भी

फ़रमाया और यह सब जिन लोगों के ज़रिये से हम तक पहुंचा उन सबको सच्चा मुसलमान, शरीअत का पाबन्द, अल्लाह से डरने वाला, अल्लाह तआला के अहकाम की ख़िलाफ़-वर्ज़ी करने वाला न होना, दुनियवी बातों में भी सच्चा, रास्तबाज़, अअला कैरकटर का होना ज़रूरी है.

(५) अल्लाह के मख़सूस पैग़ाम को क़ुरआन कहा जाता है और रसूल के अक़वाल को हदीस. जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सोहबत उठाई, उनसे बराहे रास्त तअलीम हासिल की, उनके जो मआनी व मतालिब बताए वो सही और बरहक़ हैं इसके ख़िलाफ़ कोई बात सुनने के लाइक नहीं.

(६) इसी तरह जो अमल या क़ानून सराहत के साथ क़ुरआन व हदीस में नहीं उनके बारे में सहाबा और ताबिईन और इसी तरह आजतक के मोअतमिद उलमाए किराम का फ़ैसला हक़ है उसे भी क़ुबूल करना, उनपर भी अमल करना ज़रूरी है बशर्ते कि वह क़ुरआन व हदीस और पहले गुजरे हुए बुज़ुर्गों के क़ौल और फ़ैसले के ख़िलाफ़ न हो.

(७) जिन लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ की ईमान की हालत में ज़ियारत की और अख़ीर दम तक वो ईमान पर क़ाइम रहे वो सहाबी हैं और जिन लोगों ने इसी तफ़सील के साथ सहाबी की ज़ियारत की वह ताबिई हैं.

(८) चूंकि क़ुरआन व अहादीस से क़ानून बनाने के लिये बहुत अअला दिमाग़ भी चाहिये और बहुत ज़ियादा इल्म भी चाहिये और साथ ही साथ उसे ख़ुदा तरस मुत्तक़ी परहेज़गार मुख़्लिस सच्चा भी होना चाहिये इसलिये हर शख़्स या कम इल्म वाले या कम दिमाग़ वाले क़ुरआन व हदीस से क़ानून नहीं बना सकते. इन अअला सिफ़ात व कमाल के बहुत कम लोग गुजरे हैं. उनको मुज्तहिद कहा जाता है. इनमें चार बहुत मशहूर और मुम्ताज़ हैं - इमाम अबू हनीफ़ा नुअमान बिन साबित, इनको इमामे अअज़म कहा जाता है. यह सन 80 हिजरी में पैदा हुए और 150 हिजरी में इन्तिक़ाल कर गए. इनके मानने वालों को हनफ़ी कहा जाता है. दूसरे इमामे मालिक बिन अनस, यह ९५ हिजरी में पैदा हुए और 199 हिजरी मे इनका इन्तिक़ाल हुआ. यह मदीनए तैय्यिबह में रहते थे. इनके मुकल्लिदीन यानी मानने वालों को मालिकी कहा जाता है. तीसरे मुहम्मद बिन इद्रीस शाफ़ई. यह 150 हिजरी में पैदा हुए और 204 हिजरी में

फ़ौत हुए. यह मिस्र में रहते थे इनके मुकल्लिदीन को शाफ़ई कहा जाता है. चौथे इमाम अहमद बिन हम्बल. यह 164 हिजरी में पैदा हुए और 241 हिजरी में फ़ौत हुए. यह बग़दाद के बाशिन्दे थे. इनके मुकल्लिदीन को हम्बली कहा जाता है. इनके अलावा और बहुत से मुज्तहिदीन हुए मगर उन लोगों ने जो मसाइल (क़ानून) क़ुरआन व हदीस से बनाए वो मेहफ़ूज नहीं रह सके, इस लिये उनके मुकल्लिदीन नहीं रहे.

(९) इस वक़्त दुनिया के एक अरब मुसलमानों में तक़रीबन 95 फ़ीसद मज़कूरह बाला मुज्तहिदीन के मुकल्लिदीन हैं जिनको एहले सुन्नत व जमाअत कहा जाता है. इन सबका इसपर इत्तिफ़ाक़ है कि अब कोई मुज्तहिद नहीं. अब पूरी दुनिया के मुसलमानों पर इन्हीं चारों में से एक की तक़लीद वाजिब है. इसकी इजाज़त नहीं कि कोई अज़ख़ुद डायरैकट क़ुरआन व हदीस से कोई क़ानून बना ले. कयोंकि इज्तिहाद यानी क़ुरआन व हदीस से मसाइल (क़वानीन) बनाने की किसी को क़ुदरत नहीं, न वह दिमाग़ है न वह इल्म है और न इतनी दयानतदारी.

(१०) हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई, हम्बली, चारों अक़ीदे में मुत्तफ़िक़ हैं. अक़ीदे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं. सबका अक़ीदा एक है. सिर्फ़ इबादात और अअमाल के तरीक़ों में और कुछ चीज़ों के हलाल व हराम होने में मअमूली सा इख़्तिलाफ़ है. इस इख़्तिलाफ़ की वजह से आपस में कोई लड़ाई झगड़ा नहीं.

रसूलुल्लाह ﷺ के बाद उनके सबसे पहले ख़लीफ़ा व जानशीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ हुए, उनके बाद हज़रत उमरे फ़ारूक़, उनके बाद हज़रत उस्माने ग़नी और उनके बाद हज़रत मौला अली रदियल्लाहो अन्हुम ख़लीफ़ा हुए.

(११) एहले सुन्नत का इसपर इत्तिफ़ाक़ है कि रसूलुल्लाह ﷺ के बाद सबसे अफ़ज़ल हज़रत अबूबक्र हैं उनके बाद हज़रत उमरे फ़ारूक़, उनके बाद हज़रत उस्मान व हज़रत अली रदियल्लाहो तआला अन्हुम.

(१२) हज़रत अबूबक्र हज़रत उमर हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हुम के खुलफ़ाए बरहक़ होने पर सबका इत्तिफ़ाक़ है. इन तीनों को हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हु ने भी खुद ख़लीफ़ा तस्लीम किया.

(१३) हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हु की शहादत १८ ज़िल

हज्ज ३६ हिजरी तक मुसलमानों के दर्मियान कोई इख़्तिलाफ़ नहीं था. हज़रत उस्माने ग़नी की ख़िलाफ़त के अख़ीर दिनों में अब्दुल्लाह बिन सबा नामी एक यहूदी ने तख़रीबकारी के लिये बज़ाहिर कलिमा पढ़कर अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर किया. बज़ाहिर बहुत बड़ा नमाज़ी, शरीअत का पाबन्द, मुत्तक़ी और परहेज़गार था साथ ही साथ इन्तिहाई चालाक और अैय्यार था.. उसने एक ख़ुफ़िया गिरोह बनाया और छोटी छोटी बातों को लेकर हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हु के ख़िलाफ़ उकसाता रहा जिसके नतीजे में हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहो अन्हु शहीद हुए. उनकी शहादत के बाद मदीनए तैय्यिबह में जो ज़ीअसर और बड़े बड़े सहाबा और सरदार थे उन लोगों ने हजरत अली रदियल्लाहो अन्हु को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया. उनकी ख़िलाफ़त को तमाम दुनिया के मुसलमानों ने तस्लीम किया मगर शाम के गवर्नर हज़रत अमीर मुआवियह रदियल्लाहो अन्हु ने तस्लीम नहीं किया और उनकी बैअत से इन्कार कर दिया. उन्होंने यह बहाना बनाया कि पहले हज़रत उस्मान के क़त्ल का क़िसास लिया जाए और जिन लोगों ने उनके घर का मुहासिरह किया था यानी उनके घर को घेरा था उनको सज़ा दी जाए. हज़रत अली ने इसके जवाब में फ़रमाया कि क़ातिलीन मफ़रूर हैं और उनका सही पता मअलूम नहीं कि उनका क़ातिल कौन है. मैं उनका पता लगा रहा हूँ अगर वो मिल जाएंगे तो ज़रूर उनसे क़िसास लूंगा. जिन लोगों ने हज़रत उस्मान का घर घेरा था उन्होंने हज़रत उस्मान को क़त्ल करने के लिये नहीं मुहासिरह किया था. उनका मुतालिबह यह था कि मशहूर फ़ित्ना पर्वर और साज़िशी मर्वान बिन हकम को हमारे हवाले किया जाए जो हज़रत उस्मान के घर में छुपा हुआ था. इस लिये वो हज़रात मुजरिम नहीं. इसपर बात बढ़ी और ३७ हिजरी में सिफ़्फ़ीन के मक़ाम पर हज़रत अली और हज़रत मुआवियह रदियल्लाहो अन्हुमा में बहुत ज़बरदस्त जंग हुई. जब हज़रत मुआवियह ने देखा कि मैं हार जाउंगा तो उन्होंने नेज़ों पर क़ुरआन बाँधकर उठाया और यह कहा कि हम क़ुरआन के हुकम के मुताबिक़ सुलह चाहते हैं. इसपर लड़ाई रुक गई. फिर बाहमी बात चीत से यह तय पाया कि तरफैन अपना अपना एक नुमाइन्दा मुकर्रर कर दें जो छ: महीने तक आम मुसलमानों की राय मअलूम कर ले फिर मक़ामे दूम्मतुल जन्दल में फ़रीक़ैन और उनके नुमाइन्दे इकटठे हों और अपना फ़ैसला सुना

दें. हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी को और हज़रत मुआवियह रदियल्लाहो अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस को अपना नुमाइन्दा मुन्तख़ब किया. इसके बाद हज़रत मुआवियह दमिश्क़ चले गए और हज़रत अली कूफ़ा आ गए. इस बीच ख़ारिजी फ़िर्क़ा पैदा हुआ. उन्होंने कहा कि क़ुरआने मजीद में है : इनिल हुकमु इल्ला लिल्लाहे. फ़ैसला करने का हक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के लिये है. आपने क़ुरआन की ख़िलाफ़-वर्ज़ी की इस लिये आप ख़िलाफ़त के लाइक नहीं. इन लोगों ने कूफ़ा के क़रीब हरूरा नामी एक जगह पर एक लश्कर जमा कर लिया. जब हज़रत अली को इसकी इत्तिलाअ मिली तो उन्हों ने उन ख़ारजियों के समझाने के लिये अपने चचा ज़ाद भाई हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास को भेजा. उन्होंने ख़ारजियों से कहा कि क़ुरआने मजीद ही में है कि जब मियाँ बीवी में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो शौहर अपना एक नुमाइन्दा भेजे और बीवी अपना एक नुमाइन्दा मुकर्रर करे. दोनों बैठकर झगड़े को तय कर लें. क़ुरआने मजीद में है :

فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنَ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا • (سورة نساء: ۵۳)

यानी एक पंच मर्द वालों की तरफ से और एक पंच औरत वालों की तरफ़ से भेजो. ये दोनों अगर सुलह करना चाहें तो अल्लाह उनमें मेल कर देगा.

इस लिये हज़रत अली का हकम बनाना क़ुरआन के ख़िलाफ़ नहीं. इसपर ख़ारजियों के लश्कर में हज़ारों आदमी टूट गए मगर जो शर-पसन्द थे वो नहीं माने. इसके बाद हज़रत अली ने उन से जंग की और उन्हे बुरी तरह पस्पा कर दिया. जो लोग भाग गए, बच गए वरना सब मारे गए. फिर दूम्मतुल जन्दल में दोनों फ़रीक़ और उनके पंच जमा हुए. हज़रत अम्र बिन आस (हज़रत मुआवियह के नुमाइन्दे) ने हज़रत अबू मूसा अशअरी (हज़रत अली के नुमाइन्दे) से कहा कि सारा झगड़ा अली और मुआवियह की तरफ से है, इसका हल यह है कि इन दोनों को मअज़ूल कर दिया जाए और किसी तीसरे को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया जाए. अबू मूसा अशअरी ने यह बात मान ली. अब अम्र बिन आस ने कहा कि तुम अली के नुमाइन्दे हो और बुज़ुर्ग भी

हो इस लिये पहले तुम खड़े होकर यह ऐलान कर दो कि मैंने अली को मअज़ूल किया. हज़रत अबू मूसा अशअरी ने यही कहा. इसके बाद हज़रत अम्र बिन आस खड़े हुए और उन्हों ने यह कहा कि अबू मूसा अशअरी ने हज़रत अली को मअज़ूल कर दिया लिहाज़ा अब वह ख़लीफ़ा नहीं रहे. मै हज़रत मुआवियह को ख़लीफा मुकर्रर करता हूँ. इसपर हज़रत अबू मूसा अशअरी ने उनको टोका फिर दोनों में शदीद झड़पें हुईं जिसपर वहाँ एक हन्गामा हो गया और दोनों फ़रीक़ अपने अपने ठिकानों पर वापस आ गए. इसके कुछ ही दिनें बाद हज़रत अली २० रमज़ान ४० हिजरी को शहीद कर दिये गए. इस इख़्तिलाफ़ के नतीजे में मुसलमानों के तीन गिरोह पैदा हो गए.

अव्वल ख़ारिजी : जो हज़रत अली और हज़रत मुआवियह दोनों को नाहक़ मानते थे. हरूरा की जंग में हज़रत अली ने अगरचे इनका ज़ोर ख़त्म कर दिया था मगर जो बच गए थे वो जहाँ भी थे वहीं चुपके चुपके अपनी तहरीक चला रहे थे.

दूसरे शीआने अली : शीआन शीअह की जमा है जिसके मानी गिरोह के हैं. ये लोग हज़रत अली के साथ थे और उनको ख़ुलफ़ाए बरहक़ मानते थे.

तीसरे उस्मानी : जो हज़रत मुआवियह को बरहक़ मानते थे और हज़रत अली को इस बुनियाद पर नाहक़ मानते थे कि उन्होंने हज़रत उस्मान के क़त्ल का बदला नहीं लिया और न उनका घर घेरने वालों को सज़ाएं दीं.

अब्दुल्लाह बिन सबा : यह एक यहूदी था जो सिर्फ़ मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ पैदा करने के लिये मुसलमान बना बज़ाहिर बहुत पक्का मुसलमान मअलूम होता था, नमाज़ रोज़े का बहुत पाबन्द था, बुराइयों से बिल्कुल दूर रहता था जिसकी वजह से मुसलमान उसके गिरवीदह हो गए. उसने जब यह देखा कि कुछ लोग मेरे मोअतक़िद हो गए हैं तो उसने हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हु पर तन्क़ीदें शुरू कर दीं मसलन यह कि हज़रत अबू बक्र हज़रत उमर बहुत सादे रहते थे, मअमूली ग़िज़ा खाते थे ज़ाहिरी तौर पर उनकी शानो शौकत का कोई सामान नहीं था. हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो तआला अन्हु चूंकि बहुत बड़े करोड़पती थे इस लिये उनका लिबास रहन सहन बहुत ऊंचा था. उम्दा लिबास पहनते, ग़ुलामों के झुरमुट में चलते. अब्दुल्लाह बिन सबा ने चुपके चुपके लोगों से

कहना शुरू किया कि पहले के दोनों बुज़ुर्ग ख़लीफ़ा किस सादगी से रहते थे और यह किस शानो शौकत से रहते हैं.

हज़रत उस्मान ख़ानदाने बनू उमैय्यह के फ़र्द थे जिसने शुरू शुरू में रसूलुल्लाह ﷺ की बहुत बड़ी मुख़ालिफ़त की थी लेकिन बाद में सच्चे दिल से मुसलमान हो गए. बनी उमैय्यह के लोग बहुत ज़हीन, होशियार और हुकमरानी की सलाहियत रखते थे जिसकी वजह से ख़ुद हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हु ने उस ख़ानदान के लोगों को बड़े बड़े मुल्कों का हाकिम बनाया. हजरत अम्र बिन आस को मिस्र का हाकिम बनाया, हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान को शाम का और उनके फ़ौत होने के बाद उनके भाई मुआवियह बिन अबू सुफ़ियान को उनकी जगह शाम का वाली बनाया. हज़रत उस्मान ने अपने दौर में अपने ख़ानदान के बासलाहियत लोगों को मुख़्तलिफ़ ममालिक का हाकिम बनाया.

अब्दुल्लाह बिन सबा ने लोगों को यह पट्टी पढ़ाई कि यह अक़रबा परवरी है. इस तरीक़े से तन्क़ीदें करके हज़रत उस्मान के ख़िलाफ़ जोशीले उजड लोगों को वरगलाया जिसके नतीजे में उनकी शहादत हुई. अब जब कि हज़रत अली और हज़रत मुआवियह का इख़्तिलाफ़ हुआ तब अब्दुल्लाह बिन सबा और उसके चेलों ने अन्दर ही अन्दर बहुत आग भड़काई जिसके नतीजे में मुसलमानों के तीन गिरोह हो गए - ख़ारिजी, शीअह, उस्मानी, जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ.

शुरू शुरू में यह गिरोह सिर्फ़ सियासी था मगर अब्दुल्लाह बिन सबा ही ने और उसके चेलों ने भरा कि जब तक आम मुसलमानों के अक़ाइद में इख़्तिलाफ़ नहीं करोगे और अपने लोगों को यह यक़ीन नहीं दिलाओगे कि आम मुसलमान अस्ल इस्लाम से हट गए हैं, तुम्हें कोई ख़ास कामयाबी नहीं होगी. जिसके नतीजे में आम मुसलमानों के ख़िलाफ़ सबसे पहले ख़ारजियों ने कुछ अक़ीदा बनाया. एक इस्लामी अक़ीदा यह था कि इन्सान जब तक इस्लाम के बुनियादी अक़ीदों को मानता रहेगा मुसलमान रहेगा अगरचे उससे कुछ गुनाह हो जाएं. गुनाह करने की वजह से कोई काफ़िर न होगा अल्बत्ता गुनाहगार और फ़ासिक़ होगा.

ख़ारजियों ने इसके बरखिलाफ़ यह अक़ीदा बनाया कि अगर कोई शख़्स कोई गुनाह करे तो वह मुसलमान नहीं रहता बल्कि काफ़िर हो जाता

है अगरचे वह इस्लाम के बुनियादी अक़ीदों को हक़ माने. इसका फ़ाइदा ख़ारजियों को यह हुआ कि उन्हें आम मुसलमानों से लड़ने का हक़ मिल गया. इब्तिदा में यह फ़िर्क़ा बहुत ज़ोर पकड गया था जिनके साथ आम मुसलमानों की बड़ी ज़बरदस्त लड़ाइयां हुई हैं. बिल आख़िर ये ज़ेर हुए और कुछ दिनों के बाद नेस्तो नाबूद हो गए.

राफ़िज़ी या शीअह : शुरू शुरू में तो ये लोग सिर्फ़ हज़रत मुआवियह के मुकाबले में हज़रत अली को बरहक़ मानते थे मगर अब्दुल्लाह बिन सबा और उसके चेलों ने उन ईरानियों को जिनकी हज़ार साला हुकूमत हज़रत अबूबक्र हज़रत उस्मान ने ख़त्म कर दी थी, यह पट्टी पढ़ानी शुरू की कि रसूलुल्लाह ﷺ के बाद उनके जानशीन और ख़लीफ़ा होने का हक़ सिर्फ़ हज़रत अली को था क्योंकि यह रसूलुल्लाह ﷺ के ख़ानदान के ऐतिबार से क़रीबी थे. उनके चचा के लड़के भी थे और दामाद भी. यह बात ईरान के उसूल के मुताबिक़ थी क्योंकि ईरान में एक बादशाह के बाद उसका जानशीन उसका बेटा होता. बेटा न होता तो बेटी होती. जब इब्ने सबा और उसके चेलों ने ईरानियों को यब बावर कराया कि ख़लीफ़ा होने का सबसे पहला हक़ हज़रत अली को था तो उसने फिर यह सिखाना शुरू किया कि हज़रत अबूबक्र हज़रत उमर हज़रत उस्मान ग़ासिब थे उन्होंने हज़रत अली का हक़ ग़सब किया. ईरानी चूंकि इन तीनों हज़रात से कुढते थे कि इन तीनों हज़रात ने ईरानियों की हज़ार साला हुकूमत ममिलया मेट कर दी है, उसने इसे बड़ी आसानी से क़ुबूल कर लिया. ईरानी चूंकि एक बहुत चालाक क़ौम थी इस लिये खुलकर सामने आने के बजाय बहुत पोशीदा एहतियात के साथ अपनी इस तेहरीक को चलाया. इसके लिये उनहोंने बुनियादी क़ाइदे बना लिये. एक कत्मान यानी अपने अक़ीदे को छुपाए रखना और जबतक मुकम्मल ऐतिमाद न हो जाए किसी पर ज़ाहिर न करना. दूसरे तक़ैय्या कि अपने अक़ीदे के ख़िलाफ़ ज़ाहिर करना. राफ़िज़ी और शीअह की बुनियाद यही चीज़ है. फिर बाद में चालाक ईरानियों ने अपने मज़हब में बहुत सी बातें दाख़िल कर लीं मसलन यह कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मूमिन नहीं हो सकता जबतक हज़रत अली और क़यामत तक आने वाले बारह इमामों को बरहक़ न माने. क़ुरआने मजीद को पहले वाले तीनों ख़ुलफ़ा ने घटा दिया है, हज़रत अली गौर बारह अइम्मा के बारे में जो आयतें थीं उनको

निकाल दिया और इस क़ुरआन में भी कुछ रद्दो बदल किया, तरतीब बदल दी. फिर इसके बाद इन लोगों ने नई नई हज़ारों हदीसें गढ़ लीं और इस सिलसिले में बहुत मोटी मोटी किताबें लिखीं.

पहले दौर में इन में खुद मुख्तलिफ़ फ़िर्क़े पैदा हुए जो खुद आपस में लड़ते भिड़ते रहते थे फिर बाद में इस्ना अशरी या इमामियह नाम से उनकी अकसरियत मुत्तफिक़ हो गई और उनके बीसियों फ़िर्क़े नापैद हो गए. उनके अब चार फ़िर्क़े मौजूद हैं :

अव्वल - इमामियह इस्ना अशरियह : ईरान, इराक़, हिन्दुस्तान वग़ैरह में ग़ालिब अकसरियत इसी फ़िर्क़े की है.

नुसैरी : ये हज़रत अली को खुदा मानते हैं. बुनियादी तौर पर और दीगर ऐतिक़ादात व अमलियात में तमाम शीओं से मुख्तलिफ़ हैं यह फ़िर्क़ा आजकल शाम में बहुत ज़ोर पकड़े हुए है. शाम के सदर हाफ़िज़ुल असद का तअल्लुक इसी फ़िर्क़े से है.

तफ़ज़ीली : दीगर ऐतिक़ादात और अमलियात में एहले सुन्नत के साथ इत्तिफ़ाक़ रखते हैं मगर इनका बुनियादी अक़ीदा यह है कि हज़रत अली तमाम सहाबा हत्ता कि तीनों खुलफ़ा से अफ़ज़ल हैं और ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ हैं. लेकिन जब खुद हज़रत अली ने तीनों को खुलफ़ा मान लिया तो वो तीनों ख़लीफ़ए बरहक़ हो गए. ये सहाबए किराम पर तबर्रा नहीं करते यानी उन्हें गालियां नहीं देते.

दाऊदी बोहरे : जो मुंबई में रहते हैं दीगर शीओं से बहुत से अक़ाइद और अअमाल में ये मुख्तलिफ़ हैं मगर अपने अक़ीदों को ऐसा छुपाते हैं कि दूसरे को हवा भी नहीं लग पाती. इन चार के अलावा शीओं की मुख्तलिफ़ पार्टियां और भी हैं मसलन आग़ा ख़ानी, ख़ोजा, बाबी. ये बहुत मेहदूद हैं और अपने अक़ाइद को इतना खुफ़ियह रखे हुए हैं कि बावुजूद कोशिश के कुछ भी मअलूम न हो सका.

मोअतज़िलह : एहले सुन्नत के मुखालिफ़ फ़िर्क़ों में मोअतज़िलह दीगर फ़िर्क़ों के बनिस्बत तअदाद में भी ज़ियादा रहे और कई सदी तक बाक़ी रहे. इनमें बहुत नामवर एहले इल्म और साहिबे तस्नीफ़ व ज़ीअसर अफ़राद गुजरे हैं . इनका ज़ोर इतना बढ़ा कि बनी अब्बास के बहुत से शहनशाहों ने भी इनका मज़हब क़ुबूल कर लिया मसलन मामून, मुतवक्किल, मोअतसिम

वग़ैरह. ये हुकूमत के बड़े बड़े ओहदों पर फ़ाइज रहे. अल्लामा जारुल्लाह ज़मख़्शरी तफ़सीरे कश्शाफ़ के मुसन्निफ़, अबू यअकूब सकाकी मिफ़ताहुल उलूम के मुसन्निफ़, जाहिज़ वग़ैरह जैसे इल्म वाले मोअतज़िली थे. इस फ़िर्के की बुनियाद दूसरी सदी हिजरी के शुरु ही में पड़ गई थी. इस फ़िर्के का बानी वासिल इब्ने अता (वफ़ात 131 हिजरी-748 ईसवी) था. यह बहुत से अक़ाइद में एहले सुन्नत के मुख़ालिफ़ हैं. चन्द इख़्तिलाफ़ात ये हैं :

एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि इन्सान मूमिन होगा या काफ़िर, बीच में कोई दर्जा ऐसा नहीं कि एक शख़्स न मूमिन हो न काफ़िर. अगरचे वह कितना ही गुनाह करे, मोअतज़िलह का अक़ीदा यह है कि जो मुसलमान गुनाह करे वह न मूमिन है न काफ़िर, वह बीच के दर्जे में है. एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि जिस तरह अल्लाह तआला बन्दों का ख़ालिक़ है उसी तरह उनके अफ़आल का भी ख़ालिक़ है और बन्दे कासिब हैं. बन्दों को यह कुव्वत है कि वो अपने इख़्तियार से जो चाहें करें मगर अफ़आल को पैदा अल्लाह तआला ही करता है यानी अल्लाह तआला ख़ालिक़ है और बन्दे उसके कासिब हैं. इसके बरख़िलाफ़ मोअतजिलह का अक़ीदा यह है कि बन्दे अपने अफ़आल के ख़ुद ख़ालिक़ हैं अल्लाह तआला को इसमें कोई दख़ल नहीं.

एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि हर इन्सान के मरने के बाद एक ज़िन्दगी होती है जिसको बरज़ख़ी ज़िन्दगी कहते हैं इसके बरखिलाफ़ मोअतज़िलह यह कहते हैं कि मरने के बाद इन्सान मिट्टी हो जाता है उसे किसी क़िस्म की कोई ज़िन्दगी नहीं मिलती. एहलेसुन्नत का अक़ीदा यह है कि मरने के बाद क़ब्र में मूमिन और नेक इन्सानों को इनआम मिलता है, उनके लिये जन्नत की खिड़कियाँ ख़ोल दी जाती हैं, जन्नत के बिछौने बिछा दिये जाते हैं. काफ़िर और कुछ गुनाहगारों को क़ब्र में अज़ाब होता है. इसके बरखिलाफ़ मोअतज़िलह कहते हैं कि क़ब्र का इनआम और अज़ाब बातिल है.

एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि जन्नतियों को जन्नत में अल्लाह तआला का दीदार होगा. इसके बरखिलाफ़ मोअतज़िलह कहते हैं कि यह मुहाल है. इस क़िस्म के बहुत कसीर इख़्तिलाफ़ात हैं. यह फ़िर्का सदियों तक रहा मगर उलमाए एहले सुन्नत के दलाइल और उनकी कोशिशों से अब

नेस्तो नाबूद होगया लेकिन इस फ़िर्क़ की कुछ बातें इस वक़्त कुछ फ़िर्क़ों ने इख़्तियार कर ली हैं.

क़दरियह : यह फ़िर्क़ा सहाबए किराम के अख़ीर दौर में पैदा हो चुका था. यह फ़िर्क़ा तक़दीर का मुन्किर था. एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने अज़ली क़दीम इल्म से हर बन्दे के बारे में जानता था कि मूमिन होगा या काफ़िर, नेक होगा या बद. अमीर होगा या ग़रीब वग़ैरह वग़ैरह. इसी के मुताबिक़ उसने लौहे मेहफ़ूज में फ़िरिश्तों से लिखवा दिया. लौहे मेहफ़ूज एक बहुत बड़ा दफ़्तर समझ लीजिये. दुनिया में जो कुछ होता है या क़यामत तक होने वाला है सब इसमें लिखा हुआ है. इसमें रद्दो बदल नहीं हो सकता. दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसी के मुताबिक़ हो रहा है. इसके ख़िलाफ़ होना मुहाल है. क़दरियह इसके मुन्किर हैं वो कहते हैं कि इन्सान अपनी सलाहियत, अपनी मेहनत और अपनी कोशिश से तरक़्क़ी करता है या उसमें कमी की वजह से तनज़्ज़ुली पाता है, अमीर होता है या ग़रीब होता है, मूमिन होता है या काफ़िर होता है, हर हाल में उसकी मेहनत व कोशिश ही को दख़ल है.

जब्रियह : यह फ़िर्क़ा भी पहली सदी हिजरी के आख़िर में पैदा हो चुका था. एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि अगरचे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल तमाम बन्दों का और उनके अफ़आल का ख़ालिक़ है मगर उसने बन्दों को कुछ क़ुदरत और इख़्तियार भी दे रखा है उसने इन्सान को समझ दी है. पढ़ने लिखने की क़ुव्वत दी, अच्छे बुरे के परखने की क़ुव्वत दी और परखने के लिये अक़्ल दी. इन्सान के अअज़ा में हरकत की क़ुव्वत दी. इन्सान अपनी सवाबे दीद से मज़हब इख़्तियार करता है, चलता फिरता है. वह चाहे तो मस्जिद में नमाज़ के लिये जाए, वह चाहे तो शराबखाने में शराब पीने के लिये जाए. इसके बरखिलाफ़ जब्रियह यह कहते हैं कि बन्दा मजबूरे महज़ है जिस तरह रअशा (कपकपी) वाले के हाथ पाँव सर वग़ैरह बेइख़्तियार हिलते डुलते हैं हालांकि रअशा का मरीज़ उन्हें हिलाना नहीं चाहता, इसी तरीक़े से हर बन्दा मजबूरे महज़ है वह अपने इख़्तियार से कुछ भी नहीं कर सकता.

मर्जियह : यह फ़िर्क़ा भी दूसरी सदी हिजरी में पैदा हो चुका था. एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि जो इस्लाम की बुनियादी बातों को हक़ माने उसके बावुजूद कोई गुनाह करे तो वह जहन्नम का मुस्तहिक़ है अपने

गुनाहों की सज़ा में वह कुछ दिन जहन्नम में रहेगा मगर यह कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उसे मआफ़ फ़रमा दे. इसके बरखिलाफ़ मर्जियह यह कहते हैं कि मुसलमान को गुनाह कोई ज़रर नहीं पहुंचा सकता.

कुरामतह : इराक़ के मशहूर शहर वासित में एक बस्ती कुरमतह है वहाँ 257 हिजरी में हमदान नामी एक शख़्स पैदा हुआ उसने एक नए मज़हब की बुनियाद रखी उसका भी अस्ल रिश्ता इस्माइली राफ़ज़ियों से था. अपने आपको मुसलमान कहता था. यह बहुत ही ख़तरनाक फ़िर्क़ा था. यह खुफ़िया खुफ़िया अपनी तेहरीक चलाता था अपने आपको मुसलमान कहता था मगर कुरआन व हदीस के वो मआनी बताता था जो ज़ाहिर के बिल्कुल ख़िलाफ़ और एच-पेच से साबित होते थे. मसलन वुज़ू के मअनी इमामे वक़्त की महब्बत बताता था और तयम्मुम का मअना यह बताता था कि इमाम जब ग़ाइब हो तो उसकी इताअत में कुछ ढील दी जाए. ज़कात के मानी यह बताता था कि जो बातें दीन की हैं उन्हें जान कर अपनी ज़ात को साफ़ सुथरा रखा जाए. यह फ़िर्क़ा बहुत ज़ोर पकड गया. हाजियों को लूटता था, मककए मुअज़्ज़मह पर क़ाबिज़ हो गया. काबा शरीफ़ का वह मुक़द्दस पत्थर जिसे हजरे असवद कहते हैं उखाड़ कर ले गया था. इसके आदमी तक़ैय्या करके बड़े उलमा व मशायख़ और हुककाम के यहाँ रुसूख हासिल करते फिर उन्हें ख़त्म कर देते. लेकिन फिर एक सदी में सलातीने इस्लाम ने इनको बिल्कुल ही ख़त्म कर दिया.

नज्दी : यह फ़िर्क़ा बारहवीं सदी के अख़ीर और तेरहवीं सदी के शुरू में ज़ाहिर हुआ. इस फ़िर्के का बानी मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नामी एक शख़्स है जो नज्द की एक बस्ती ऐनिय्यह में पैदा हुआ था इसके बाप दादा पीरी मुरीदी करते थे जिसकी वजह से इसके ख़ानदान का नज्द में काफ़ी असर था. इसने दरइय्यह के हाकिम मुहम्मद बिन सऊद से अपनी लड़की ब्याही और उसको अपना दामाद बना लिया. फिर उसको साथ लेकर तलवार के ज़ोर से अपने फ़िर्के को फैलाना शुरू किया. पहले आस पास के छोटे छोटे इलाक़ों को ज़ेर किया फिर नज्द से हिजाज़ तक क़ाबिज़ हो गया. उस वकत हिजाज़ पर तुर्कों की हुकूमत थी मगर उन दिनों तुर्क बरतानियह, जर्मनी के साथ जन्ग में उल्झे हुए थे इस लिये इब्ने सऊद ने आसानी से हिजाज़ पर क़ब्ज़ा कर लिया और वहाँ के हज़ारहा बाशिन्दों को क़त्ल किया

फिर जब तुर्कों को इत्मीनान मिला तो तुर्कों ने इनको हिजाज़ ही नहीं बल्कि नज्द से भी निकाल बाहर किया. फिर 1814 ईसवी की जन्ग के बाद तुर्क अपने मेहदूद इलाक़े में रह गए और हिजाज़, शाम, मिस्र वग़ैरह के लोगों ने अपनी अपनी हुकूमतें क़ाइम कीं तो बरतानियह की इम्दाद से अब्दुल अज़ीज़ बिन सऊद ने फिर पूरे नज्द व हिजाज़ पर क़ब्ज़ा कर लिया और तुर्कों को निकाल बाहर कर दिया. इनको वहाबी कहा जाता है. इनकी मज़हबी किताब किताबुत्तौहीद है जो इब्ने अब्दुल वहाब ने लिखी है. इस फ़िर्के के बुनियादी अक़ाइद ये हैं :

(१) सिवाए उनके (वहाबियों के) पूरी दुनिया के मुसलमान काफ़िर मुश्रिक हैं उनसे जिहाद करना उनको क़त्ल करना उनके मुल्कों को लूटना बहुत बड़े सवाब का काम है.

(२) एहले सुन्नत का यह अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ने अम्बिया व औलिया को यह कुव्वत बख़्शी है कि लोगों की मदद करें. यह क़ुव्वत उन्हें ज़िन्दगी में भी हासिल है और फ़ौत होने के बाद भी हासिल रहती है. नज्दी वहाबी यह कहते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के अलावा किसी नबी वली से मदद मांगना शिर्क है.

(३) तमाम एहले सुन्नत का अक़ीदा है कि अम्बिया औलिया क़यामत के दिन गुनाहगारों की शफ़ाअत करेंगे. वहाबी नज्दी शफ़ाअत के मुन्किर हैं.

(४) इमाम एहले सुन्नत व जमाअत मीलाद व फ़ातिहा, उर्स वग़ैरह करते हैं, वहाबी नज्दी इन सबको हराम व गुनाह कहते हैं.

इन मज़्कूरह बाला फ़िर्क़ों के अलावा बहुत से छोटे छोटे फ़िर्के पैदा हुए जो मेहदूद दायरे में रह कर चन्द दिन बाद फ़ना हुए.

हिन्दुस्तान के मौजूदा फ़िर्के :

वहाबी : यह फ़िर्क़ा हिन्दुस्तान में नज्द से आया. इसकी बुनियाद मुहम्द बिन अब्दुल वहाब नज्दी की किताब अत्तौहीद पर है. इस फ़िर्के के बानी मौलवी इस्माईल बिन अब्दुल ग़नी बिन वलीउल्लाह देहलवी हैं. शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे देहलवी ११वीं सदी के आख़िर में हिन्दुस्तान के बहुत ज़बरदस्त आलिम थे और बहुत बड़े पीर भी. उनका असर पूरे हिन्दुस्तान पर था बल्कि हिन्दुस्तान के बाहर भी था. उन्हीं के साहिबज़ादे शाह अब्दुल

अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी हैं जो देहली के बहुत बड़े मरकज़ी आलिम थे.

मौलवी इस्माईल देहलवी चूंकि शाह वलीउल्लाह का पोता और शाह अब्दुल अज़ीज़ का भतीजा और शागिर्द भी था, अवाम में बुज़ुर्ग परस्ती आम है जिसके नतीजे में अपने उस्ताद और पीर की औलाद को पीरों की तरह मानने का जज़बा मौजूद है. इसकी वजह से मौलवी इस्माईल देहलवी के मानने वालों की भी अच्छी ख़ासी तअदाद देहली और इसके इलाक़ों में थी. चूंकि इनके वालिदैन का बचपन में ही इन्तिक़ाल हो गया था इस लिये इनकी कमाहक़्क़हू तरबियत नहीं हो सकी. साथ ही साथ फ़ितरी तौर पर मनचले और शोख़ और नई नई बातों के गिरवीदा थे. यह वह दौर था कि मुग़लिया सल्तनत दम तोड़ रही थी. अंग्रेज़ पूरे तौर पर उसको अपनी मुट्ठी में ले चुके थे. सिर्फ़ देहली पर मुग़ल शहन्शाह की हुकूमत रह गई थी वह भी बराए नाम. उनकी हैसियत अंग्रेज़ों के वज़ीफ़ा ख़्वार की थी. पूरे पंजाब पर सिख क़ाबिज़ हो चुके थे. अल्बत्ता पिशावर और सरहद के लोग आज़ाद थे. मौलवी इस्माईल के अन्दर बादशाह बनने का ख़ब्त पैदा हुआ, उन्हों ने पहले एक किताब लिखी जिसका नाम तक़वियतुल ईमान रखा इसमें उन्हीं अक़ाइद को तफसील के साथ बयान किया जो इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी की किताब **अत्तौहीद में हैं.**

इन अक़ाइद को फैलाने के लिये मुसलमानों में दो तेहरीकें चलाईं एक यह कि अल्लाह ही को मान औरों को मत मान. औरों को मानना ख़ब्त है. दूसरे यह कि क़ुरआने मजीद समझने के लिये बहुत ज़ियादा इल्म की ज़रूरत नहीं. अरबी ज़बान जान लेना काफ़ी है. इसलिये उनको ज़ियादा इल्में दीन हासिल करने की ज़रूरत नहीं. इससे वह यह फ़ाइदा हासिल करता था कि हर अरबी-दाँ ख़ुद क़ुरआने मजीद को समझे. क़ुरआने मजीद के वो मआनी व मतालिब जो सहाबए किराम और उनके बाद आने वाले मुसलमानों ने बताए हैं उनको मानने की ज़रूरत नहीं.

तक़वियतुल ईमान में मौलवी इस्माईल देहलवी ने अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम की शान में बहुत से नाज़ेबा अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये. मसलन वो ज़र्रए नाचीज़ से कमतर हैं, आजिज़ो नादान हैं, ज़ियादा से ज़ियादा हमारे बड़े भाई की तरह हैं. बल्कि यह भी एक जगह लिख दिया कि हर मख़्लूक बड़ा हो या छोटा अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़लील

है. एक जगह लिख दिया कि जिसका नाम मुहम्द या अली हो वह किसी चीज़ का मालिक व मुख्तार नहीं. एक जगह रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में लिखा कि वह मर कर मिट्टी में मिल गए. तमाम एहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा है कि रसूलुल्लाह ﷺ और दूसरे अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम क़यामत के दिन अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की बारगाह में शफ़ाअत फ़रमाएंगे. इन्होंने जगह जगह इसका भी इन्कार किया. तक़वियतुल ईमान के बारे में खुद इनका अपना ख़याल यह था कि इस से शोरिश होगी, लड़ाई झगड़ा होगा. चुनान्चे इनके गुमान के मुताबिक़ तक़वियतुल ईमान के छपने के बाद लड़ाई और झगड़ा और शोरिश शुरू हुई. उस वक़्त के तमाम उलमाए एहले सुन्नत ने इसका रद लिखा है.

इनके चन्द अक़ाइद ये हैं :

☆ खुदाए तआला झूट बोल सकता है. (रिसाला यकरोज़ी, सफ़हा: १४५)

☆ अल्लाह तआला को ग़ैब का इल्म हर वक़्त नहीं रहता है बल्कि जब चाहता है ग़ैब की बात दरियाफ़्त कर लेता है. (माख़ूज : तकवियतुल ईमान सफ्हा :२६)

☆ हर मख़लूक बड़ा हो या छोटा (नबी हो या वली) वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़लील है. (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा: १९)

☆ अपनी औलाद का नाम अबदुन्नबी, अब्दुर रसूल, अली बख़्श, नबी बख़्श, पीर बख़्श, गुलाम मुहियुद्दीन, गुलाम मुईनुद्दीन रखना शिर्क है. (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा: ८)

☆ सब अम्बिया और औलिया अल्लाह के सामने एक ज़र्रए नाचीज़ से भी कमतर हैं. (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा: ७२)

☆ रसूलुल्लाह को (ग़ैब की) कया ख़बर ? (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा: ७५)

☆ रसूले खुदा के चाहने से कुछ नहीं होता. (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा :७९)

☆ जिसका नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख्तार नहीं. (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा: ५२)

☆ रसूल का ख़याल नमाज़ में लाना अपने बैल और गधे के ख़याल

में डूब जाने से बदरजहा बदतर है. (सिराते मुस्तक़ीम)

☆ अल्लाह के सिवा किसी को न मान. (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा : २३)

☆ औलिया व अम्बिया व इमामज़ादा, पीर व शहीद यानी जितने अल्लाह के मुकर्रब बन्दे हैं वो इन्सान ही हैं और बन्दए आजिज़ और हमारे भाई मगर अल्लाह ने उनको बड़ाई दी वो बड़े भाई हुए. (तक़वियतुल ईमान, सफ़हा : ७८)

इन इबारतों से मौलवी इस्माईल की तवक़्क़ोअ सौ फ़ी सद पूरी हो रही है.

ख़ुद उनके भतीजे मौलाना मूसा, मौलाना मख़सूसुल्लाह ने तक़वियतुल ईमान का रद लिखा जिसका नाम मुईदुल ईमान है. उस ज़माने में देहली के सबसे बड़े आलिम अल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी ने भी इसका रद लिखा जिसका नाम तहक़ीक़ुल फ़तवा है.

अल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी वह बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने १८५७ के हादसे में देहली और लखनऊ दोनों जगह अंग्रेजों से बाक़ायदा जंग की जिसकी सज़ा में जज़ीरए अन्दमान जिला वतन कर दिय गए वहीं उनका इन्तिक़ाल भी हुआ वहीं उनका मज़ार भी है. उस वक़त के उलमाए एहले सुन्नत की मुत्तहिदा मुख़ालिफ़त के नतीजे में मौलवी इस्माईल देहलवी का मज़हबे वहाबियत पनप न सका और मेहदूद दायरे में रह गया.

फिर कुछ दिनों के बाद अंग्रज़ों से इजाज़त लेकर सिखों के ख़िलाफ़ जिहाद की तहरीक चलाई, इसके लिये पूरे मुल्क का दौरा किया, जिहाद के नाम पर मौलवी इस्माईल के साथ एक भीड़ जमा हो गई और यह इस भीड़ को लेकर सूबए सरहद पहुंचे वहाँ उस वक़त मुख़्तलिफ़ सरदारों की मुन्तशिर हुकूमतें थीं. सरहद के जिन सरदारों ने इनका मज़हब कुबूल किया उनको अपने साथ लिया वरना उन्हें तबाह व बर्बाद कर दिया. यहाँ तक कि वहाँ के कुछ सरदार जिनकी सिखों से मुसलसल जन्ग चली आ रही थी सुलह कर ली और मौलवी इस्माईल बाला कोट में क़त्ल कर दिये गए.

ग़ैर मुक़ल्लिद : देहली में कुछ लोगों ने इनकी तहरीक को क़ुबूल कर लिया था जिन में एक मशहूर आलिम नज़ीर हुसैन देहलवी हैं. यह बहुत क़ाबिल ज़हीन आलिम थे. इन्होंने अपने तौर पर फ्री (बिला मुआवज़ा)

हदीस पढ़ाना शुरू किया और अपने शागिर्दों को वहाबियत की तल्क़ीन की. जो अक़ाइद नज्दी वहाबियों के थे वही अक़ाइद इनके भी थे. बुनियादी तौर पर इन्हों ने अपने शागिर्दों को यह समझाया कि इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई वग़ैरह ने क़ुरआन व हदीस से जो मसाइल निकाल कर फ़िक़्ह की किताबों में लिखे हैं वो अकसर ग़लत हैं. हदीस की किताबें मौजूद हैं. हमें चाहिये कि हम बराहे रास्त क़ुरआन व अहादीस से मसाइल निकालें. ये लोग अपने आपको एहले हदीस कहते हैं और उर्फे आम में इन्हें ग़ैर मुकल्लिद कहा जाता है. इन से एहले सुन्नत का सैंकड़ों मसाइल में इख़्तिलाफ़ है जिसकी तफ़सील बहुत तवील है.

देवबन्दी : मौलवी इस्माईल ही से मुतास्सिर होकर कुछ लोग अक़ीदे में इनके साथ थे लेकिन अमली तौर पर वो अपने आपको हनफ़ी कहते थे. यानी अमलियात में हज़रत इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा के मुकल्लिद थे और तक़लीद को वाजिब जानते थे. ऐसे ही लोगों से नानौता ज़िला सहारनपुर के मौलवी क़ासिम (खुद साख़्ता) बानी मदरसए देवबन्द ने तअलीम हासिल की. फ़राग़त के बाद देवबन्द में एक मदरसे को दारुल उलूम बनाने की तहरीक चली जो वहाँ के मक़ामी लोगों ने क़ाइम किया था. यह मदरसा देवबन्द की एक मस्जिद में जिसका नाम छत्ता की मस्जिद है क़ाइम हुआ था. जब मदरसा जम गया तो मौलवी मुहम्मद क़ासिम देवबन्द पहुंच गए और मदरसे को अपने हाथ में ले लिया और मौलवी रशीद अहमद गन्गोही ने अपने वतन गन्गोह में ख़ान्क़ाह क़ाइम कर ली और पीरी मुरीदी का सिलसिला शुरू कर दिया. इस तरह वहाबियत की दूसरी शाख़ वुजूद में आई. ये लोग अक़ाइद में वहाबियों के हमनवा हैं. देवबन्दी और ग़ैर मुकल्लिदीन में अक़ीदे के ऐतिबार से कोई इख़्तिलाफ़ नहीं. इख़्तिलाफ़ है तो सिर्फ़ यह कि ग़ैर मुकल्लिद किसी इमाम की तक़लीद को शिर्क समझते हैं और देवबन्दी तक़लीद को वाजिब जानते हैं और अपने आपको हनफ़ी कहते हैं. ग़ैर मुकल्लिद पीरी मुरीदी को हराम और बिदअत कहते हैं और देवबन्दी बहुत धूम से पीरी मुरीदी करते हैं. इन लोगों का एहले सुन्नत से अक़ीदे का इख़्तिलाफ़ यह है कि :

तमाम एहले सुन्नत का अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला ने अम्बिया को खुसूसन हज़रत मुहम्मद ﷺ को इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया और देवबन्दी यह कहते हैं कि अल्लाह तआला के अलावा किसी के लिये इल्मे ग़ैब

साबित करना शिर्क है.

तमाम एहले सुन्नत मीलाद, नियाज़, उर्स, फ़ातिहा करते हैं और देवबन्दी इसको हराम व बिदअत कहते हैं. और भी छोटे छोटे बहुत से इख़्तिलाफ़ात हैं. ख़ास देवबन्दियों के मज़ीद अक़ाइद ये हैं :

(१) रसूलुल्लाह ﷺ इस मअनीकर ख़ातिमुल अम्बिया नहीं कि आप सब में आख़िरी नबी हैं. अगर आपके ज़माने में या आपके ज़माने के बाद कोई नबी पैदा हो जाए तो ख़ात्मीयते मुहम्मदी में कुछ फ़र्क़ नहीं आएगा. आप बदस्तूर ख़ातिमुल-अम्बिया हैं (तहज़ीररुन्नास)

(२) शैतान का इल्म रसूलुल्लाह ﷺ से ज़ियादा है. (बुराहीने क़ातिअह)

(३) (रसूलुल्लाह ﷺ के इल्मे ग़ैब के तअल्लुक से) ऐसा इल्मे ग़ैब हर ज़ैद व अम्र बल्कि हर सबी (बच्चा) मजनून (पागल) बल्कि जमीअ हैवानात (जानवरों) व बहाइम (चौपायों) के लिये भी हासिल है. (हिफ़्ज़ुल ईमान)

(४) अल्लाह तआला झूट बोल सकता है. हर काम जो बन्दे कर सकते हैं वह भी कर सकता है.

नेचरी : अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्स्टी के बानी सर सैय्यिद अहमद ख़ाँ अंग्रेज़ों से बहुत क़रीब थे और अंग्रेज़ों से काफ़ी मुतास्सिर भी. अंग्रेज़ों ने इस्लाम पर जो ऐतिराज़ात किये हैं उनसे मुतास्सिर होकर उन्होंने एक नए मज़हब की बुनियाद डाली जिसका बुनियादी अक़ीदा यह है कि जो बातें क़ुरआन व हदीस में मज़कूर हैं अगर हमारा नेचर क़ुबूल करे तो मानें वरनाउनके ऐसे मआनी बयान करें जिसे हमारा नेचर क़ुबूल करे. मसलन फ़िरिश्तों का कोई वुजूद नहीं, चीज़ों में जो क़ुदरती ख़ैर की क़ुव्वत होती है उसी का नाम फ़िरिश्ता है. जन्नत कोई घर नहीं जो बतौर इनआम मुसलमानों को मिलेगा बल्कि अपनी नेकियों पर ख़ुश होने का नाम है. दोज़ख़ किसी जगह का नाम नहीं बल्कि अपनी बुराइयों पर कुढने का नाम दोज़ख है. उन्होंने क़ुरआन की तफ़सीर लिखी जिसमें इन सब बातों को तफ़सील से लिखा है.

यही वजह थी कि उनके ज़माने में तमाम मुसलमानों ने उनसे अक़ीदे की बुनियाद पर बेज़ारी ज़ाहिर की जिसके नतीजे में नेचरी फ़िर्क़ा मुनज़्ज़म नहीं हो सका फिर भी हज़ारों मुसलमान कहलाने वाले उन्हीं के मुताबिक़

ऐतिक़ाद रखते हैं.

क़ादियानी : पंजाब ज़िला गुरदासपुर में एक बस्ती क़ादियान है वहाँ एक शख़्स मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी पैदा हुआ. उसने मौलवी मुहम्मद क़ासिम, देवबन्दी सरग़ने की किताब तहज़ीरुन्नास पढ़कर यह सोचा कि रसूलुल्लाह ﷺ के बाद किसी नबी का पैदा होना ख़ातिमुल अम्बिया होने के मनाफ़ी नहीं तो उसने नबुव्वत का दअवा कर दिया कि मैं ज़िल्ली और बरूज़ी नबी हूँ और यह कहा कि हदीसों में जो आया है कि ईसा इब्ने मरयम क़यामत के क़रीब आएंगे , वह मैं हूँ. इसके अलावा और भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ अक़ीदे ईजाद किये. चूंकि आदमी बहुत ज़हीन पढ़ा लिखा और चालाक था इस लिये उसने ज़्यादा तर अंग्रेज़ीदाँ तब्क़े को अपना हमनवा बनाया और बड़ी ख़ूबसूरती के साथ उसने अपनी तहरीक चलाई जिसके नतीजे में हिन्दुस्तान के हज़ारों आदमी क़ादियानी हो गए और अब भी मौजूद हैं.

एहले कुरआन : एक शख़्स अब्दुल्लाह नामी पैदा हुआ. यह अरबी और अंग्रेज़ी दोनों ज़बानों का बहुत ज़बरदस्त माहिर था. उसने यह कहा कि अहादीस मुअतबर नहीं. इसलिये कि आज जो हदीस की किताबें मिलती हैं वो रसूलुल्लाह ﷺ के विसाल के एक सदी गुजरने के बाद लिखी गई हैं और ये किताबें लिखने वाले सब ईरानी हैं जिन्होंने अपने जी से गढ़कर हदीसों के दफ़तर तैयार किये. हाँ, कुरआने मजीद मेहफ़ूज़ है. हम सिर्फ़ कुरआन को हक़ मानते हैं. जो कुछ हमें क़ुरआन से समझ में आए वही अक़ीदा रखेंगे और उसी पर अमल करेंगे. हदीसों का और उलमाए इस्लाम ने जो कुछ लिखा है उसका कोई ऐतिबार नहीं. चुनान्चे ये लोग बजाय पांच वक़्त के सिर्फ़ दो वक़्त नमाज़ पढ़ते हैं. इनकी नमाज़ का तरीक़ा भी आम मुसलमानों से अलग थलग है. इस फ़िर्के के लोग बहुत थोड़े कहीं कहीं पाए जाते हैं.

मौदूदी : इस फ़िर्के के बानी अबुल अअला मौदूदी साहिब हैं. ये लोग अपने आपको जमाअते इस्लामी कहते हैं. यह फ़िर्का भी हक़ीक़त में वहाबियत की ही एक शाख़ है. ये लोग देवबन्दियों की तरह इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी और इस्माईल देहलवी को अपना इमाम और पेशवा मानते हैं और इब्ने अब्दुल वहाब की किताब किताबुत्तौहीद और मौलवी इस्माईल देहलवी की किताब तक़वियतुल ईमान को अपने मज़हब की बुनियादी

किताब मानते हैं. मज़ीद बरआँ इनका इख़्तिलाफ़ ग़ैर मुक़ल्लिद और देवबन्दियों से भी बहुत बातों में है.

अबुल अअला मौदूदी साहिब सहाबा की शान में बहुत गुस्ताख़ हैं. अपनी किताब ख़िलाफ़त व मलूकियत में इन्हों ने सहाबए किराम पर बेजा, नारवा हमले किये हैं. नीज़ कुरआने मजीद के बअज़ क़वानीन में तर्मीम के भी क़ाइल हैं. मसलन चोरी की सज़ा में हाथ काटना या ज़िना की सज़ा में संगसार करना, अगरचे वह ये तर्मीम मेहदूद दायरे में चाहते हैं जिसकी वजह से इनका इख़्तिलाफ़ देवबन्दियों से भी है और ग़ैर मुकल्लिदों से भी है. एहले सुन्नत से तो है ही. इन्होंने भी अंग्रेज़ी तब्क़े को ज़ियादा तर अपना हमनवा बनाया है. इस वजह से यह जमाअत बहुत मुनज़्ज़म और मज़बूत है लेकिन मुसलमानों की अकसरियत ख़्वाह वो अवाम हों या उलमा व मशायख़ सब इन से बेज़ार हैं.

नियाज़ी : एक शख़्स शमअ नियाज़ी पैदा हुआ जिसका रूजहान शीइय्यत की तरफ ज़्यादा था. उसने यह कहा कि काबा बैतुल्लाह नहीं है बल्कि वह हज़रते आदम की क़ब्र है इसी लिये उसका तवाफ़ किया जाता है और हज किया जाता है. ये लोग तअज़िया दारी वग़ैरह बहुत धूम धाम से करते हैं. शीओं से किसी तरह पीछे नहीं रहते और क़ब्र-परस्ती में बहुत आगे हैं. इस फ़िर्के के बहुत थोड़े अशख़ास कहीं कहीं ख़ाल ख़ाल पाए जाते हैं.

हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने जो फ़रमाया है कि मेरी उम्मत में तिहत्तर फ़िर्के होंगे, सिवाय एक के सब जहन्नम में जाएंगे, इसका मतलब यह है कि क़यामत तक इतने फ़िर्के होंगे और इससे मुराद बुनियादी फ़िर्के हैं वरना बुनियादी फ़िर्कों की शाख़ों को लिया जाए तो अब तक बहत्तर से ज़ाइद हो चुके हैं जिनमें अकसर फ़ना हो गए.

☆☆☆

तक़लीदे शख़्सी की शरई हैसियत

शारहे बुख़ारी मुफ़्ती मुहम्द शरीफ़ुल हक़ अमजदी रहमतुल्लाहे अलैह

तक़लीद का माद्दह क़लादह है. क़लादह के मअनी पट्टे के हैं. बाबे तफ़ईल में जाकर इसके मअनी गले में पट्टा डालने के हो गए. इस्तिलाहे शरअ में तक़लीद के मअनी उलमा ने ये लिखे :

تسلیم قول الغیر بلا دلیل.

यानी दूसरे की बात बिला दलील मान लेना. इसी को अल्लामा सम्हूदी ने अक़दुल फ़रीद में यूँ बयान फ़रमाया :

التقلید قبول القول بان یعتقد من غیر معرفة دلیل.

यानी किसी की बात दलील जाने बग़ैर इस तरह मान लेना कि उसपर ऐतिक़ाद जम जाए.

अगर दलील के ज़रिये किसी बात के हक़ होने का ऐतिक़ाद हो तो यह तक़लीद नहीं. बिला दलील महज़ क़ाइल के साथ हुस्ने ज़न की बिना पर उसकी कही हुई बात पर ऐतिक़ाद जम जाए कि चूंकि यह शख़्स अअला दर्जे का दीनदार, सादिक़, अमीन और उलूमो फुनून का माहिर फ़ाइक़ है इस लिये जो बात कहता है वह हक़ है, यही तक़लीद है.

मअमूलाते शरइय्यह से क़तए नज़र करते हुए जब हम रोज़मर्रा के हालात और अपनी तर्ज़े ज़िन्दगी पर नज़र करते हैं तो साफ़ नज़र आता है कि हम अपनी ज़िन्दगी के हर लम्हे में तक़लीद के बन्धनों में जकड़े हुए हैं. इसमें अवाम व ख़वास शहरी व देहाती हर तब्क़े के लोग मसावी हिस्सेदार हैं.

आप ग़ौर करें. एक बच्चा होश संभालते ही अपने माँ बाप, अपने मुरब्बी की तक़लीद के सहारे पर्वान चढ़ता है. एक बीमार अपने मुआलिज की तक़लीद करके शिफ़ायाब होता है. एक मुस्तग़ीस किसी क़ानूनदाँ वकील की तक़लीद करके ही अपना हक़ पाता है. रास्ते से नाबलद एक राहरौ किसी रास्ता बताने वाले की तक़लीद करके ही मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंचता है. एक नाख़ान्दा अपने मुअल्लिम की तक़लीद ही से साहिबे इल्मो फ़ज़्ल बनता है. सनअतो हिरफत से आरी शख़्स किसी माहिरे फ़न उस्ताद की तक़लीद

करके ही सनअतकार होता है. ये वो रोज़मर्रा की बातें हैं कि इनसे न तो इन्कार की कोई गुन्जाइश है और न बहस व तम्हीस की. एक बंगाली का बच्चा अपने माँ बाप को देखता है कि वो मछली भात खाते हैं तो वह कोई दलील तलब किये बग़ैर खुद भी मछली भात खाने लगता है. धोती बान्धने लगता है, बंगाली बोली सुनता है तो खुद भी बंगाली बोलने लगता है. यूँही पंजाबी का बच्चा अपने वालिदैन की आदत व ख़सलत देखकर रोटी गोश्त खाने लगता है. शलवार क़मीस पहनने लगता है. पगड़ी बान्धने लगता है, पंजाबी बोलने लगता है. यही तक़लीद है.

मकतब में एक बच्चा गया, मुअल्लिम ने बच्चे को एक हर्फ़ पर उंगली रखकर बताया कि यह अलिफ़ है, बच्चे ने बिला दलील मान लिया कि यह अलिफ़ है. दूसरे हर्फ़ पर उंगली रखकर मुअल्लिम ने बच्चे से कहा बा. बच्चे ने बिला बहस व तम्हीस इसे मान लिया कि यह बा है. कभी किसी बच्चे ने उस्ताद से यह मुताल्बा नहीं किया कि कयों पहले वाले हर्फ़ को अलिफ़ कहते हैं और दूसरे को बा. बल्कि वाक़िआ यह है कि अगर बच्चा उस वक़्त कयों और कयोंकर के चककर में फंसा तो अस्ल तअलीम से भी मेहरूम रह जाएगा.

एक मुस्तग़ीस वकील के यहाँ जाता है, अपना मुद्दआ बयान करता है, वकील उसे मशवरा देता है कि वह तअज़ीराते हिन्द की फ़लाँ दफ़ा के मातहत दअवा करे. मुस्तग़ीस बिला चूँ व चिरा वही करता है, इसी का नाम तक़लीद है.

एक मरीज़ मुआलिज के यहाँ गया, उसने मरज़ की तहक़ीक़ करके उसके लिये एक नुस्ख़ा लिखा. दुनिया का कोई मरीज़ हकीम या डॉकटर से यह बहस नहीं करता कि मेरी बीमारी का नुस्ख़ा यही कयों है. ये दवाएं किस तरह मेरा मरज़ दूर करेंगी, जो मरीज़ इस बहस में पड़ा वह अच्छा हो चुका.

आप एक मुसाफ़त तय कर रहे हैं एक चौराहे पर पहुंच कर हैरत ज़दा होकर खड़े होगए कि अब दाएं जाएं कि बाएं या सीधे आगे चले चलें. अचानक कोई मक़ामी आदमी आ गया. आप उस से सवाल करते हैं कि फ़लाँ जगह कौन सा रास्ता जाएगा? वह जिधर बताता है आप उसकी कोराना तक़लीद करते हुए बिला दलील उसी रास्ते पर चल खड़े होते हैं.

अब आप हज़रात ग़ौर करें. अगर हम तक़लीद को अपने तमद्दुन से

निकाल दें तो हमारी मईशत की गाड़ी एक इन्च आगे नहीं चल सकती. हम अपनी ज़िन्दगी के गोशे गोशे में तक़लीद के मोहताज हैं और यह एहतियाज क़ौम के हर फ़र्द को आम है. जिस तरह एक जाहिल बीमारी में डॉक्टर का, क़ानूनी ज़रूरत में वकील का, रास्ता मअलूम न होने की सूरत में रहनुमा की तक़लीद का मोहताज है, उसी तरह एक आलिम भी. और जिस तरह एक देहाती खाने पाने, बोल चाल, तअलीमो तरबियत में अपने माँ बाप, उस्ताद का मुक़ल्लिद है, उसी तरह एक शहरी भी.

अब अगर तक़लीद को हम अपने तमद्दुन से निकाल दें तो हमारी ज़िन्दगी मफ़लूज होकर रह जाएगी. ग़ौर करें. अगर बीमार मुआलिज के नुस्ख़े को इस्तेमाल करने से पहले नुस्ख़े के रमूज़ समझने के लिये बहस शुरू कर दे, शरहे अस्बाबो अलामाते क़राबादीन व मुआलिजाते नफ़ीसी के अस्बाक़ पढ़ने लगे तो वह अच्छा क्या होगा, अल्बत्ता जल्द ही दूसरे आलम का सफ़र कर बैठेगा. यूँही एक मुस्तग़ीस वकील से क़ानून की लिम समझे बग़ैर दअवा न करे तो उसका हक़ मिल चुका. जबतक वह एल० एल० बी० का निसाब पढ़ने के लाइक़ होगा, दअवे की मीआद भी ख़त्म हो जाएगी इसीलिये हर मुतमद्दिन इन्सान का इसपर इजमाअ है कि जिस फ़न का इन्सान माहिर न हो उसमें किसी माहिरे फ़न की तक़लीद करे. इसीलिये हर फ़र्द बशर किसी न किसी दूसरे फ़र्द बशर की किसी न किसी मआमले में तक़लीद करता हुआ देखा जाता है. इसका साफ़ मतलब यह हुआ कि तक़लीद हमारी ज़िन्दगी का एक जुज़्वे ला यन्फ़क है और बग़ैर तक़लीद के ज़िन्दगी बसर करना ना-मुमकिन है. जिस तरह हम अपनी ज़िन्दगी के मअमूलात में तक़लीद से मुस्तग़नी नहीं हो सकते उसी तरह दीनी मआमलात में भी तक़लीद से मफ़र नहीं. इसलिये उम्मत का इसपर इजमाअ है कि तक़लीद फ़र्ज़ है. इसकी फ़र्ज़ियत और वुजूब ऐसा क़तई है कि मुन्किरीने तक़लीद के पेशवाए अअज़म मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब को भी मेअयार में यह लिखना पड़ा :

सो जो कोई एहल ऐसे ज़िक्र का होगा अमूमन ख़्वाह कोई भी हो उसका इत्तिबाअ वक़्ते लाइल्मी वाजिब होगा. इसलिये किसी भी दीनदार या मुद्दईय्ये दीनदारी की यह हिम्मत नहीं कि वह तक़लीद की फ़र्ज़ियत से इन्कार कर सके. मआमला यह है कि अगर तक़लीद को फ़र्ज़ क़रार न दें तो

फिर दीन पर अमल मुतअज़्ज़िर और शदीद मुतअज़्ज़िर हो जाएगा.

इसका बयान यह है कि हम को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी इताअत और इत्तिबाअ का हुकम दिया है और इत्तिबाअ व इताअत मौक़ूफ है क़ुरआन व अहादीस के हुसूल पर, न सिर्फ़ हुसूल बल्कि यह भी जानने पर कि इनमें कौन नासिख़ है कौन मन्सूख है, कौन ख़ास है कौन आम है. कौन ज़ाहिर है कौन ख़फ़ी, कौन नस्स है, कौन मुश्किल, कौन मुफस्सर है कौन मुज्मल, कौन मुहकम है कौन मुताशाबेह वग़ैरह वग़ैरह. सैंकडों बातें ऐसी हैं कि जबतक इन्सान उन सब पर कामिल उबूर हासिल करके क़ुरआन व हदीस से इस्तिम्बात व इस्तिख़राज पर कामिल दस्तगाह न रखे, क़ुरआन व हदीस पर अमल नामुम्किन है. चन्द मिसालें मुलाहिज़ा करें :

सूरए बक़रह के तीसवें रूकूअ में है :

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا. (سورة بقره، پ ۲ ، آيت ۲۳۴)

यानी - और तुम में जो मरें और बीबियाँ छोड़ जाएं तो ये अपने आपको चार महीने दस दिन रोके रहें.

इसके बाद इसी सूरत के ३१ वें रूकूअ में है :

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا وَّصِيَّةً لِاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ . (سوره بقره، آيت ۲۴۰)

यानी - और तुम में जो मरें और बीबियाँ छोड़ जाएं तो उनके लिये वसिय्यत कर जाएं कि उनको साल भर का नान नफ़्का दिया जाए और घर से न निकाला जाए.

एक ही सूरत में, एक ही पारे में , एक ही मसअले के बारे में दो मुख्तलिफ़ अहकाम ऐसे मज़कूर हैं कि इन दोनों को पढ़कर आदमी चकराए कि वह किस पर अमल करे. पहली आयत से मअलूम होता है कि बेवा की इद्दत चार महीने दस दिन है और दूसरी आयत से मअलूम होता है कि बेवा की इद्दत एक साल है. अरबी ज़बान का माहिर से माहिर प्रोफ़ैसर, अरबी ज़बान पर कितना ही उबूर रखता हो, किस आयत पर अमल करना चाहिये, बता सकता है ? हरगिज़ नहीं.

और आगे बढिये. इन दोनों आयतों से साबित होता है कि बेवा ख़्वाह हामिला हो या ग़ैर हामिला, उसकी इद्दत चार महीने दस दिन या एक साल है मगर सूरए तलाक़ में हामिला औरतों की इद्दत के बारे में फ़रमाया गया :

وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ . (سوره طلاق پ ۲۸، رکوع ۱۷)

यानी - और हामिला औरतों की इद्दत यह है कि वो अपना हमल जन लें.

एक नुक़ते पर आकर सूरए बक़रह और सूरए तलाक़ की आयतों में शदीद तआरूज़ है. एक शख़्स मरा, उसकी बीवी हामिला है, तो उसकी इद्दत कया होगी ? चार महीने दस दिन या एक साल या वज़ए हमल. और सुनते चलिये, इसी सूरए बक़रह के बाईसवें रुकूअ में है :

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَانِ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ . (سوره بقره، پ ۲. رکوع ٦)

यानी - तुमपर फ़र्ज किया गया कि जब तुम में से किसी को मौत आए अगर वह कुछ माल छोड़े तो माँ बाप और क़रीब के रिश्ते दारों के लिये वसिय्यत करे, परहेज़गारों पर वाजिब है. लफ़्ज अक़रबीन आम है, औलाद, भाई बहन दादा दादी वग़ैरह सबको शामिल है. इसका साफ़ मतलब यह हुआ कि शरीअत ने किसी का कोई हिस्सा मुकर्रर नहीं फरमाया है. यह मूरिस के सवाबे दीद पर है जिसके लिये जितना चाहे वसिय्यत कर जाए,उसकी वसिय्यत के मुताबिक़ रिश्ते दारों हत्ता कि माँ बाप को भी हिस्सा मिलेगा मगर सूरए निसा का दूसरा रूकूअ तिलावत करें. उसमें माँ बाप, मियाँ बीवी, बेटी, पोती पोता वग़ैरह के शरई सिहाम की तअय्युन तफ़सील के साथ की गई है. अरबी ज़बान का कोई कितना ही माहिर कयों न हो, महज़ ज़बानदानी से वह इस गुत्थी को हरगिज़ हरगिज़ नहीं सुलझा सकता.

ये चन्द मिसालें मैंने कुरआने मजीद से तक़रीबे फ़हम के लिये पेश कर दी हैं अगर इस्तक़सा किया जाए तो एक दफ़तर तैयार हो जाए. अहादीस में इस क़िस्म के इशकालात की कोई गिन्ती नहीं. अब अगर तक़लीद को दर्मियान से निकाल दिया जाए तो फ़र्जे ऐन कि हर मुसलमान इन तमाम तफ़सीलात को जाने जिन से इस क़िस्म के इशकालात हल हो सकें.अब अगर

हर मुसलमान को इन तमाम तफसीलात के जानने का मुकल्लिफ़ किया जाए तो :

अव्वलन : यह मुमकिन नहीं कि हर शख़्स उन तमाम उलूम को हासिल कर सके जो मुज्तहिदीन के लिये ज़रूरी और लाज़िम हैं.

सानियन : अगर बिल्फ़र्ज ये तमाम उलूम हासिल भी हो जाएं तो तफ़क्कुह फ़िद दीन जो ख़ालिस खुदादाद और वहबी सलाहियत है, सबके बल्कि अकसर को कहाँ नसीब?

और हज़रत इमाम अअमश क़ुदस सिर्रहू ने बड़ी सफ़ाई और दयानतदारी के साथ इमामे अअज़म रदियल्लाहो अन्हु के तफ़क्कुह फ़िद दीन का ऐतिराफ़ करते हुए खुद हज़रत इमाम साहिब से फ़रमाया :

نحن الصيادلة وانتم الاطباء.

यानी - हम दवा फ़रोश हैं और तुम लोग तबीब हो.

सालिसन : चलिये तफ़क्कुह फ़िद दीन भी हासिल हो गया, अगर वो तमाम उलूम व फुनून जो लवाज़िमे इज्तिहाद हैं, हासिल हो जाएं तो दीन दारी और लिल्लाहियत का आज कितना फ़ुक़दान है, इसे कौन नहीं जानता. हाल यह है कि बहुत से हनीफ़ए दौराँ और नोअमाने ज़माँ बनने वाले जोशे अदावत और वफ़ोरे महब्बत और इफराते अक़ीदत की बुनियाद पर अपने नोके क़लम से कया कया गुल खिला गए, इसकी थोड़ी से सैर करते चलें-

(१) सारे देवबन्दियों और ग़ैर मुकल्लिदीन ने इस्माईल की ईज़ाहुल हक़ की एक इबारत पर उसे काफ़िर गुमराह होने का फ़तवा दिया मगर जब मअलूम हुआ कि यह तो हमारे ताइफा के इमाम की इबारत है तो सबको साँप सूंघ गया.

(२) अभी कुछ दिन की बात है कि मुफती देवबन्दी मौलवी मेहदी हसन ने जनाब क़ारी तैय्यब साहिब की एक इबारत पर फ़तवा दिया कि इस में इल्हाद है मगर जब मअलूम हुआ कि यह तो हमारे आक़ा की इबारत है तो फ़तवा बदल गया.

(३) क़ासिम नानौतवी साहिब के इसी शेअर :

जो छू भी दे सगे कूचा तिरा जो उसकी नअश
यक़ीं है ख़ुल्द में इब्लीस का बनाएं मज़ार

पर पूरी बिरादरी ने वो वो फ़तवे दिये कि मज़ा आगया मगर जब मअलूम हुआ कि यह हमारे पीरे मुगाँ का शेअर है तो तावील के नाम पर शाहनामा क हफ़्तख़्वाँ का बाब खोल दिया गया.

(४) गन्गोही को बकरे के खुसिये बहुत पसन्द थे और उनको बहुत मुफीद भी हुए इसलिये फ़तवा दे रखा था कि ये हलाल हैं. यह फ़तवा उनके मज्मूअए फ़तावा के पहले एडीशन में मौजूद भी है. मगर जब पूरी दुनिया ने थूथू किया दूसरे एडीशनों से ऐसा ग़ायब किया कि फ़तावाए रशीदिया ही को ख़स्सी कर दिया.

ऐसी सूरत में उम्मत के आम अफ़राद को तक़लीद के बग़ैर चारा नहीं इस लिये अगर तक़लीद को बिदअते सैय्यिअह व हराम क़रार दे दिया जाए तो फिर क़ुरआन व हदीस पर अमल करना सिवाए मअदूदे चन्द हज़रात के उम्मत के अकसर अफ़राद को मुहाल हो जाए फिर लाज़िम यह कि पूरी उम्मत को क़ुरआन व हदीस पर अमल करना वुस्अत से ज़ियादा तकलीफ़ देना हुआ जो नस्से क़ुरआन :

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا

के सरीह मुनाफ़ी है. इस तरह उम्मत के दो गिरोह हुए: एक मुज्तहिदीन, दूसरे ग़ैर मुज्तहिदीन. ग़ैर मुज्तहिदीन को हुकम दिया गया कि वो दीनी मआमलात में मुज्तहिदीन की तरफ रूजू करें और उनका इत्तिबाअ करें, इरशाद है :

فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ. (سورہ انبیاء : آیت سات)

यानी एहले इल्म से पूछो जब तुम्हें इल्म नहीं.

इस आयत के मुखातब ग़ैर एहल हैं और एहले ज़िक्र से मुराद एहले इल्म और सवाल से मक़सूद एहले इल्म के इरशाद पर इत्तिबाअ का लाज़िम होना है. इस क़दर पर किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं बल्कि अब तो -

بعد اللتیا و التی.

यह भी तय हो गया कि एहले ज़िक्र से ख़ास मुज्तहिदीन मुराद हैं. पस जब कि यह नस्से क़ुरआनी से साबित है कि ग़ैर एहले ज़िक्र पर एहले ज़िक्र का इत्तिबाअ वाजिब है और फ़रीक़ैन इसपर मुत्तफ़िक हैं कि एहले ज़िक्र से मुज्तहिदीन मुराद हैं तो साबित हो गया कि ग़ैर मुज्तहिद पर मुज्तहिद की इत्तिबाअ वाजिब है, यही तक़लीद है.

इस लिये अगर मुज्तहिद की इत्तिबाअ वुजूहे दलील के बाद होगी तो यह मुज्तहिद की इत्तिबाअ न हुई बल्कि अपनी तहक़ीक़ पर अमल हुआ. इस लिये मुज्ततिहद की इत्ति्तबाअ तक़लीद में मुन्हसिर है. इस क़दर पर इत्ति्तफ़ाक़ के बाद वह अस्ल इख़्तिलाफ़ जिसने करोड़ों घरों में आग लगा रखी है जिसपर तमाम उम्मत के नाजी या नारी होने का फ़ैसला मौक़ूफ़ है वह तक़लीदे शख़्सी है.

उम्मत का इसपर इज्माअ है कि अब हर शख़्स को ख़्वाह वह आलिम हो या ग़ैरे आलिम वाजिब है कि वह अइम्मए अरबअह में से किसी एक की जुमला उमूरे फ़िक्हिय्यह में तक़लीद करे.

सिर्फ़ चन्द मअदूदे नफ़र जिनके दामन अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम की इहानत से दाग़दार हैं, जिसकी बिना पर वो उम्मते इजाबत से यक़ीनन ख़ारिज हैं, तक़लीदे शख़्सी को हराम बिदअत बल्कि शिर्क हत्ता कि

وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

का मिस्दाक़ ठहराते हैं. अल्लामा सैय्यिद अहमद तहतावी हाशिया दुर्रे मुख़्तार में फ़रमाते हैं:

فعليكم يا معشر المؤمنين باتباع الفرقة الناجية المسماة باهل السنة والجماعة فان نصرة الله تعالىٰ وحفظه وتوفيقه فى موافقتهم و خذلانه وسخطه ومقته فى مخالفتهم وهذه الطائفة الناجية قود اجتمعت اليوم فى المذاهب الاربعة، الحنفيون والمالكيون والشافعيون والحنبليون ومن كان خارجا من هذه المذاهب الاربعة فهو من اهل البدعة والنار. (طحطاوى على الدر- كتاب الذبائح)

यानी - ऐ मुमिनो, तुम पर फ़िर्क़ए नाजियह एहले सुन्नत व जमाअत की इत्तिबाअ लाज़िम है इस लिये कि अल्लाह तआला की मदद और हिफ़्ज़ो तौफ़ीक़ इनकी मुवाफ़िक़त में है और उसकी नाराज़गी और अज़ाब इनकी मुखालिफ़त में है और फ़िर्क़ए नाजियह ने आज इस पर इज्माअ कर लिया है कि वह सिर्फ़ मज़हबे अरबअह हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई हम्बली हैं और जो इन चारों से ख़ारिज होगा वह बिदअती जहन्नमी है.

मुन्किरीने तक़लीद के इमामुल अइम्मह शाह वलीउल्लाह साहिब

मुहद्दिसे देहलवी अक़्दुल जैय्यिद में लिखते हैं :

اعلم ان فی الاخذ بھذہ المذاھب الاربعة مصلحة عظھمة وفی الاعراض عنھا کلھا مفسدة کبیرة ونحن نبین ذٰلک بوجوہ : احدھا ان الامة قد اجتمعت علی ان یعتقمد واعلی السلف فی معرفة الشریعة فالتابعون اعتمدوا فی ذٰلک علی الصحابة وتبع التابعین اعتمدوا علی التابعین وھکذا فی کل طبقة اعتمد العلماء علی من قبلھم والعقل یدل علی حسن ذٰلک لان الشریعة لا یعرف الا بالنقل و الاستنباط والنقل لا یستقیم الابان یا خذ کل طبقة عمن قبلھا بالاتصال ولابد فی الاستنباط من ان یعرف مذاھب المتقدمین لئلا یخرج من اقوالھم فیخرق الاجماع ویبنی علیھا ویستعین فی ذٰلک بمن سبق لان جمیع الصناعات کالصرف والطب والشعر والحدادة والتجارة والصیاغة لم یتیسر لاحد الا بملازمة اھلھا و غیر ذٰلک نادر بعید لم یقع وان کان جائزا فی العقل واذا تعین الاعتماد علی اقاویل السلف فلابد من ان یکون اقوالھم اللتی یعتمد علیھا مرویة بالاسناد الصحیح او مدونة فی کتب مشھورة وان یکون منقحة یتبین الراجح من المرجوح من احتما لاتھا وتخصیص عمومھا فی بعض المواضع وبجمع المختلف منھا وتبیین علل احکامھا والالم یصح الاعتماد علیھا ولیس مذھب فی ھذہ الازمنة المتاخرة بھذہ الصفة الاھذہ المذاھب الاربعة.

यानी - मज़ाहिबे अरबअह के इख़्तियार करने में अज़ीम मस्लिहत है और इनसे इअराज़ करने में भारी फ़साद है. हम इनको चन्द तरीक़े से बयान करते हैं :

अव्वल : यह कि उम्मत ने इज्माअ कर लिया है कि शरीअत की मअरिफत में सलफ़ पर ऐतिमाद किया जाए, ताबिईन ने इस मआमले में सहाबा पर ऐतिमाद किया और तबए ताबिईन ने ताबिईन पर, इसी तरह हर तब्क़े के उलमा ने अपने पहले वालों पर ऐतिमाद किया, इसकी अच्छाई पर अक़्ल दलालत करती है. इस लिये कि शरीअत नक़्ल और इस्तिम्बात के बग़ैर पहचानी नहीं जा सकती और नक़्ल नहीं दुरूस्त होगी मगर इसी तरह

कि हर तब्क़ा अपने पहले वाले से मुत्तसिलन हासिल करे और इस्तिम्बात के लिये यह ज़रूरी है कि मुतक़द्दिमीन के मज़ाहिब को जाना जाए ताकि उन अक़्वाल से बाहर न जाएं कि ख़िरके इज्माअ हो जाए और उन्हीं अक़्वाल को बुनियाद बनाया जाए और अगलों से इसमें मदद ली जाए इसलिये कि तमाम सनअतें मसलन सुनारी और तिब और शेअर और लोहारी और तिजारत और रंगरेज़ी किसी को भी मयस्सर नहीं हुई मगर इसके माहिरीन के साथ काम करने से और बग़ैर इसके बहुत नादिर ग़ैर वाक़ेअ है अगरचे अक़लन जाइज है और जब यह मुअय्यन हो गया कि (शरीअत की मअरिफत) में सलफ़ के अक़्वाल ही पर ऐतिमाद है तो ज़रूरी है कि उनके वो अक़्वाल जिनपर एतिमाद हो, अस्नादे सहीह के साथ मरवी हों, या मशहूर किताबों में मुदव्विन हों और यह कि मुनक़्क़ह हों कि इन मुहतमिलात में राजेह, मर्जूह से ज़ाहिर और आम की तख़सीस मज़कूर हो, मुतज़ाद अक़्वाल में तत्बीक़ हो, अहकाम की इल्लतें बयान की गई हों वरना उनपर ऐतिमाद सही नहीं और इस पिछले ज़माने में कोई मज़हब इस सिफ़त के साथ मौसूफ नहीं सिवाय इन चार मज़ाहिब के.

मज़कूरह बाला इबारतों से मन्दर्जा ज़ैल फ़वाइद हासिल हुए :

(१) फिर्क़ए नाजियह सिर्फ़ एहले सुन्नत व जमाअत है इनके अलावा दूसरे तमाम फ़िर्क़े ख़्वाह अपना नाम कुछ रखें, जहन्नमी और बिदअती हैं.

(२) इसपर इज्माअ है कि तक़लीदे शख़्सी वाजिब है.

(३) तक़लीदे शख़्सी में अज़ीम मस्लिहत है और इसके तर्क में फ़सादे कबीर है.

(४) शरीअत की मअरिफत नक़ल और इस्तिम्बात पर मौक़ूफ है और ये दोनों सलफ़ के अक़्वाल जानने पर मौक़ूफ हैं.

(५) सलफ़ में सिर्फ़ अइम्मए अरबअह के अक़्वाल अस्नादे सहीह के साथ मरवी हैं और सिर्फ़ इन्हीं के मज़ाहिब मुनक़्क़ह हैं.

(६) सलफ़ में से अइम्मए अरबअह के अलावा दूसरे मुज्तहिदीन के अक़्वाल न तो अस्नादे सहीह के साथ मरवी हैं, न कुतुबे मशहूरह में जामिइय्यत के साथ मुदव्विन हैं कि उनपर ऐतिमादे सहीह हो और न मुनक़्क़ह हैं.

इससे साफ़ ज़ाहिर है कि मुज्तहिदीन में से सिर्फ़ अइम्मए अरबअह ही के मज़ाहिब लाइक्े ऐतिमाद और क़ाबिले अमल हैं और यही इल्लत है उनमें से किसी एक पर अमल के वुजूब पर इज्माअ होने की और इज्माअ ख़्वाह किसी अस्र का हो हुज्जते शरई है इसलिये कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

لا تجتمع امتى على الضلالة.

यानी मेरी उम्मत गुमराही पर जमा न होगी. नीज़ क़ुरआन में फ़रमाया गया :

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيْرًا . (سورة نساء۔ آيت ١١٥)

यानी - और जो रसूलुल्लाह का ख़िलाफ़ करे इसके बाद कि हक़ का रास्ता उसपर ज़ाहिर हो चुका और मुसलमानों के रास्ते से अलग रास्ते पर चले हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और यह कया ही बुरी जगह पलटने की है.

लिहाज़ा इसमें शको शुबह न रहा कि इस अस्र में वाजिब है कि अइम्मए अरबअह में से किसी एक इमाम की तक़लीद की जाए. इनके अलावा दूसरे अइम्मा की तक़लीद ममनूअ है. इसलिये कि उनके मज़ाहिब इतनी एहतियात और जामिइय्यत के साथ आज मौजूद नहीं कि उनका इत्तिबाअ किया जा सके. रह गई एक सूरत यह कि अइम्मए अरबअह में किसी मुअय्यिन की तक़लीद न की जाए बल्कि बअज़ मसाइल में एक की बअज़ में दूसरे की, इसमें कया हरज है ?

पहला हरज यही है कि यह ख़िरके इज्माअ है. इज्माअ इसपर है कि जो जिस इमाम का मुकल्लिद हो जुमला उमूर में उसकी तक़लीद करे. बअज़ मसाइल में एक की बअज़ मसाइल में दूसरे की, यह नाजाइज़ और गुनाह है.

दूसरा यह कि यह हक़ीक़त में इमाम की तक़लीद न हुई, अपने नफ़्स की तक़लीद हुई. इस लिये कि दूसरे इमाम की तक़लीद एक इमाम से अदूल करके दूसरे इमाम की तरफ़ रूजूअ की बुनियाद कया होगी ? अपनी पसन्द के कुछ मसाइल में इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हु का

इज्तिहाद पसन्द आया तो उसे इख़्तियार किया और बअज़ दूसरे मसाइल में दूसरे इमाम का इज्तिहाद पसन्द आया तो उसे इख़्तियार कर लिया. यही तो हवाए नफ़स की पैरवी है. अगर यह इअराज़ व रूजूअ दलील की कुव्वतो ज़ोअफ़ की बुनियाद पर है तो यह तस्लीमे क़ौल बिला दलील न हुआ , बा दलील हुआ फिर तक़लीद न रही और कलाम तक़लीद में है.

तीसरा हरज यह है कि यह नस्से कुरआनी से हराम है कि कभी एक तरीक़ा इख़्तियार किया जाए कभी उसके बरअकस दूसरा. हमको हुकम मिला है कि हम एक ही रास्ते को इख़्तियार करें और उसकी पैरवी करें. चन्द रास्ते का इत्तिबाअ न करें. फ़रमाया गया :

وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ . (الانعام : آيت ١٥٣)

यानी - चन्द रास्तों पर मत चलो वरना उसके रास्ते से हट जाओगे.

यह तो हर शख़्स जानता है कि अगर कहीं चन्द रास्ते गए हों तो मन्ज़िल पर वही पहुंचेगा जो उनमें से किसी एक को इख़्तियार करे और जो कभी एक रास्ते पर कभी दूसरे पर, फिर तीसरे पर, फिर चौथे पर, फिर पहले पर, और फिर दूसरे पर, अला हज़ल क़यास, चलता रहेगा, वह रास्ता नापता ही रह जाएगा, मन्ज़िल तक हरगिज़ नहीं पहुंचेगा.

इस लिये आज वाजिब है कि जो हनफ़ी है वह हज़रत इमामे अअजम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हु की, और जो शाफ़ई है वह हज़रत इमाम शाफ़ई रदियल्लाहो अन्हु की, और जो मालिकी है वह हज़रत इमामे मालिक रदियल्लाहो अन्हु की, और जो हम्बली है वह इमाम हम्बल रदियल्लाहो अन्हु की जुमला फ़िक्ही मसाइल में तक़लीद करे. उम्मत के किसी फर्द को इनके अलावा किसी मुज्तहिद की तक़लीद जाइज नहीं और तल्फ़ीक़ यानी कुछ मसाइल में एक की तक़लीद और कुछ मसाइल में दूसरे की, यह भी हराम व गुनाह है, यह इत्तिबाए शरीअत नहीं, इत्तिबाए हवाए नफ्स है.

उलमाए अहनाफ़ की तक़लीद पर एक बहुत मशहूरो मअरूफ़ ऐतिराज़ अमृतसरी आँजहानी साहब का यह है कि तक़लीद की तअरीफ़ है: تسليم قول الغير بلا دليل और उलमाए अहनाफ़ चूंकि हर मसअले की दलील जानते हैं इसलिये य मुकल्लिद न हुए, मुज्तहिद हुए. अर्सा हुआ मऊ

में यह सवाल उठा था, उसी वक़्त इस ख़ादिम ने यह जवाब दिया था कि तक़लीद की तअरीफ़ में बिला दलील का तअल्लुक तस्लीम से है.

इसका हासिल यह हुआ कि किसी की बात का मानना बिला दलील हो यानी मानने की बुनियाद दलील न हो कि चूंकि इस क़ौल की दलील बहुत क़वी है, लिहाज़ा मान लिया है बल्कि मानने में दलील को क़तअन कोई दख़ल न हो जैसे बच्चे, माँ बाप की बात मानते जानते हैं, तालिबे इल्म उस्ताद की बात मानता जानता है और मरीज़ तबीब की बात मानता जानता है. यह दूसरी बात है कि किसी बात को माना तो बिला दलील है मगर इसकी दलील भी जानता हो या बाद में जानने लगे. दलील जानना तक़लीद के मनाफ़ी नहीं जब कि वह इल्लते तस्लीम न हो. दलील का जानना उस वक़्त मनाफ़ी है जब्कि तस्लीम की इल्लत और सबब दलील हो. मसलन यह कि चूंकि इस बात की दलील बहुत क़वी है लिहाज़ा यह मान लिया और फ़लाँ की दलील बहुत कमज़ोर है लिहाज़ा उसे तर्क कर दिया.

इस तरह का मानना दलील की बुनियाद पर होता है. यह तस्लीमुल क़ौल बिला दलील नहीं, बिदलील (दलील के साथ) है. लेकिन अगर हम एक बात को मान रहे हैं मगर मानने में दलील को दख़ल न हो, या मानना बिला दलील हो तो यह तक़लीद है चाहे इसकी दलील जानते हों चाहे न जानते हों. उलमाए अहनाफ़ का हाल यही दूसरा है कि वो सैय्यिदुना इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो तआला अन्हु के अक़वाल और उनके मज़हबे मुहज़्ज़ब को बिला दलील मानते हैं. इसकी दलील यह है कि इब्तिदाए शऊर ही से हम वुज़ू, गुस्ल, तहारत, नमाज़, रोज़ा वग़ैरह सब मज़हबे इमामे अअज़म रदियल्लाहो तआला अन्हु के मुताबिक़ करते हैं और इसकी तफ़ासील को हक़ मानते हैं. जब शरहे वक़ायह और हिदायह पढ़ते हैं तो दलील से वाक़िफ़ होते हैं इसलिये यह मानना बिला दलील हुआ, यह दूसरी बात हुई कि मान लेने के बाद दलील भी जान गए.

नोट : सुन्नी देवबन्दी इख़्तिलाफ़ के मुतअल्लिक़ ज़ियादा मअलूमात हासिल करना है तो मुफ़्ती साहिब की तसानीफ़ सुन्नी देवबन्दी इख़्तिलाफ़ का मुन्सिफ़ाना जायज़ा और तहक़ीक़ात का ज़रूर मुतालआ करें.

☆☆☆

पैग़ामे हिजाज़

अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد للمتوحد بجلاله المتفرد

وصلوته دوما على خير الانام محمد

यह गुम्बदे नीलगूँ और फ़र्शे गीती, यह आफ़ताबो माहताब और नजूमो कवाकिब, ये अश्जारो अहजार और जिबालो बिहार, ये सेहरा व बयाबान और बिलादो अम्सार, ये आबादी व वीराना और सिलसिलए हयातो ममात, खुद यह इन्सान और उसके बेशुमार मुहैय्यरुल उकूल कारनामे,बल्कि वुजूदे कायनात से लेकर अस्त्रे हाज़िर तक की जुमला मख़्लूकात व मौजूदात व मस्नूआत अपनी ज़बाने हाल व मक़ाल से इस हक़ीक़त का बरमला ऐतिराफ़ व ऐलान करती चली आ रही हैं कि हमारी तख़लीक़, हमारा वुजूद, हमारी सनअत, और इन सबका हुस्ने नज़रो इर्तिबात, किसी हादसे का नतीजा नहीं बल्कि हमें मशिय्यते किर्दगार ने ख़लअते वुजूद से सरफराज़ फ़रमाया है और उसे ही हम अपना ख़ालिक़ व मूजिद व सानेअ व मुन्तज़िम समझते हैं जिसकी न कोई इब्तिदा है न इन्तिहा, जो ज़मानो मकान की हदों से मावरा और बेकराँ क़ुदरत और बेपनाह ताक़त का मालिक है. जो हर नक़्स व ऐब व जिस्म व जिस्मानियात से पाक व मुनज़्ज़ह है. अपनी ज़ात व सिफ़ात में जिसका कोई शरीक व सहीम नहीं. ज़िन्दगी और मौत उसी के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है और उसे कभी फ़ना व ज़वाल नहीं. उसके सब मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं. और यकह व तन्हा वही ज़ात वाजिबुल वुजूद है जो ख़ालिक़ व रज़्ज़ाक़ व मुदब्बिर व मुन्तज़िमे शश-जिहात है.

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.

(سورة اخلاص)

यानी तुम फ़रमाओ वह अल्लाह एक है. अल्लाह बेनियाज़ है, न

उसकी कोई औलाद है न वह किसी से पैदा हुआ और उसके बराबर का कोई नहीं.

इन्सान, जो शाहकारे क़ुदरत भी है और अशरफ़ुल मख़्लूक़ात भी है, उसे महद से लहद तक इन्सानियत की बेश बहा नेअमत के साथ आला अख़्लाक़ी व मआशिरती अक़दार व रिवायात और ख़िलाफ़ते अर्ज़ी की गिराँ-क़द्र अमानत व विरासत से नवाज़ कर रब्बे कायनात ने गर्दिशे लैलो नहार को उसके लिये मुसख़्ख़र और आग़ोशे ज़मीन व वुस्अते अफ़लाक को उसकी जौलानगाहे अमल बना दिया. जैसा कि क़ुरआने हकीम में इरशादे बारी तआला है :

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ • (سورة جاثيه: آيت ١٣)

यानी - और उसने ज़मीनो आसमान में जो कुछ है उसे अपने हुक्म से तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र किया.

और यह भी उसी का इरशाद है :

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ. (سوره ابراهيم: آيت ٣٢)

यानी - और तुम्हारे लिये चांद और सूरज मुसख़्ख़र किये जो बराबर चल रहे हैं और तुम्हारे लिये दिन और रात को मुसख़्ख़र किया.

यह सब कुछ इस लिये हुआ कि वह उसके अता-कर्दा क़ल्बे सालिह, इल्मे नाफ़िअ और फ़िक्रे सलीम के सही इस्तेमाल से जहाँ अब्नाए जिन्स की ख़िदमत कर सके वहीं अपने ख़ालिक़ व मालिक के हुज़ूर सर बसुजूद भी होता रहे. जो सज्दह उसका मक़सदे तख़्लीक़ भी है और मुन्तहाए अमल भी, उसकी सआदते बन्दगी भी यही है और उसके लिये फ़लाह व निजाते दुनियवी व उखरवी की ज़मानत भी इसी में मुज़्मिर है.

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ. (الذّٰريٰت: ٥٦)

यानी - और मैंने जिन्न और आदमी इतने ही के लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें.

गर्दिशे रोज़ो शब से गुजरते हुए इस कारवाने इन्सानियत को उसकी मन्ज़िले मक़सूद तक बहिफ़ाज़त व सलामती पहुंचाने के लिये मुन्तख़ब व बर्गुज़ीदह बन्दगाने ख़ुदा में तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया व

मुर्सलीन अलैहिमुस्सलातु वत्तस्लीम तारीख़े आलम के मुख़्तलिफ़ अदवारो उहूद में मब्ऊस किये गए जिन्हों ने तदाबीरे तब्शीर व अन्ज़ार व दअवते हिकमत व मौइज़ते हसनह के साथ अपना फ़रीज़ए तब्लीग़ अदा किया. इन पैग़म्बराने बरहक़ के लिये सहाइफ़ व कुतुबे समावियह मशअले राह और फ़ानूसे हिदायत बनीं और तौफ़ीक़े ईज़दी ने उन्हें हर गाम पर सहारा दिया.

रुश्दो हिदायत के इन क़ाफ़ला सालारों की तशरीफ़ आवरी का यह सिलसिला हज़रते आदम अलैहिस्सलाम से हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम तक चलता रहा और अकनाफ़े आलम में इनकी नूरानी शुआएं बिखरती रहीं यहाँ तक कि वह रसूले मुहतशम व नबीये मुहतरम ﷺ इस ख़ाकदाने आलम की रौनक़ और ज़ेबो ज़ीनत बनकर जलवा अफ़रोज़ हुए जो दुआए इब्राहीम ख़लीलुल्लाह भी हैं और नवेदे ईसा रूहुल्लाह भी हैं. जिनकी बिअसते बा-बरकत का इन्तिज़ार उन सभी पैग़म्बरों ने किया जिनसे आप पर ईमान लाने का एहद व मीसाक़ इस दुनिया में आमद से न जाने कितने हज़ार साल पहले लिया जा चुका था.

وَاِذْ اَخَذَاللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّ حِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَ كُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ـ(سورہ آل عمران:۸۱)

यानी - और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उनका एहद लिया कि जब तुम्हें मैं किताब और हिकमत दूँ फिर तुम्हारे पास वह रसूल आए जो तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ करे तो तुम ज़ररूर उनपर ईमान लाना और उनकी मदद करना.

जो जामेअ कमालाते अम्बिया व मुर्सलीन ही नहीं बल्कि फ़ख़्रे रसूलाँ व ख़ातिमे पैग़म्बराँ बन कर इस सिलसिलतुज़्-ज़हब की आख़िरी कड़ी बन गए. مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ـ(الاحزاب:۴۰) यानी मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं. हाँ वह अल्लाह के रसूल और सब से आख़िर में आने वाले नबी हैं.

آتے رہے انبیاء کما قیل لھم
والخاتم حقکم کہ خاتم ہوئے تم
یعنی جو ہوا دفتر تنزیل تمام
آخر میں ہوئی مہر کہ اکملت لکم

ज़मानए हज़रते आदम अलेहिस्सलाम से हज़रते ईसा अलेहिस्सलाम तक शरीअतें मन्सूख और मिल्लतें मअदूम होती रहीं लेकिनदीने इस्लाम एक ही रहा. और इसी दीने तौहिद की दअवत सारे अम्बिया व मुर्सलीन ने दी जो एहदे रिसालत मआब ﷺ में अपने दर्जए तमाम व कमाल को पहुंच गया और इस्लाम की इस अबदी हक़ीक़त का इस तरह ऐलान कर दिया गया कि:

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ . (آل عمران: ٨٥)

यानी - और जो इस्लाम के सिवा कोई दूसरा दीन चाहेगा उससे वह दीन हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा.

और कुरआने हकीम जो अल्लाह की जानिब से जिब्रईले अमीन के ज़रिये पैग़म्बरे इस्लाम खातिमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ पर नाज़िल हुआ जिसके साथ ही सिलसिलए सोहफ़े समावियह इख़्तिताम पज़ीर होगया. इस किताबे मुबीन को क़यामत तक पैदा होने वाले सारे बनी नौए इन्सान के लिये दस्तूरे हयात व निज़ामे अमल और उसे ही हर तरह की हिदायत व रहनुमाई का आख़िरी पाकीज़ा व हमागीर सहीफ़ए फ़ितरत भी क़रार दिया गया.

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ . (بنی اسرائیل: ٩)

यानी - बेशक यह कुरआन सब से सीधी रीह दिखाता है.

यह कुरआन हुदल लिन्नास भी है और हुदल लिल मुत्तक़ीन भी है. और चश्मे बसीरत से मुतालआ किया जाए तो अन्फ़सो आफ़ाक़ और हर शोअबए हयात के हक़ायक़ो मआरिफ और रहनुमा उसूल व मुबादी भी इसके दामन में मौजूद नज़र आएंगे.

وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ . (انعام: ٩٥)

यानी - और नहीं है कोई खुश्क व तर मगर रौशन किताब में मरकूम है.

इसी मम्बए इल्मो हिकमत व सरचश्मए ख़ैरो बरकत से इन्सानी रूहें क़यामत तक फ़ैजयाब व सैराब होती रहेंगी जिसकी मुकम्मल हिफ़ाज़त व सियानत खुद रब्बे कायनात ने अपने ज़िम्मए करम पर ले रखी है.

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ . (الحجر: ٩)

हमने उतारा है यह कुरआन और हम ही इसके निगहबान हैं.

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब के नूरे नज़र, आमिना बिन्ते वहब के

लख़्ते जिगर, आलमे वुजूद के मुहसिने अअज़म, फ़लके रिसालत के नय्यरे अअज़म जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की विलादत व बिअसते मुबारकह इस दुनियाए रंगो बू व जहाने हस्तो बूद के अन्दर रब्बे करीम की सबसे बड़ी नेअमत और उसकी तख़लीक़ व ईजाद का शहकार नमूना है जिसके ज़हूर के साथ ही कुफ़्रो शिर्क और ज़ुल्मो तुग़्यान की बदलियाँ छटने लगीं, तारीकियाँ काफ़ूर होने लगीं, सुबहे नौ की शुआएं बिखरने लगीं और तीरह व तार माहौल में हर तरफ रहमतों का सवेरा हो गया.

ग़ारे हिरा से निकल कर कोहे फ़ारान पर तुलू होने वाले ख़ुर्शीदे रिसालत की किरनें इन्सानी क़ुलूब व अज़हान को जगमगाती रहीं. क़ाफ़लए इस्लाम मक्कए मुकर्रमह व मदीनए तैय्यिबह की आबादियों में इन्सानी ज़िन्दगी की हक़ीक़ी मसर्रतें बिखेरता हुआ, वादियों को सरसब्ज़ो शादाब करता हुआ, पहाड़ियों पर अज़मते हक़ के परचम नसब करता हुआ आगे बढ़ता रहा. यहाँ तक कि गली कूचे इस्लाम की मुक़द्दस व पाकीज़ा तअलीमात से मुअत्तर हो गए. दश्तो जबल नग़्मए तौहीद से गूंज उठे और बहरो बर में नूरे ईमान की ताबानियाँ फैल गईं.

सारा अरब व अजम, नबीये मुकर्रम रसूले मुहतरम ﷺ के क़दमे नाज़ ने जिस वीराने को पामाल कर दिया वह गुलो गुलज़ार बन गया. उनके नुक़ूशे पा ने जादए ज़ीस्त को रौशनो मुनव्वर बना दिया और हुमाए बशरिय्यत ने उसी राहगुज़र और वादिये बत्हा की फ़ज़ा में परवाज़ करना शुरू कर दिया. लबहाए रिसालत से जो अल्फ़ाज़ निकले वो दस्तूरे हयात और बाग़े हस्ती के सदाबहार फूल बन गए. निगाहे नबुव्वत जिस सम्त उठी, दिलों की पज़मुर्दा कलियाँ खिल उठीं. नूर ही नूर फैल गया और मेहरो माह भी अपने दामन फैला कर उसकी ख़ैरात लेने दौड़ पड़े.

नूर की ख़ैरात लेने दौड़ते हैं मेहरो माह
उठती है किस शान से गर्दे सवारी वाह वाह

सहाबए किराम की सआदत मन्द रूहों ने आमदे फ़स्ले बहाराँ का वालिहाना इस्तिक़बाल किया. अपने दीदए दिल फ़र्शे राह किये और आग़ोशे इस्लाम में आकर यही नुफ़ूसे क़ुदसियह क़यामत तक के लिये एहले ईमान के लिये उसवह व क़दवह करार पा गए.

इन्हीं जाँनिसाराने नबुव्वत व आशिक़ाने रिसालत और नुजूमे फ़लके

हिदायत के औसाफ़े जमीलह व ख़साइले हमीदह का ज़िक्र करते हुए कुरआन हकीम इरशाद फ़रमाता है:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا . (سوره الفتح: ۹۲)

यानी - मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले काफ़िरों पर सख्त और आपस में नर्म दिल हैं. तुम उन्हें देखोगे रूकूअ व सिज्दे में गिरते हुए अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी चाहते हुए.

इसी हिज़्बुल्लाह के बारे में एक दूसरी जगह इरशादे बारी तआला है:

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ اُولٰئِکَ حِزْبُ اللّٰهِ اَلآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ . (مجادله : ۲۲)

यानी - अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वो अल्लाह से राज़ी हैं. यही अल्लाह के गिरोह वाले हैं आगाह हो कि अल्लाह का गिरोह ही कामयाब है.

और रसूले कौनैन सुल्ताने दारैन ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं:

ان الله اختار اصحابی علی الثقلین سوی النبیین والمرسلین . (الحدیث)

यानी अल्लाह तबारक व तआला ने अम्बिया व मुर्सलीन के अलावा सारे जिन्न व इन्स पर मेरे सहाबा को फ़ज़ीलत व बरतरी अता फ़रमाई है.

हज़रत अबूहुरैरह से रिवायत है, सरकारे दोआलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

فو الذی نفسی بیده لو ان احدکم ینفق مثل احد ذهبا ما ادرک مد احدهم ولانصیفه. (صحیح مسلم جلد ۲)

यानी - उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ाए कुदरत में मेरी जान है तुम में का कोई शख़्स अगर कोहे उहद के बराबर सोना ख़र्च करे तो सहाबी के मुद (तक़रीबन सेर भर वज़न) या इससे निस्फ़ सोना ख़र्च करने के बराबर भी नहीं पहुंच सकेगा.

और दर्जाए सहाबियत पर फ़ाइज होने का ऐज़ाज़ यह है कि:

لا تمسّ النار مسلما رانی او رآی من رانی. (ترمذی جلد ۲)

उस मुसलमान को आतिशे जहन्नम नहीं छुएगी जिसने मेरा या मेरे किसी सहाबी का दीदार कर लिया.

रब्बे कायनात ने अपने सबसे बर्गुजीदा नबी व रसूल के अम्र व निही की तअमील को वाजिबुल इताअत क़रार देकर उससे इन्हिराफ़ को मुस्तौजिबे तौबीख़ व तअज़ीर बना दिया है.

وَمَا اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ. (الحشر: ٧)

रसूल तुम्हें जो दें वह ले लो और जिससे मनअ करें उससे बाज़ आ जाओ और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है.

इताअते रसूल को उसने अपनी इताअत क़रार देते हुए फ़रमाया :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ (نساء: ٨٠)

यानी जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की.

और इत्तिबाए रसूल के बाद ही किसी को महब्बते इलाही की लज़्ज़त व चाशनी मिल सकती है.

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ . (آل عمران)

यानी - ऐ रसूल, तुम फ़रमा दो कि अगर अल्लाह से महब्बत रखने का तुम्हें दअवा है तो मेरी इत्तिबाअ करो अल्लाह तुम्हें मेहबूब बना लेगा.

हर हाल में मुहम्मदे अरबी नबीये हाशमी ﷺ को मरजए इत्तिबाअ व मरकज़े इताअत व नमूनए कामिल बनाने का हुकम देते हुए उसने इरशाद फ़रमाया है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ. (الاحزاب: ٢١)

यानी - बेशक अल्लाह के रसूल ही तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना हैं.

ख़ुद रसूले कायनात ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं :

فان خير الحديث كتاب الله وخير الهدي هدى محمد و شر الامور محدثاتها و كل بدعة (١) ضلالة (صحيح مسلم)

यानी - सब से बेहतर कलाम किताबुल्लाह और सबसे बेहतर राह जादए मुहम्मदी है और बदतर चीज़ वह है जो नई हो और हर बिदअत (१) गुमराही है.

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी (विसाल 1052 हि०) भी हदीसे मज़कूर की शरह करते हुए लिखते हैं जिसका अनुवाद यह है : जानना

चाहिये कि पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ की हयाते ज़ाहिरी के बाद पैदा होने वाली चीज़ बिदअत है और इसमें जो चीज़ सुन्नते रसूल के उसूल व क़वाइद के मुताबिक़ है और इसी पर क़यास किया गया है वह बिदअते हसनह है और जो चीज़ उसूले सुन्नत के ख़िलाफ़ है उसे बिदअते ज़िलालत कहा जाता है और कुल्लु बिदअतिन जिलालह की कुल्लियत इसी पर महमूल है. (मतलब यह हुआ कि वही बिदअत गुमराही है जो उसूले सुन्नत के ख़िलाफ है.) (अशअतुल लम्आत, जिल्द अव्वल)

---

(१) इमाम नौवी कहते हैं - लुग़वी ऐतिबार से बिदअत ऐसे काम को कहा जाता है जिसकी मिसाल ज़मानए सोबिक़ में न हो और इस्तिलाहे शरीअत में बिदअत ऐसी नई चीज़ को कहा जाता है जो रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ाहिरी हयात में न हो और इरशादे रसूल कुल्लु बिदअतिन ज़िलालह आम्मे मख़सूस है (यानी वही बिदअत गुमराही है जो बिदअते सैय्यिअह है.)

बिलाल बिन हारिस मुज़न्नी से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

من احیٰ سنة من سنتی قد امیتت بعدی فان له من الاجر مثل اجور من عمل بها من غیر ان ینقص من اجورهم شیئا. ومن ابتدع بدعة ضلالة لا یرضاه اللّٰه ورسوله. کان علیه من الاثم مثل اثام من عمل بها. لا ینقص ذلک من اوزارهم شیئا. (رواه الترمذی)

यानी - जिसने मेरी किसी ऐसी सुन्नत को राइज किया जिसे मेरे बाद लोग भूल चुके हों तो जितने लोग उसपर अमल करेंगे उन सबके बराबर उस राइज करने वाले को सवाब मिलेगा और उनमें से किसी का सवाब कम न होगा और जिसने कोई गुमराही वाली बिदअत जो अल्लाह व रसूल के नज़्दीक नापसन्दीदा है, उसकी ईजाद की तो उस बिदअत पर अमल करने वालों के बराबर उस मूजिदे बिदअत का गुनाह होगा और किसी का गुनाह कम न होगा.

अबू अम्र जरीर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

مَن سن فی الاسلام سنة حسنة فله اجرها واجر من عمل بها من بعده من غیر ان ینقص من اجورهم شیء. ومن سن فی الاسلام سنه سیئة کان

عليه وزرها و وزر من عمل بها من بعده من غير ان ينقص من اوزارهم شيء. (رواه مسلم)

यानी - जो शख़्स इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा राइज करे तो उसे वह तरीक़ा राइज करने और उसपर उसके बाद अमल करते रहने वालों का सवाब उसे मिलता रहेगा और किसी के सवाब में कोई कमी नहीं होगी. और जो शख़्स इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा राइज करे तो उसपर उसके राइज करने के बाद और उस तरीक़े पर उसके बाद अमल करने वालों का गुनाह उसे होगा और किसी के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी.

किताब और सुन्नत पर अमल करने की इन ताकीदों के साथ ही रसूले अकरम ﷺ की ज़बाने फ़ैज़ तर्जुमान से यह हक़ीक़त भी मुलाहिज़ा फ़रमाएं कि आपने अपने सच्चे वारिसीन और नाइबीन की सुन्नत को भी अपनी ही सुन्नत क़रार दिया है. चुनान्चे आपका यह ताकीदी हुकम है जिसकी रिवायत हजरत अरबाज़ बिन सारियह ने की है :

فعليكم بسنتى و سنة الخلفاء الراشدين المهديين (رواه الترمذى)

यानी मेरी सुन्नत और मेरे हिदयात याफ़ता ख़ुलफ़ा की सुन्नत की इत्तिबाअ सबके लिये लाज़िम और ज़ररूरी है बल्कि अपने सभी सहाबए किराम की सुन्नत की इक़्तिदा को मूजिबे हिदायत क़रार देते हुए आपने इरशाद फ़रमाया :

اصحابى كالنجوم بايهم اقتديتم اهتديتم (الحديث)

यानी मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं इनमें से तुम जिसके नक़्शे क़दम पर चलोगे हिदायत पाओगे.

सुन्नते रसूल व सुन्नते सहाबा की पैरवी करने वाले ही जन्नती हैं और रज़ाए ख़ुदा व रज़ाए रसूल से एहले सुन्नत ही बेहरावर हैं. चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहो अन्हुमा की रिवायत है. फ़ख़्रे रुसुल हादिये सुबुल मौलाए कुल ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं :

وان بنى اسرائيل تفرقت على اثنين و سبعين ملة و تفترق امتى على ثلث و سبعين ملة كلهم فى النار الا ملة واحدة. قالوا من هى يا رسول الله قال ما انا عليه واصحابى .(رواه الترمذى)

यानी - बनी इस्राईल बहत्तर मज़हबों में बट गए थे और मेरी उम्मत तिहत्तर मज़हबों में बट जाएगी जिनमें एक मज़हब वालों के अलावा

सारे मज़ाहिब वाले जहन्नमी होंगे. सहाबए किराम ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह, वह एक मज़हब वाले कौन लोग होंगे. आपने इरशाद फ़रमाया वो उसी मज़हब पर क़ाइम रहने वाले लोग हैं जिसपर मैं और मेरे सहाबा हैं.

इसी लिये मा अना अलैहे व अस्हाबी के मिस्दाक़ सवादे अअज़म एहले सुन्नत व जमाअत के क़ाफ़िलए हक़ में शरीक रहने का हुकम देते हुए सरकारे दोआलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

فاتبعوا السواد الاعظم فانه من شذ شذ فى النار. (ابن ماجه)

यानी - सवादे अअज़म की इत्तिबाअ करो कयोंकि जो इससे अलग हुआ वह जहन्नम में गया.

यह फ़िर्कए नाजियह (निजात याफ़ता गिरोह) और सवादे अअज़म (बड़ी जमाअत) कौन है ? हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी (विसाल 1052 हि०) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मर्वी एक हदीस बसिलसिलए इत्तिबाए सिराते मुस्तक़ीम की तशरीह करते हुए फिर्कए नाजियह एहले सुन्नत व जमाअत के बारे में अशअतुल लम्आत के अन्दर जो तहक़ीक़ फरमाई है उसका अनुवाद ज़ौल में मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

अगर कहा जाए कि यह कैसे मअलूम हो कि फ़िर्कए नाजियह एहले सुन्नत व जमाअत ही हैं और यही सीधी राह और खुदा तक पहुंचाने वाला रास्ता है और दूसरे सारे रास्ते जहन्नम तक पहुंचाने वाले हैं. दअवा तो हर फ़िर्का यही करता है कि वह सीधे रास्ते पर है और उसका मज़हब बरहक़ है. तो इसका जवाब यह है कि यहाँ स्फ़ि दअवे से काम नहीं चलेगा बल्कि इसकी दलील भी होना चाहिये. एहले सुन्नत व जमाअत की हक़्क़ानियत की दलील तो यह है कि दीने इस्लाम मुन्तकिल होता हुआ उनतक पहुंचा है जिसके लिये महज अक़ल का इस्तेमाल काफ़ी नहीं. अख़बारे मुतवातिरह से मअलूम हुआ और अहादीसे नबवी व आसारे सहाबा से यक़ीन हुआ कि सहाबा व ताबिईन व तबए ताबिईन जो सलफ़े सालिहीन हैं वो एहले सुन्नत व जमाअत के इसी ऐतिक़ाद और इसी तरीक़े पर रहते हैं.

अक़्वालो मज़ाहिब में नफ़सानियत व बिदअत सद्रे अव्वल के बाद पैदा हुई है. सहाबा व ताबिईन व तबए ताबिईन व सलफ़े मुतक़द्दिमीन में से कोई भी दूसरे मज़ाहिब का मानने वाला नहीं था. सब के सब इन मज़ाहिब

से बेज़ार थे और इन मज़ाहिब के पैदा होते ही इनके मानने वालों से हज़राते सलफ़ ने अपना रिश्तए महब्बत व तअल्लुक तोड़ कर खुद इनका खूब रद्दो इब्ताल किया.

सिहाए सित्ता और इनके अलावा दूसरी मशहूर व मुअतमिद कुतुब जिनपर अहकामे इस्लाम का मदार व मब्ना हुआ उनके मुहद्दिसीन और फुकहाए हनफ़ी व मालिकी व शाफ़ई व हम्बली व दीगर उलमाए किराम ये सब के सब मज़हबे एहले सुन्नत व जमाअत ही पर क़ाइम रहे हैं. (अशअतुल लम्आत, बाबुल ऐतिसाम, जिल्द अव्वल)

अशाइरह व मातुरीदियह व सूफियाए किराम को एहले सुन्नत व जमाअत में शुमार करते हुए आख़िर में हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रक़म तराज़ हैं:

हमने जो बात कही है उसकी सदाक़त इसी से साबित हो जाएगी कि मश्रिक़ व मग़रिब में फैली हुई मशहूर व मअरूफ़ कुतुबे हदीस व तफ़सीर व कलाम व फ़िक्ह व तसव्वुफ व सियर व तवारीख़े मुअतबरह को जमा करके उनकी छान बीन कर ली जाए. हमारे मुखालिफ़ीन भी किताबें लाकर देख लें ताकि हक़ीक़ते हाल वाज़ेह हो जाए.

खुलासा यही है कि दीने इस्लाम में सवादे अअज़म मज़हबे एहले सुन्नत व जमाअत ही है.

يد الله على الجماعة ومن شذ شذ فى النار (رواه الترمذى)

सुन्नते रसूल व सुन्नते सहाबा की इत्तिबाअ करके सिराते मुस्तक़ीम (सीधी राह) पर यही एहले सुन्नत व जमाअत गामज़न हैं.

اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم (سورة الفاتحه)

यानी - हमें सीधी राह चला, उनकी राह जिनपर तेरा इनआम हुआ.

इमाम अबुल हसन मावर्दी (विसाल ४५० हि०) नक़ल करते हैं: अबुल आलियह ताबिई (विसाल नव्वे हि०) और हसन बसरी (विसाल ११० हि०) फ़रमाते हैं कि सिराते मुस्तक़ीम से मुराद रसूलुल्लाह ﷺ व एहले बैते अत्हार व सहाबए किराम रिदवानुल्लाहे अलैहिम अज्मईन हैं.

हक़ यह है कि मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, अइम्मए अर्बअह, फ़ुकहाए

इस्लाम, अर्बाबे तसव्वुफो तरीक़त व सालिहीने उम्मत के इरशादात व तस्रीहात के मुताबिक़ सिराते मुस्तकीम पर चलने वाले और मा अना अलैहे व अस्हाबी का दामन मज़बूती से थामने वाले सिर्फ़ सवादे अअज़म एहले सुन्नत व जमाअत हैं जो रिवायाते अस्लाफ़ के सच्चे वारिस व अमीन और उनके नाशिर व मुबल्लिग़ हैं.

और मुख्तसर अल्फ़ाज़ में यह कहा जा सकता है कि दौरे हाज़िर में एहले सुन्नत व जमाअत कहे जाने के सही मुस्तहिक़ सिर्फ़ वही हज़रात हैं जो इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा, इमामे शाफ़ई, इमामे मालिक, इमामे अहमद बिन हम्बल में से किसी एक इमाम के मुत्तबेअ और मुकल्लिद हों.

शाफ़ई, मालिक, अहमद, इमामे हनीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम
कामिलाने तरीक़त पे कामिल दरूद
हामिलाने शरीअत पे लाखों सलाम
बे अज़ाबो इताबो हिसाबो किताब
ता अबद एहले सुन्नत पे लाखों सलाम

नूरो ज़ुलमत की नबुर्द आज़माई और हक़्क़ो बातिल की मअरिका-आराई इब्तिदाए आफ़रीनश से है और क़यामे क़यामत तक इसका सिलसिला चलता रहेगा जिसके नतीजे में नित नए फ़ित्ने जन्म लेते रहेंगे, तूफ़ान उठते रहेंगे, बिजलियाँ कौंदती रहेंगी, शोअले लपकते रहेंगे और ज़मीन का सीना तपता रहेगा.

बग़ावत व सरकशी और तमर्रूद व इसियाँ की रस्म कोई नई नहीं है. तख़लीक़े आदम के बाद ख़ालिक़े कायनात ने फ़िरिश्तों को हुकम दिया था कि आदम के सामने सज्दा-रेज़ हो जाओ. सबने हुकम की तअमील की मगर मुअल्लिमुल मलकूत अज़ाज़ील ने किब्रो-नख़वत के साथ सरताबी की जुरअत की जिसकी पादाश में उसे जन्नत से निकाल दिया गया और वह हमेशा के लिये ख़ाइबो ख़ासिरो मर्दूदो मलऊन हो गया.

गया शैतान मारा एक सज्दे के न करने से
अगर लाखों बरस सज्दे में सर मारा तो क्या मारा

अपनी हुकम अदूली और नाफ़रमानी को हक़ बजानिब क़रार देने के लिये उसने यह अजीबो ग़रीब मन्तिक़ी दलील पेश की :

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِىْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهُ مِنْ طِيْنٍ . (ص . ٥٧)

यानी - बोला इससे बेहतर हूँ, मुझे तूने आग से पैदा किया और इसें मिट्टी से पैदा किया.

इब्लीसे लईन का इस्तदलाल यह था कि आदम मिट्टी से और मैं आग से पैदा हुआ और आग चूंकि मिट्टी से अफ़ज़ल है इस लिये मैं आदम से अफ़ज़ल हूँ तो आदम को सज्दा कयों करूँ? उस नादान ने इस नुकते पर ग़ौर नहीं किया कि जिसकी कुदरते कामिला ने आग और मिट्टी दोनों को पैदा किया वही इस क्वत यह हुकम सादिर फ़रमा रहा है तो फिर इस हुकम के सामने चूँ व चिरा की गुन्जाइश ही कहाँ बाक़ी रह जाती है?

उस गुस्ताख़ व बेअदब की अक़ल ख़ब्त हो चुकी थी. तौफ़ीक़े रब्बानी से मेहरूम हो चुका था. नतीजा यह निकला कि हुकमे इलाही की बजा आवरी से इन्कार और तअज़ीमे नबी से फ़रार ने उसके गले में लअनत का तौक़ डाल दिया. इधर अदब व एहतिराम का दामन छूटा और उधर पलक झपकते ही वह हमेशा के लिये मर्दूदे बारगाह हो गया. इस लिये

अज़ ख़ुदा ख़्वाहेम तौफ़ीक़े अदब
बे अदब मेहरूम शुद अज़ फ़ज़्ले रब

(ख़ुदा से हम अदब की तौफ़ीक़ मांगते हैं, कयोंकि बेअदब ख़ुदा के फ़ज़्ल से मेहरूम रहता है)

इब्लीसे लईन तौहीदे इलाही का मोअतक़िद तो अपने आपको समझता रहा लेकिन तअज़ीमे नबी के लिये उसकी अक़ले बदअन्देश तैयार न हो सकी. उसने अक़ली इस्तदलाल का सहारा लिया जिसने उसे जहन्नम की वादी में धकेल दिया. फिर भी ज़ालिम ने चलते चलते यही कहा कि ऐ अल्लाह, मैं तेरे बन्दों को धोखा देकर गुमराह करता रहूंगा.

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ . (ص ٨٢ تا ٨٥)

यानी - वह बोला: तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं तेरे मुन्तख़ब बन्दों के अलावा सब को ज़रूर गुमराह करूंगा. फ़रमाया तो सच यह है और मैं सच ही फ़रमाता हूँ. बेशक मैं जहन्नम को तुम से और तुम्हारे सब पैरोकारों से ज़रूर भर दूंगा.

अज़मते अम्बिया व मुर्सलीन व सहाबा व ताबिईन व सलफ़े सालिहीन से अग़माज़ व इन्कार और वह भी तौहीदे ख़ालिस के नाम पर दर हक़ीक़त यह इब्लीसी तौहीद है जिसका दूसरा नाम अग़वाए शैतान (शैतानी फ़रेब) है. जिसकी तर्वीज व इशाअत माल व रियाल व दिर्हम व दीनार व पौन्ड व डॉलर के ज़रिये आज भी की जा रही है और सादा लौह बन्दगाने ख़ुदा को दामे तज़्वीर व मक्रे इब्लीस का शिकार बनाने के लिये तौहीदे ख़ालिस के पुर फ़रेब शीशमहल तैयार किये जा रहे हैं जिसके इबरतनाक अन्जाम और हौलनाकी से अल्लाह की पनाह.

लअम-लअन्न जहन्नम था वअदए अज़ली
न मुन्किरों को अबस बद-अक़ीदा होना था

इस्लाम अपनी फ़ितरी इस्तअदाद व सलाहियत, कमाल व जामइय्यत और अपनी क़ुव्वते जज़्बो कशिश की वजह से शर्क़ व ग़र्ब में बढ़ता और फैलता रहा. मसाइबो मुश्किलात से पंजा आज़माई करता हुआ इसका क़ाफ़िलए सख़्तजाँ मन्ज़िलों पर मन्ज़िलें तय करता रहा. तलातुम ख़ेज़ मौजों का सीना चीरता हुआ इसका सफ़ीना साहिले मक़सूद पर लंगर अन्दाज़ होता रहा. और इसके सामने न कोई दरिया हाइल हो सका न कोई चट्टान सद्दे राह हो सकी. न ही कुर्रए अर्ज़ के किसी ख़ित्ते में दम ख़म था कि वह इस बढ़ते हुए क़दम की ज़न्जीर बन सके.

शैतान के बहकावे ने इस्लाम के क़िले के घिराव की हर मुम्किन कोशिश कर डाली. कुफ़्र और शिर्क की आंधियों ने इस्लाम के आहनी सुतूनों के हिलाने के लिये एडी चोटी का ज़ोर लगाया. नबुव्वत के झूटे दअवों ने इसकी बुनियाद पर चोट लगानी चाही. रिफ़ज़ो ख़रूज की फ़ित्ना सामानियों ने इसकी दीवारें गिरा देने के लिये अपनी ताक़त लगा डाली. इल्हाद व एतिज़ाल के ख़तरनाक सैलाब ने इसके क़ीमती असासों को तिनकों की तरह अपने साथ बहा ले जाना चाहा और तन्क़ीसो तवहहुब की ऐय्यारियों ने शातिराना चाबुक दस्ती के साथ नक़्बज़नी के सारे हथियार आज़माए.

लेकिन इन सारे अन्दर और बाहर के फ़ित्नों, बग़ावतों, साज़िशों के बावुजूद रौशनी के ऊंचे मीनार की तरह इस्लाम का अज़ीम व पुरशिकोह क़िला अपनी रिफ़अतो अज़मत, क़ुव्वतो सतवत और शानो शौकत के साथ आज भी मौजूद है. और इसकी फ़सीलों से टकरा टकरा कर इसियाँ व

तुग़ियान की इब्लीसी ताक़तों का गुरूर पाश पाश होता रहा.

क्योंकि रब्बे क़ादिरो क़य्यूम ने अपने आख़िरी रसूल को कामिल व मुकम्मल दीने इस्लाम के साथ भेजा ही इसलिये था कि वह अपने नूर की शुआएं शशजिहात में बिखेर दे. कुफ़्रो ज़ुलमत को जाँबलब कर दे, फ़ित्नों का क़लआ-क़मअ और सारे अदियान पर इसे ग़ालिब फ़रमादे.

هُوَ الَّذِىْ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا . (الفتح: ٢٨)

यानी - वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा कि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और अल्लाह काफ़ी है गवाह.

आज से तक़रीबन सात सौ साल पहले की बात है. शैख़ इब्ने तैमिय्यह हरानी (मुतवफ़्फ़ा ७२८ हि०) ने अपने तफ़र्रूदात व ज़िलालात का एक बीज बोया था जो उलमाए इस्लाम की मज़ाहिमत व मुखालिफ़त की वजह से अर्सए दराज़ तक ज़ेरे ज़मीन मदफ़ून रहा और उसे सर उभारने का मौक़ा न मिल सका.

बरतानवी इस्तेअमार (साम्राज्यवाद) की तेज़ निगाहों ने जब इसे देखा तो इसकी आबयारी शुरू कर दी और इसी के ज़ेरे साया आज से लगभग दो सौ साल पहले इस ज़हर आलूद बीज ने शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी (मुतवफ़्फ़ा १२०६ हि० १७९२ ई०) लिखित किताबुत्तौहीद की शकल में एक पौदा बन कर लहलहाना और आलमे इस्लाम की आबो हवा को ज़हरीला करना शुरू कर दिया.

देखते ही देखते यह पौदा एक तनावर दरख़्त बन गया और जज़ीरतुल अरब से बर्रे सग़ीर हिन्दुस्तान तक इसकी शाख़ें फैल गईं. नज़रियाती इन्तिशार और मुबाहिसा व मुजादिलह का बाज़ार गर्म हुआ और सारा आलमे इस्लाम रफ़्ता रफ़्ता इसकी ज़द में आने लगा.

फ़िक्री सतह पर शाह इस्माईल देहलवी (मुतवफ़्फ़ा 1246 हि० 1831 ई०) लिखित तक़वियतुल ईमान व सिराते मुस्तक़ीम व रिसालए यकरोज़ी और अमली सतह पर हिजाज़े मुकद्दस पर आले सऊद का ग़ासिबाना तसल्लुत (1925 ई० में) ये इसकी दो बड़ी शाख़ें निकल आईं.

शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी की किताबुत्तौहीद और शाह इस्माईल देहलवी की तक़वियतुल ईमान और इन दोनों के मस्लक व नज़रिये व तर्ज़े अमल का मुतालआ कीजिये तो आपको हैरत अंगेज़ मुमासिलत नज़र आएगी और क़दम क़दम पर मेहसूस होगा कि इनको इत्तिबाए इस्लाम के बजाय नफ़्स ज़ियादा मर्ग़ूब व मेहबूब है.

एहले सुन्नत व जमाअत को यह इल्ज़ाम देते हैं कि किताबो सुन्नत के बजाय अइम्मए अरबअह में से किसी एक इमाम की तक़लीद को फ़र्ज़ समझते हैं जब्कि ख़ुद इनका यह हाल है कि एक तरफ़ तो किसी इमाम की तक़लीद को बिदअत समझकर उसका शद्दो मद से इन्कार करते हैं दूसरी तरफ उनके मानने वाले एक के बजाय अपने दो दो इमामों (शैख़ तक़ीउद्दीन इब्ने तैमिय्यह हरानी व शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी) की तक़लीद करते हैं और उनके मस्लक को हर हाल में वाजिबुल इत्तिबाअ समझते हैं.

और नज्द से देहली तक इस ताइफ़े की मज़्मूम हरकत यह है कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के बारे में नाज़िल होने वाली आयतें एहले सुन्नत व जमाअत पर चस्पाँ कर देते हैं. यह आदत उसने अपने पेशरौ फ़िर्क़ए ख़वारिज से सीखी है.

وكان ابن عمر يراهم شرار خلق الله . وقال انهم انطلقوا الى ايات نزلت فى الكفار فجعلوها على المسلمين. (باب القتال الخوارج جلد دوم صحيح بخارى)

यानी - हज़रत इब्ने उमरे फ़ारूक़ ख़वारिज को अल्लाह की बद तरीन मख़्लूक़ समझते थे और कहते थे कि ये ख़ारिजी उन आयाते करीमह को जो कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के बारे में नाज़िल हुई हैं इन्हें मुसलमानों पर चस्पाँ कर दिया करते हैं.

अब ज़रा आप इनकी मुजानिसत व ममासिलत पर भी एक नज़र डालें :

(१) किताबुत्तौहीद और तक़वियतुल ईमान की मुबाहिस व मुश्तमिलात जो रद्दे शिर्क में हैं वह यकसाँ और मिलते जुलते हैं. बअज़ उलमाए एहले सुन्नत ने इन दोनों का तक़ाबुली मुतालआ करके तफ़सील के साथ इस हक़ीक़त को आशकार किया है.

इस्लामी तौहीद के तहफ़्फ़ुज़ की सही नियत से अगर ये किताबें

लिखी गई होती और खींच तान कर शिर्क साज़ी न की गई होती, अज़मते अम्बिया व सालिहीन को पसे पुश्त न डाला गया होता तो वाक़ई क़ाबिले तहसीन कोशिश होती मगर इनके पसे पर्दा जो अज़ाइम कार फ़रमा थे उन्हें समझने के लिये ये तारीख़ी हवाले मुलाहिज़ा फ़रमाएं. शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज़्दी ने ख़ुद लिखा है:

وعرفت ان اقرارهم بتوحيد الربوبية لم يدخلهم فى الاسلام و ان قصدهم الملائكة والانبياء والاولياء يريدون شفاعتهم والتقرب الى الله بذلک هو الذى احل دمائهم واموالهم .(ص ۱۲ . کشف الشبهات مولفه شیخ محمد بن عبد الوهاب نجدى، مطبوعه ، رياض)

यानी - तुम्हें मअलूम हो चुका है कि इन (मुसलमानों) का इकरारे तौहीदे रबूबियत इन्हें इस्लाम में दाख़िल नहीं करता और मलायकह न अम्बिया व औलिया की शफ़ाअत तलब करना और उनकी तअज़ीम से अल्लाह का कुर्ब चाहना यही वह सबब है जिसने इनके क़त्ल और जानो माल को जाइज़ कर दिया है.

इस इबारत का वाज़ेह मतलब समझने के लिये मौलाना हुसैन अहमद मदनी, सदरे जमीअतुल उलमा व शैख़ुल हदीस, दारूल उलूम देवबन्द, सहारनपुर का यह बयान पढ़िये:

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का अक़ीदा था कि जुमला एहले आलम व तमाम मुसलमानाने दयार मुश्रिक व काफ़िर हैं और उनसे क़त्लो क़िताल करना, उनके अमवाल को उनसे छीन लेना हलाल और जाउइज़ बल्कि वाजिब है. चुनान्चे नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ (भोपाली) ने ख़ुद इसके तर्जुमे में इन दोनों बातों की तस्रीह की है. (सफ़हा ४३, अश-शिहाबुस्साक़िब, संकलन मौलाना मदनी, देवबन्द में छपी)

अब इधर मौलाना अशरफ़ अली थानवी का बयान सुनिये कि एक मजलिस में तक़वियतुल ईमान के बारे में गुफतगू चल रही थी जिसमें शाह इस्माईल ख़ुद मौजूद थे, उन्होंने कहा: मैंने एक किताब लिखी है और मैं जानता हूँ कि इसमें बअज़ जगह ज़रा तेज़ अल्फ़ाज़ आ गए हैं और बअज़ जगह तशद्दुद भी हो गया है. मसलन उन उमूर को जो शिर्के ख़फ़ी थे शिर्के जली लिख दिया गया है. इन वुजूह से मुझे अन्देशा है कि इसकी इशाअत से शोरिश ज़रूर होगी. गो इससे शोरिश होगी मगर तवक़्क़ोअ है कि लड़

भिड़कर खुद ठीक हो जाएंगे. (सफ़हा १०४, हिकायाते औलिया, अज़ मौलाना अशरफ़ अली थानवी, मत्बूआ दारुल इशाअत कराची)

और खुद शाह इस्माईल देहलवी नवाब वज़ीरुद्दौला रईसे टोंक को लिख रहे हैं :

मअलूम हुआ है कि हिन्दुस्तान के रहने वाले अकसर इस्लाम के मुद्दई, जिनमें अक़्लमन्द फ़ुज़ला, मशाइखे तरीक़त, मग़रूर उमरा और उनके फ़ासिक़ो फ़ाजिर पीर बल्कि तमाम शरीरून्नफ़स मुनाफ़िक़ और बदख़सलत मुनाफ़िक़ों ने दीने मुहम्मदी को ख़ैरबाद कहकर कुफ़्रो इर्तिदाद का रास्ता इख़्तियार कर लिया है और जिहाद की कोशिश करने वालों पर तअनो तिशनीअ की ज़बान खोल रखी है. (अनुवाद मकतूब नम्बर ३०, मकतूबाते सैय्यिद अहमद शहीद, मत्बूअह नफ़ीस अकाडमी, कराची)

(२) शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी और शाह इस्माईन देहलवी के एहले ख़ाना और सरपरस्तों ने उनके अन्दर इन्हिराफ़ व कजरवी की बू सूंघते ही तम्बीहो हिदायत करना चाही मगर ये दोनों अपनी रविश से बाज़ न आ सके.

शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज़दी के वालिद शैख़ अब्दुल वहाब बिन सुलैमान बिन अली अशरफ़ हम्बली (विसाल 1153 हि॰ 1740 ई॰) और चचा इब्राहीम बिन सुलैमान बिन अली अशरफ़ हम्बली (विसाल 1208 हि॰) मुम्ताज़ सुन्नी आलिमे दीन थे. उन्होंने आग़ाज़े अम्र ही में शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को राहे रास्त पर लाने की कोशिश की मगर शैख़े नज्दी ने सरताबी व सरकशी से काम लिया और बात बात पर उनसे मुबाहिसा करने लगा. वालिद ने इससे तंग आकर अपना घर (ऐनिय्यह) छोड़कर हरीमला में इकामत इख़्तियार कर ली मगर शैख़े नज्दी ने वहाँ भी उनके हल्क़ए दर्स में शामिल होकर तलबा में इन्तिशार फैलाना शुरू किया. और किसी तरह अपने इन्हिराफ़ व कजरवी से बाज़ न आया. तफ़सील के लिये देखिये : उन्वानुल मज्द फी तारीख़े नज्द, जिल्द एक, तालीफ़ उस्मान बिन बशीर नज्दी मुतवफ़्फ़ा 1288 हि॰, मत्बूआ रियाज़, व मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब तालीफ़ शैख़ अली तन्तावी जौहरी मिस्री.

हक़ीक़ी भाई शैख़ सुलैमान बिन अब्दुल वहाब बिन सुलैमान बिन अली अशरफ़ हम्बली (विसाल 1208 हि॰) ने तो शैख़े नज्दी की

गुमराहियों के ख़िलाफ़ 1167 हि० में एक मुस्तक़िल किताब बनाम अस्सवाइकुल इलाहिय्यह फिर रद्दे अलल वहाबिय्यह तस्नीफ़ की जिसकी पहली तबाअत 1306 हि०-1889 ई० में हुई और दूसरा एडीशन 1395 हि०-1975 ई० में मकतबए ईशीक़ इस्तम्बुल, तुर्की से मन्ज़रे आम पर आया.

शैख़े नज्दी के मुतअद्दिद असातिज़ा ने भी उसकी सरज़निश की जिसका ज़िक्र ऊपर बताई हुई दोनों किताबों में भी मिलता है.

अब इधर शाह ईस्माइल देहलवी का हाल सुनिये. मौलाना अशरफ़ अली थानवी बयान करते हैं :

मौलाना मुहम्मद अली मौलाना अहमद अली ने शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी से कहा: मौलवी इस्माईल ने रफ़ए यदैन शुरू कर दिया है, इससे मुफसिदह पैदा होगा. शाह अब्दुल अज़ीज़ ने अपने छोटे भाई शाह अब्दुल क़ादिर से कहा, मियाँ, इस्माईल को समझा दो कि रफ़ए यदैन न करे. शाह अब्दुल क़ादिर ने कहा, हज़रत, मैं कह तो दूँ मगर वह मानेगा नहीं और हदीसें पेश करेगा. लेकिन फिर शाह अब्दुल क़ादिर ने मौलवी मुहम्मद यअक़ूब की मअरिफ़त मौलवी इस्माईल को कहलाया कि तुम रफ़ए यदैन छोड़ दो ख़्वामख़्वाह फ़ित्ना पैदा होगा.

मौलवी इस्माईल ने मौलवी मुहम्मद यअक़ूब से कहा: अगर अवाम के फ़ित्ने का ख़याल किया जाए तो फिर इस हदीस के कया मअनी होंगे कि من تمسک بسنتی عند فساد امتی فله اجر ماۃ شهید. यानी जो शख़्स मेरी उम्मत के फ़साद के वक़्त मेरी सुन्नत पर अमल करता रहेगा उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा. जब मौलवी इस्माईल का यह जवाब मौलवी मुहम्मद यअक़ूब ने शाह अब्दुल क़ादिर तक पहुंचाया तो उन्होंने कहा: बाबा, हम तो समझे थे कि इस्माईल आलिम हो गया मगर वह तो एक हदीस का मअना भी न समझा. यह हुकम तो उस वक़्त है जब कि सुन्नत के मुक़ाबिल ख़िलाफ़े सुन्नत हो और मा नहनो फ़ीह (जो मसअला ज़ेरे बहस है) में सुन्नत का ख़िलाफ़ नहीं बल्कि दूसरी सुन्नत है. कयोंकि जिस तरह रफ़ए यदैन सुन्नत है उसी तरह इरसाल (रफ़ए यदैन न करना) भी सुन्नत है. (हिकायाते औलिया अज़ मौलाना थानवी मत्बूआ दारुल इशाअत, कराची)

अल्लामा फ़ज़्ले रसूल बदायूनी (विलादत 1213 हि०, विसाल

1289 हि॰) ने शाह मख़सूसुल्लाह बिन शाह रफ़ीउद्दीन देहलवी बिन शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे देहलवी से शाह इस्माईल देहलवी और तक़वियतुल ईमान के बारे में छ: सवालात किये थे जिनके उन्होंने जवाब इनायत फ़रमाए. यहाँ मौक़े की मुनासिबत से पहले और पांचवें सवाल का जवाब नक़ल किया जा रहा है. शाह मख़सूसुल्लाह बिन शाह रफ़ीउद्दीन बिन शाह वलीउल्लाह देहलवी लिखते हैं:

पहली बात का जवाब यह है कि:

तक़वियतुल ईमान कि मैंने इसका नाम तफ़वियतुल ईमान साथ फ़ा के रखा है, इसके रद में जो रिसाला मैंने लिखा है उसका नाम मुईदुल ईमान रखा है.

इस्माईल का रिसाला मुवाफ़िक़ हमारे ख़ानदान के क्या बल्कि तमाम अम्बिया और रसूलों की तौहीद के ख़िलाफ़ है क्योंकि पैग़म्बर सब तौहीद सिखलाने को रब की राह चलाने को भेजे गए थे. उसके रिसाले में इस तौहीद का और पैग़म्बरों की सुन्नत का पता भी नहीं है.

इसमें शिर्क और बिदअत के अफ़राद गिनकर जो लोगों को सिखलाया है. किसी रसूल ने और उनके ख़लीफ़ा ने किसी का नाम लेकर शिर्क या बिदअत लिखा हो. अगर कहीं हो तो उनके पैरवों से कहो कि हमको भी दिखाओ.

पांचवीं बात का जवाब यह है कि अम्मे बुज़ुर्गवार (शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी) कि बीनाई से मअज़ूर हो गए थे. इसको सुना और फ़रमाया अगर बीमारियों से मअज़ूर न होता तो तोहफ़ाए इस्ना अशरियह का सा जवाब इसका रद भी लिखता.

उसकी बख़्शिश वहाब बेमिन्नत ने इस बेएतिबार की शरह का रद लिखा, मतन का मक़सद भी नाबूद हो गया.

हमारे वालिदे माजिद ने उसको देखा न था, बड़े हज़रत (शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी) के फ़रमाने से खुल गया कि जब उसको गुमराह जान लिया तब उसका रद लिखना फ़रमाया. (तहक़ीक़ुल हक़ीक़त अज़ अल्लामा फ़ज़्ले रसूल बदायूनी मत्बूअह मुंबई 1267 हि॰ ब-हवाला अनवारे आफ़ताबे सदाक़त अज़ क़ाज़ी फ़ज़्ल अहमद लुधियानवी, मत्बूअह करीमी प्रेस, लाहौर, 1338 हि॰ 1920 ई॰)

तक़्वियतुल ईमान की तर्दीद व इब्ताल में लिखी गई शोहरए आफ़ाक़ किताब तहक़ीक़ुल फ़तवा फ़ी इब्तालित तग़वा (मुहर्रह 1240 हि०, मुअल्लफ़ा अल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी विसाल 1278 हि०, तल्मीज़ शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी) के आख़िर में जिन मशाहीर उलमाए हिन्द की तस्दीक़ात हैं उनमें मौलाना मख़सूसुल्लाह देहलवी व मौलाना मुहम्मद मूसा देहलवी फ़र्ज़न्दाने शाह रफीउद्दीन बिन शाह वलीउल्लाह देहलवी भी शामिल हैं. मौलाना मुहम्मद मूसा देहलवी ने हुज्जतुल अमल फी इब्तालिल हयल के नाम से मुस्तक़िल एक रिसाला भी लिखा.

(३) ज़ुल-हज्जह 1220 हि० में जब एहले नज्द ने ताइफ़ पर हमला करके क़त्लो ग़ारत गरी की और मस्जिदे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास को शहीद किया तो शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी का एक मुख्तसर रिसाला जिसे किताबुत्तौहीद का ख़ुलासा कहा जा सकता है, उसे मुतअद्दिद मुस्लिम बिलाद व अम्सार में भेजा गया. ७ मुहर्रम १३२१ हि० में यह नज्दी रिसाला मक्कए मुकर्रमह पहुंचा. उलमा व मशायख़े इस्लाम ने फ़ौरन हरम शरीफ़ में हन्गामी बैठक बुलाई. शैख़ अहमद बिन यूनुस अल्बा अलवी, शैख़ उमर अब्दुर रसूल, शैख़ अक़ील बिन यहया बा अलवी, शैख़ हुसैन अल-मग़रबी व दीगर दर्जनों उलमा व मशायख़ ने इज्तिमाई तौर पर इसका जवाब मस्जिदे हरम में बैठ कर लिखा और फिर इसे सारे हाज़िरीन व शुरका के सामने पढ़कर सुनाया गया.इस जवाब में नज्दी अक़ाइदो अफ़कार को ख़िलाफ़े इस्लाम क़रार देते हुए उनकी शदीद मज़म्मत की गई कि -

هذا تشريع جديد مخالف لما جاء به النبى ﷺ فهمه الصحابة والتابعون و تبعهم.

यानी - यह एक तशरीए जदीद है जो नबीये करीम ﷺ के लाए हुए दीन और सहाबा व ताबिईन व तबए ताबिईन के फ़हम व मुराद के बिल्कुल मुखालिफ़ है.

उधर मस्जिदे हराम, मक्कए मुकर्रमह में बैठकर नज्दी रिसाले के ख़िलाफ़ उलमा ने मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला किया और इधर तक़्वियतुल ईमान और शाह इस्माईल देहलवी के अफ़कार के ख़िलाफ़ भी शाहजहानी मस्जिद देहली में बैठकर उलमाए हिन्द ने 1240 हि० मुताबिक़ 1825 ई० में यही कारवाई की और इस नए फ़ित्ने की सरकूबी की.

मौलाना शाह मख़सूसुल्लाह बिन शाह रफीउद्दीन देहलवी व मौलाना मुनव्वरूद्दीन शागिर्द शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी व मौलाना रशीदुद्दीन ख़ाँ देहलवी शागिर्द शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी वग़ैरहुम ने शाह इस्माईल देहलवी से 1240 हि० 1825 ई० में बाक़ाइदा ज़बानी सवालो जवाब किया, तम्बीहो हिदायत की. इसी मौक़े पर मौलाना रशीदुद्दीन ख़ाँ देहलवी ने शाह इस्माईल देहलवी से चौदह सवालात किये जिनके उन्होंने जवाबात भी दिये.

मौलाना मुनव्वरुद्दीन देहलवी मुतवफ़्फ़ा 1237 हि० शागिर्द शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी ने तक़्वियतुल ईमान व जिलाउल ऐनैन अज़ शाह इस्माईल देहलवी के लिखे जाने के बाद उलमाए हिन्द व उलमाए हरमैने शरीफ़ैन से मसलके शाह इस्माईल के ख़िलाफ़ फ़तावा हासिल किये.

"और हर तरह समझाया लेकिन जब नाकामी हुई तो बहस व रद में सरगर्म हुए और जामेअ मस्जिद का वह शुहरए आफ़ाक़ मुनाज़िरह तरतीब दिया जिसमें एक तरफ़ मौलाना इस्माईल और मौलाना अब्दुल हैय्य थे और दूसरी तरफ़ मौलाना मुनव्वरुद्दीन और तमाम उलमाए देहली." (सफ़हा ६- आज़ाद की कहानी बयाने मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

(४) शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी को अपने ख़यालात की इशाअत के लिये पुश्तपनाही और एक मज़बूत अस्करी कुव्वत की ज़रूरत पेश आई तो इसके लिये मुहम्मद बिन सऊद अमीरे दरइय्यह नज्द को उसने हमनवा बनाया और इसके लिये जो तीर बहदफ़ नुस्ख़ा उसने इस्तेमाल किया उसके बारे में नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली लिखते हैं :

मुहम्मद बिन सऊद को इब्ने अब्दुल वहाब ने यह तमअ व फ़रेब दिया कि वह उसे बिलादे नज्द का हुकमराँ बना देगा. यह वाक़िआ 1760 ईसवी का है और मुहम्मद बिन सऊद की शादी इब्ने अब्दुल वहाब की लड़की से हुई. (अनुवाद : अत्ताजुल मुकल्लल, सफ़हा ३००, मत्बूअह मुंबई)

इस तरह ज़न, ज़र और ज़मीन के फ़ार्मूले पर वहाबियत व सऊदियत का मुआहिदा हुआ जिसपर आले सऊद (ख़ानदाने मुहम्मद बिन सऊद) और आलुश शैख़ (ख़ानदाने शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी) अब तक क़ाइम हैं. मस्लक शैख़ नज्दी का है और तलवार आले सऊद की है.

मज़ीद तफ़सील के लिये देखिये शैख़ उस्मान बिन बशीर नज्दी

1228 हिजरी की किताब बउनवान अलमज्द फ़ी तारीखे नज्द, जिल्द अव्वल, मत्बूअह रियाज़)

इधर शाह इस्माईल देहलवी ने तहरीके वहाबियत से मुतास्सिर हेकर सोचा कि मेरे चचा शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी और दादा शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे देहलवी का पूरे हिन्दुस्तान में जो नाम और शोहरा है उसका फ़ायदा उठाऊं और अपने खुद-साख़्ता मस्लक के बल पर एक हुकूमत हिन्दुस्तान के किसी हिस्से में क़ायम कर लूँ. चुनान्चे उन्हों ने सैय्यिद अहमद रायबरेलवी साहिब को रायबरेली से बाला कोट पहुंचा दिया और अमीरुल मूमिनीन बना कर चन्द रोज़ा रियासत भी क़ाइम कर ली. सैय्यिद अहमद रायबरेलवी साहिब को ऐसा ज़बरदस्त इमामे बरहक़ और अमीरुल मूमिनीन बनाया कि उनकी इताअत न करने वालों पर जिहाद फ़र्ज़ क़रार दिया. शाह इस्माईल द्रेहलवी खुद लिखते हैं: (फ़ारसी से अनुवाद) जो शख़्स आँजनाब की इमामत इब्तिदा ही से कुबूल न करे या कुबूल करने के बाद उसका इन्कार करे वह ऐसा बाग़ी है कि उसका ख़ून बहाना हलाल है और उसका क़त्ल करना काफ़िरों के क़त्ल करने की तरह ऐने जिहाद है. उसकी हतक करनी फसादियों की हतक की तरह रब्बुल इबाद की ऐने मर्ज़ी है कयोंकि ऐसे लोग अहादीसे मुतवातिरह के हुक्म से कुत्ते की चाल चलने वाले मलऊनीन अशरार हैं. इस मआमले में इस आजिज़ का यही मसलक है. लिहाज़ा ऐतिराज़ करने वालों के ऐतिराज़ात का जवाब तलवार की मार है, तहरीरो तक़रीर नहीं है. (सफ़हा 169- मकतूब ३१, मकतूबाते सैय्यिद अहमद शहीद, नफ़ीस अकाडमी, कराची)

वाज़ेह रहे कि सैय्यिद अहमद रायबरेलवी साहिब व शाह इस्माईल देहलवी के लश्कर का पहला मुकाबला बल्कि उन्हीं की ज़बान में पहला जिहाद यार मुहम्मद ख़ाँ हाकिमे याग़िस्तान से हुआ. (तज़्किरतुर रशीद, जिल्द २, अज़ मौलाना आशिक़ इलाही मेरठी) और क़बाइली मुसलमानों पहाड़ी क़ौमों ने उनकी वहाबियत से इस क़दर नफ़रत का इज़्हार किया और इस लश्कर की बअज़ हरकात से इस क़दर मुखालिफ़ हुए कि २४ ज़िलक़अदह 1246 हिजरी मुताबिक़ ६ मई 1831 ईसवी सरज़मीने बाला कोट में मज़्कूरह दोनों हज़रात के साथ पूरा लश्कर क़त्ल कर दिया गया और सल्तनत व रियासत व इमारत की हसरत दिल में लिये उन्हें राहिये मुल्के

अदम होना पड़ा.

बरतानवी साम्राज्यवाद ने जिस तरह वहाबियत व सऊदियत व इस्माईलियत की आबयारी और दर पर्दा मुआविनत व मुसाइदत की वह कोई ढकी छुपी बात नहीं. एक बरतानवी अफ़सर लिखता है :

1865 ईसवी का वाक़िअह है कि उस ज़माने में एक बरतानवी वफ़द बसरकिर्दगीये कर्नल लयूस बेली रियाज़ गया था. इस वफ़द ने ख़ानदाने इब्ने सऊद से एक मुआहिदा किया था जिसकी पासदारी हमेशा मल्हूज़ रही है. अगरचे कोई बाक़ायदह एहदनामा मुरत्तब नहीं किया गया था लेकिन इसपर भी वहाबियों ने मुझे बताया कि वो इस मआमले की तकमील अपना फ़र्ज ख़याल करते हैं."

मौजूदा इब्ने सऊद और उसका वालिद अब्दुर रहमान जो ज़ईफ़ुल उम्र और वाजिबुल एहतिराम बुज़ुर्ग है. 1665 ईसवी से 1901 ईसवी तक कुवैत में मुकीम रहे. शैख़े कुवैत इनका हामी व मददगार था. उसकी ही बरकत है कि ये फिर अपनी खोई हुई सल्तनत हासिल करने के लिये बाहर निकले. जिस ज़माने में यह ख़ानदान कुवैत में था उस ज़माने में बरतानवी पुलीटिकल ऑफ़िसर और रेज़ीडेन्ट बोसर से इनके तअल्लुकात थे. जब यह ख़ानदान रियाज़ पहुंचा तो उस वक़्त भी ये तअल्लुक़ाते दोस्ताना क़ाइम रहे. कप्तान शैकसपियर आँजहानी पुलीटिकल ऑफ़िसर कुवैत अरबों के मद्दाह और गहरे दोस्त थे. उनकी विसातत से सिलसिलए तअल्लुकात मर्बूत व मज़बूत हुआ. आख़िर तक. (अख़्बार ज़मींदार, लाहौर, शुमारह १० फ़रवरी 1922 ईसवी)

सर बरसी कॉकस ने इस एहतिजाज के जवाब में उसे शाहे नज्द के नाम से मुखातिब किया. इस ख़ुशामद, तम्लुक और साठ हज़ार पौन्ड सालाना की रिशवत से जो माह बमाह अदा होती रहेगी, इब्ने सऊद को ख़ामोश रखने की उम्मीद की जाती है. (अख़्बार ज़मींदार, लाहौर, शुमारह १२ फ़रवरी 1922 ईसवी)

कर्नल लॉरेन्स की इस सिलसिले में जो कारगुजारियां हैं. नीज़ २६ नवम्बर 1915 ईसवी में बरतानियह व इब्ने सऊद (दस्तख़त व मोहर अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुर रहमान आले सऊद व दस्तख़त रेड कॉकस वकीले मुआहिदा व नुमाइन्दए बरतानियह दर ख़लीजे फ़ारस व दस्तख़त चैम्सफ़ोर्ड

नाइबे मलिके मुअज़्ज़म व वायसराए हिन्द) के दर्मियान तहरीरी मुआहिदा और जन्गे अज़ीम अव्वल में इब्ने सऊद की तरफ़ से बरतानियह की ताईद जैसे हकाइक तारीख़ी कुतुब में मुस्तनद हवालों के साथ मौजूद हैं. हम्फ़्रे के ऐतिराफ़ात भी क़ाबिले मुतालआ हैं. बरतानवी व सऊदी साज़िश के नतीजे में इस्राईल और मसअलए फ़िलिस्तीन आज तक आलमे इस्लाम के लिये नासूर बना हुआ है. जन्गे ख़लीज जनवरी 1991 ईसवी में अमरीकी व बरतानवी अफ़वाज की सऊदियह की तरफ से दअवत व मेज़बानी भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है.

इब्ने सऊद कया है फ़क्त एक हरम फ़रोश
बरतानियह की ज़ुल्फ़े गिरहगीर का असीर
एहले हरम पे इसने बरसवाईं गोलियाँ
फिर कयों न कुश्तनी हो ज़मींदार का मुदीर

ज़फ़र अली ख़ाँ, लाहौर

अब इधर का हाल सुनिये :

लॉर्ड हेस्टिंग्स सैय्यिद अहमद साहिब की कारगुजारी से बहुत खुश हुआ. दोनों लश्कर के बीच एक ख़ैमा खड़ा किया गया और उसमें तीन आदमियों का बाहम मुआहिदा हुआ - अमीर ख़ान, लॉर्ड हेस्टिंग्स और सैय्यिद अहमद साहिब. सैय्यिद अहमद ख़ान साहिब ने बड़ी मुश्किल से अमीर ख़ाँ को शीशे में उतारा था.(सफ़हा ४८५, हयाते तैय्यिबह मुअल्लफ़ह मिर्ज़ा हैरत देहलवी, मत्बअ फ़ारूक़ी, देहली)

कल्कत्ता में एक वअज़ के दौरान किसी ने कहा कि आप अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद का फ़तवा कयों नहीं देते? इस पर शाह इस्माईल देहलवी ने कहा: "उन पर जिहाद किसी तरह वाजिब नहीं है. एक तो उनकी रैय्यत हैं दूसरे हमारे मज़हबी अरकान अदा करने में वो ज़रा भी दस्त अन्दाज़ी नहीं करते. हमें उनकी हुकूमत में हर तरह की आज़ादी है. बल्कि उनपर अगर कोई हमला आवर हो तो मुसलमानों का फ़र्ज है कि वो उससे लड़ें और अपनी गवर्न्मैन्ट पर आँच न आने दें.(सफ़हा २९४, हयाते तैय्यिबह मुअल्लफ़ह मिर्ज़ा हैरत देहलवी, मत्बअ फ़ारूक़ी, देहली)

मौलाना हुसैन अहमद मदनी, सदर जमीअतुल उलमाए हिन्द लिखते हैं :

जब सैय्यिद साहिब का इरादा सिखों से जन्ग करने का हुआ तो अंग्रेज़ों ने इत्मीनान का साँस लिया और जन्गी ज़रूरतों के मुहैय्या करने में सैय्यिद साहिब की मदद की.(सफ़हा ४१९ जिल्द २, नक़्शे हयात अज़ मौलाना हुसैन अहमद मदनी, मत्बूअह कराची)

नीचे के अंग्रेज़ अफ़सर अगर किसी इक़दाम के रूमूज नहीं समझ पाते थे तो उन्हें ऊपर से डाँट पड़ती थी. चुनान्चे सर सैय्यिद अहमद लिखते हैं:

जब साहिब कमिश्नर और साहिब मजिस्ट्रेट को इस अम्र की इत्तिला हुई तो उन्हों ने गवर्न्मैन्ट को इत्तिला दी. गवर्न्मैन्ट ने उनको साफ़ साफ़ लिखा कि तुम को इस मआमले में हरगिज़ दस्त अन्दाज़ी नहीं करनी चाहिये क्योंकि उनका इरादा कुछ गवर्न्मैन्ट अंग्रेज़ के मक़ासिद के ख़िलाफ़ नहीं है.(मक़ालाते सर सैय्यिद, जिल्द नम्बर ९, मज्लिसे तरक्कियें अदब लाहौर)

मुन्शी शहामत अली (देहली) ने तक़्वियतुल ईमान अज़ शाह इस्माईल देहलवी का अंग्रेज़ी तर्जुमा किया जो लन्दन से छपा. चुनान्चे सर सैय्यिद लिखते हैं: "जिन चौदह किताबों का ज़िक्र डॉकटर हन्टर साहिब ने अपनी किताब में किया है उनमें सातवीं किताब तक़्वियतुल ईमान है. चुनान्चे इस किताब का अंग्रेज़ी तर्जुमा रॉयल ऐशियाटिक सोसायटी (लन्दन) के रिसाले (जिल्द १३, 1852 ईसवी) में छपा था." (मक़ालाते सर सैय्यिद, जिल्द नम्बर ९, मज्लिसे तरक्कियें अदब लाहौर)

उस्मानिया यूनिवर्स्टी हैदराबाद दकन से मन्ज़ूर शुदा एक अरबी मक़ालए डॉकटरेट में डॉकटर क़मररून्निसा एम ए लिखती हैं:

प्रोफ़ैसर मुहम्मद शुजाउद्दीन सदर शोअबए तारीख़ दिल सिंह कॉलेज लाहौर मुतवफ़्फ़ा 1965 ई० अपने एक ख़त बनाम प्प्रोफ़ैसर ख़ालिद बज़्मी लाहौर में लिखते हैं कि अंग्ग्रेज़ों ने तक़किवयतुल ईमान को मुफत तक़सीम कराया था.

तर्जुमा अल-अल्लामा फ़ज्ले हक़ ख़ैराबादी, मत्बूअह मकतबए क़ाददिरयह, लाहौर)

जिहाद के नाम पर मुस्लिम उमरा से जन्ग. अंग्ग्रेज़ों के मज़बूत दुशमन पठानों और सिखों से जंग, अंग्ग्रेज़ों से दोस्ताना रस्मो राह, तक़किवयतुल ईमान का अंग्ग्रेज़ी तर्जुमा, तक़किवयतुल ईमान की मुफत

तक़सीम. कोई बतलाओ कि हम बतलाएं कया ?

बहरहाल, मैं सरे दस्त इन्हीं पांच मुश्तरक उमूर की निशाननिदही करके इस पहलू की तरफ आपकी तवज्जोह मब्ज़ूल करा रहा हूँ कि शैख़ नज्दी के मस्लके वहाबियत की दो बड़ी शाख़ें निकल आईं और उन्हों ने उलमा व मशायख़े उम्मत को मुख्तलिफ़ ख़ानों में तक़सीम करना शुररू कर दिया. और आलमे इस्लाम अभी इन शाख़ों की क़त्ओ बुरीद ही में उलझा हुआ था कि हिफ़्ज़े ईमान और बुराहीने क़ातिअह व तहज़ीररुन्नास जैसे इसके जहरीले फल भी निकल आए जिनके मुज़िर असरात ने बर्रे सग़ीर के करोड़ों मुसलमानों के जिस्म ही नहीं बबिल्क उनकी ररूह तक को मुब्तिलाए अमराज़ बना डाला.

इधर माज़ी क़रीब में सऊदी रियाल की फ़रावानी ने इस फ़ित्नए वहाबियत और इसकी शाख़ों के ख़ूब ख़ूब सैराब और तरो ताज़ा किया. और इस्लाम के नाम पर इसने मराक्ज व मआहद की शकल में दुनिया के बेशतर हिस्सों में अपने अड्डे क़ाइम कर लिये और वहाँ अपुनी ख़ुसूसी दअवत व तब्लीग़े वहाबियत व सललिफ़यत की सरगगिर्मयाँ तेज़ कर दीं.

उलमाए इस्लाम ने भरपूर क़ुव्वत के साथ इस बलाए नागहानी का मुकाबला किया. मुसलमानाने आलम के जिस्म व ररूह में सरायत करते हुए इस मूज़ी सरतान की रोक थाम और इसलके इलाज के लिये अपनी दीनी व इल्मी तवानाइयाँ सर्फ़ कर दीं. इसके मोहहिलक जरासीम के इजाले और ख़ात्मे की मुम्किना तदाबीर इख़्तियार कीं और माद्दी वसाइल का रूहानी ताक़त के ज़जिरये जवाब देते रहे.

तारीख़े इस्लाम का माज़ी और हाल गवाह है कि जब भी किसी फ़ित्ने ने सर उठाया, जब भी तख़रीबी अनासिर ने इस्लाम के ख़िलाफ़ कोई साज़िशी जाल फैलाया, जब भी किसी गोशे से ख़िम४ने इस्लाम को आग लगाने के लिये चिन्गारियाँ भड़काई गईं और जब भी अशरार व अअदा ने क़ाफ़िलए इस्लाम पर शबख़ून मारने की तैयारी की, उन्हीं अय्याम में पर्दए ग़ैब से कोई न कोई मर्दे मैदान नमूदार हुआ. मुस्लिम मआशिरे के बत्न से कोई न कोई फ़र्ज़न्दे अज़ीम पैदा हुआ, किसी न किसी मन्फ़ज़ से रोशनी फूटी, किसी न किसी जहत से किसी शेरे नियस्ताने इस्लाम की दहाड़ गूंजी और कोई न कोई सफ़ दर सफ़ शिकन मुजाहिद शमशीर बकफ होकर

मआरिकए हबो ज़र्ब की कमान सँभाल कर आगे बढ़ा जिसके नअरए हक़ और ज़र्बे यदुल्लाही से मैदाने जन्ग थर्रा उठा जिसकी दअवते मुबारिज़त से सफ़े अअदा में हलचल मच गई और जिसने लशकरे बातिल की बिसात उलट दी, उसके क़िले में शिगाफ़ डाल दिया. उसके हर साज़िशी जाल के तारे अन्कबूत की तरह बिखेर कर रख दिया और उसकी ज़ुल्मत का पर्दा चाक करके हर तरफ़ नूरे ईमान का उजाला फैला दिया.

ज़ियादा दूर कयों जाइये. एहदे अब्बासी पर एक नज़र डालिये. मामूनुर रशीद अब्बासी ने शाही तमतराक़ और सुल्तानी कर्रोफ़र के साथ फ़ित्नए ख़ल्क़े क़ुरआन उठाया था और उसने अपनी सत्वत व सौलत की बुनियाद पर ख़ल्क़े क़ुरआन का अक़ीदा मानने के लिये उलमाए इस्लाम को मजबूर करना चाहा. इब्नुल वक़्त उलमा की किसी ज़माने में कमी नहीं रही है. उन्हों ने इस फ़ित्ने की पुश्त पनाही की. मअदूदे चन्द उलमाए हक़ इस फित्ने के ख़िलाफ़ सीना सिपर रहे. जिनके सरखेल अपने वक़्त के अब्क़री फ़क़ीह और इस्लाम के फ़र्जन्दे जलील इमाम अहमद बिन हम्बल (विसाल जुमुअतुल मुबारक बतारीख़ १२ रबीउल अव्वल 241 हि०) हैं.

इमाम अहमद बिन हम्बल की बेलिबास पुश्त पर ताज़ियाने बरसाए गए और उन्होंने ज़ख़्म पर ज़ख़्म सहे मगर उनकी ज़बान से यही सदाए हक़ बलन्द होती रही : القران كلام الله غير مخلوق यानी क़ुरआन कलामे इलाही है, मख़लूक़ नहीं है.

मुगलियह दौरे हुकूमत पर एक सरसरी नज़र डालिये. इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़ सानी हज़रत शैख़ अहमद फ़ारूक़ सरहिन्दी (विसाल 1034 ई०) ने दौरे अकबरी व जहाँगीरी के फ़ित्नए दीने इलाही और इसकी बातिल सरगर्मियों का किस इस्तिक़ामत के साथ मर्दाना वार मुकाबला किया. सुल्ताने वक़्त के सामने सर झुकाने से इन्कार की पादाश में क़ैदो बन्द की सऊबतों से गुजारे गए मगर आपके पाए सबात व इस्तिक़ामत ने ज़रा भी लर्ज़िश व लग़ज़िश न खाई और वह अपनी ज़बान व अमल और मकतूबात के ज़रिये ग़ैर इस्लामी हरकात व मुन्करात की बेख़कुनी और इस्लामी उसूल व नज़रियात को पूरी क़ुव्वत से तहफ़्फ़ुज व दिफ़ाअ करते रहे.

हुकूमते वक़्त के सामने इमाम अहमद बिन हम्बल और मुजद्दिदे अल्फ़ सानी किसी तरह न मरऊबो ख़ाइफ़ हुए और न उन्होंने इसके

जबरूतो दबदबे की कोई पर्वाह की. शदाइदो व आलाम से दोचार और असीरे ज़िन्दाँ होकर बज़ाहिर तो वो मजबूरो बेबस नज़र आते थे लेकिन चश्मे हक़ीक़त से अगर देखा जाए तो शाही रोअबो जलाल ख़ुद उनके सामने बेबस और सरनिगूँ हो गया था क्योंकि अफ़ज़लुल जिहाद कलिमते ह्क इन्द सुल्ताने जाईर (यानी बादशाहे वक़्त के सामने हक़ बात बोलने से बड़ा कोई जिहाद नहीं) पर अमल करके उन्होंने अपने ईमानी अज़्मो सलाबत का ऐसा जीता जागता नमूना पेश किया कि उमरा व हुककाम भी दम बख़ुद थे.

ऐसे ही शेराने हक़ का मुजाहिदाना किरदार देखकर यह शेर पढ़ने को जी चाहता है:

आईने जवाँ मर्दाँ हक़-गोई व बेबाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाही

बरतानवी साम्राज्यवाद के ज़ेरे असर ख़ित्तए नज्द से उठने वाला बगूला जिस तरह हिजाज़े मुक़द्दस पर तूफान की तरह छा गया और हरमैने शरीफ़ैन पर आले सऊद ने जिस तरह पंजा गाड़ा उसकी तारीख़ भी कुछ कम इन्सानियत सोज़ और दर्दनाक नहीं. ख़ित्तए नज्द के साथ 1925 ई० में पूरे हिजाज़े मुक़द्दस पर आले सऊद का क़ब्ज़ा हुआ. सैकडों उलमा व मशायख़ और हज़ारों मुसलमान तहे तेग़ कर दिये गए. मसाजिद व मशाहिद व मक़ाबिर की जिस पैमाने पर बेहुरमती और शकिस्तो रेख़्त हुई. जन्नतुल मअला और जन्नतुल बक़ीअ को जिस तरह खन्डर में तब्दील किया गया वह तारीख़े हिजाज़ के सफ़हात पर ख़ून बनकर जज़्ब हो चुका है और उसकी सुर्ख़ी अब भी क़ल्बे मुस्लिम को ख़ून के आँसू रुलाती है.

शैख़ इब्ने तैमिय्यह हरानी मुतवफ़्फ़ा 728 हि० और शैख़ मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी मुतवफ़्फ़ा 1206 हि० 1792 ई० मुन्हरिफ़ाना फ़िक्री व नज़रियाती असास पर हुकूमते सऊदी अरब का क़याम अमल में आया और इसी फ़िक्र व मस्लक के मुबल्लिग़ व तर्जुमान की हैसियत से सारी दुनिया में इसकी शोहरत और सरगर्मी है. जो हज़रात सऊदी फ़िक्र व मिज़ाज से किसी हद तक भी वाक़िफ़ हैं वो अच्छी तरह जानते हैं कि ममलिकते सऊदियह महज़ हिर्स व इकतिदार व हविसे हुकमरानी की पैदावार है और इस्लाम का नाम तो वह सिर्फ़ ज़ेबे दास्तान के लिये इस्तेमाल करती है. मज़ीद बरआँ एहले ममलिकत पर पाबन्दी व क़दग़न का हाल यह

है कि आज भी हर सऊदी बाशिन्दा ज़बाने हाल से यह फ़रियाद करता हुआ नज़र आता है कि :

यह दस्तूरे ज़बाँबन्दी है कैसा तेरी मेहफ़िल में
यहाँ तो बात करने को तरस्ती है ज़बाँ मेरी

(१) नज्द - जिसमें रियाज़, ज़हरान, दमाम, अलखुबर, अहसा, उसैर, क़तीफ़ वग़ैरह हैं.

(२) हिजाज़ - जिसमें मक्कए मुकर्रमह, मदीनए तैय्यिबह, ताइफ़, जद्दह वग़ैरह.

आले सऊद का आबाई वतन शहरे रियाज़ से मुत्तसिल दरइय्यह (नज्द) और शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी का ऐनिय्यह (नज्द) है.

नज्दी अमूमन जन्गजूयाना फ़ितरत रखते हैं और शक़ावत व बदबख़्ती उनकी तारीख़ का एक बड़ा हिस्सा है. ज़ुलख़्वैसरह तमीमी व मुसैलमह कज़्ज़ाब नज्द ही के रहने वाले थे.

हिजाज़ की ग़ालिब अकसरियत सुन्नी मुसलमानों पर मुश्तमिल है जो अइम्मए अरबअह में से किसी एक के मुक़ल्लिद हैं. साथ ही वहाबी तहरीक व सऊदी इक़्तिदार से बेज़ार भी हैं. हुकूमती महकमाजात व इदारों पर सऊदियों का ग़ल्बा है जिसके हिजाज़ी मुख़ालिफ़ हैं. और उन्हें अच्छी तरह याद है कि मलिक अब्दुल अज़ीज़ बिन सऊद ने 1825 ई० में हिजाज़ पर क़ब्ज़े के वक़्त आलमे इस्लाम से वअदा किया था कि वो हिजाज़ एहले हिजाज़ के हवाले कर देंगे मगर यह वाजिबुल ईफ़ा वअदा आज तक पूरा न हो सका.

एहले हिजाज़ सऊदी जब्रो तशद्दुद के ख़ौफ़ से उसके ख़िलाफ़ कोई मुनज़्ज़म तहरीक नहीं चला पाते अल्बत्ता अपने इज़्तिराब के इज़्हार के लिये मज्लिसे शूरा की तशकील जैसे मुतालिबात वक़तन फ़वक़तन करते रहते हैं जिसके जवाब में आले सऊद की जानिब से उन्हें तिफ़ली तसल्लियाँ दी जाती रही हैं और :

ख़्वाब से बेदार होते हैं हिजाज़ी जब कभी
फिर सुला देती है उनको नज्दियों की साहिरी

तक़रीबन पन्द्रह साल पहले की बात है. सऊदी जासूसों ने अपनी हुकूमत को यह इत्तिला दी कि मक्कए मुकर्रमह और मदीनए मुनव्वरह में

घर घर महाफ़िले मीलाद शरीफ़ का रिवाज बढ़ता जा रहा है. मुख़्बिरों ने बेशुमार घरों की निशानदिही भी की जिसके बाद सऊदी पुलिस हरकत में आई और बज़्मे मीलादे रसूल मुनअक़िद करने की पादाश में सैंकड़ों ग़ैर सऊदी मुसलमान जो पचास पचास साल से वहीं मुलाज़िम व मुकीम थे, उन्हें जबरन मुल्क बदर कर दिया गया. दर्जनों मक़ामी शहरियों को जेल में डाल दिया गया और कई मुम्ताज़ शहरियों को ज़ज्रो तौबीख़ करके उनके घरों की महाफ़िले मीलाद पर पाबन्दी आइद कर दी गई.

हिजाज़े मुकद्दस के सबसे मअरूफ़ व जलीलुल क़द्र और बाअसर आलिमे दीन फ़ज़ीलतुश शैख़ सैय्यिद मुहम्मद बिन अलवी बिन अब्बास मालिकी मक्की उस्ताज़े हदीस मस्जिदे हराम मककए मुकर्रमह के घराने का क़दीम मअमूल यह था कि रोज़ाना शब में मेहफ़िले मीलाद का इन्इकाद होता और इख़्तितामे मेहफ़िल पर हाज़िरीन की ज़ियाफ़त की जाती. मुख़्बिरों की इत्तिलाअ पर आप से भी पूछ ताछ की गई और न सिर्फ़ यह कि आपके घर की मेहफ़िले मीलाद पर पाबन्दी आइद की गई बल्कि मस्जिदे हराम शरीफ़ में रोज़ाना हेने वाले दर्से हदीस का सिलसिला भी बन्द करा दिया गया और आपके ग़ैर मुलकी अस्फ़ार भी पाबन्दी की ज़द में आ गए.

हुकूमते सऊदियह के इस रिवायती जाबिराना इकदाम पर एहले हिजाज़ इसके अलावा और कया कह सकते हैं कि -

ब लौहे तुर्बते मन याफ़तन्द अज़ ग़ैब तहरीरे
कि ईं मक़तूल रा जुज़ बेगुनाही नेस्त तक़सीरे

रफ़ता-रफ़ता हालात में नर्मी और दारोगीर में कमी आई इस दर्मियान शुयूख व उलमाए नज्द ने सैय्यिद मुहम्मद बिन अलवी मालिकी को इल्मी व फ़िक्री सतह पर अपना खुसूसी निशाना बनाया. कयोंकि हिजाज़े मुकद्दस में आपकी दीनी वजाहत, इल्मी शख़्सियत और हमागीर मक़बूलियत उनके लिये सोहाने रूह से कम नहीं.

आलमे इस्लाम में भी सैय्यिद मुहम्मद बिन अलवी मालिकी को क़द्रो मन्ज़िलत की निगाह से देखा जाता है. यमन, इन्डोनेशिया, मलेशिया वग़ैरह में भी आपके हज़ारों शागिर्द और अक़ीदतमन्द फैले हुए हैं. इस लिये नज्दी उलमा ने आपको ज़ेर करने की हर मुम्किन कोशिश की. अपने हुकूमती असरात का सहारा लेकर आपको ख़ामोश करना चाहा. कई एक मुबाहिसे

किये. आपके ख़िलाफ़ मज़ामीन और किताबें शायअ करके मुफत तक़सीम की गई और आपको दिल खोलकर बिदअती और गुमराह कहा गया.

अज़-जख़ाइरुल मुहम्मदियह जो आपकी मशहूर तालीफ़ है जिसमें हुज़ूरे अकरम ﷺ के महामिदो महासिन, फ़ज़ाइलो कमालात, ख़सायसो इम्तियाज़ात पर ईमान अफ़रोज़ मवाद जमा कर दिया गया है. इसके ख़िलाफ़ भी वावेला मचाया गया और नज्दी हल्क़ों से इस किताब पर ज़बरदस्त हमले किये गए.

ख़ुसूसियत के साथ शैख़ अब्दुल्लाह बिन सुलैमान बिन मनीअ ने शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ की तहरीक पर सैय्यिद मुहम्मद बिन अलवी मालिकी पर ऐतिराज़ात व इत्तिहामात की बौछार कर दी. इब्ने मनीअ की किताब हवार मअल मालिकी फ़ी रद्दे मुन्करातिही व ज़लालातिही और इसका तर्जमा अलवी मालिकी से दो दो बातें जो राक़िमुस्सुतूर के पास भी मौजूद हैं. इन्हें सऊदी अरब की जानिब से पूरी दुनिया में बड़े पैमाने पर मुफत तक़सीम किया गया.

फ़ज़ीलतुश शैख़ सैय्यिद मुहम्मद बिन अलवी मालिकी की दीनी हमिय्यत और उनका जज़्बए महब्बते रसूल यूँ तो पहले भी बेदार ही था लेकिन अब वह ग़ैरते इश्क़ के मरहले में दाख़िल हो गया और आलुश शैख़ (ख़ानदाने शैख़े नज्दी) व आलुस्सऊद की आँखों में आँखें डाल कर उन्हें ललकारते हुए आपने फ़रमाया :

सुनो ऐ ज़ालिमो और नादानो, अपनी ज़बान और क़लम को अपने क़ाबू में रखो. किताबो सुन्नत पर मबनी एहले सुन्नत व जमाअत जिसपर मैं और एहले हिजाज़ गामज़न हैं यह मस्लके रसूलुल्लाह ﷺ व ख़ुलफ़ाए राशिदीन व एहले बैते अत्हार व सहाबए किराम व ताबिईन व तबए ताबिईन व अइम्मए अरबअह व मुफस्सिरीन व मुहद्दिसीन व फ़ुकहा व उलमाए इस्लाम के ज़रिये मुतवारिस तौर पर हम तक पहुंचा है, उसी मस्लक से वाबस्ता मुसलमान सवादे अअज़म हैं और यही मस्लक सिराते मुस्तक़ीम है. सलफ़े सालिहीन इसी राहे हक़ पर चलकर जवारे रहमते बारी की नेअमतों से हमकिनार हुए हैं और उन्हों ने हमें भी इसी मज़हबे मुहज़्ज़ब एहले सुन्नत व जमाअत का दामन मज़बूती से थामे रहने की ताकीद व हिदायत फ़रमाई है. इसलिये हम अपने किसी भी मौक़िफ से दस्तबर्दार होने के लिये किसी भी

क़ीमत पर तैयार नहीं. यह हमारा मोहकम और नाक़ाबिले तज़लज़ुल फ़ैसला है और इसकी सेहत पर हमारा भरपूर यक़ीन व इज़्आन है.

तुम हमें इस्लाह की दअवत न दो बल्कि ख़ुद अपनी इस्लाह करो और अपने इन्हिराफ़ और कज-रवी को छोड़कर सलफ़े सालिहीन की राह पर आजाओ. उम्मते मुस्लिमह के साथ बदगुमानी और उसपर बेबुनियाद इल्ज़ामाते शिर्क व बिदअत लगाने की पुरानी रविश छोड़ दो. और अगर यह नहीं कर सकते तो अल्लाह के बन्दों को उनके हाल पर छोड़ दो. इसी में तुम्हारी आफ़ियत और भलाई है. मुझ से तुम्हें कोई बात मनवानी है तो इसका सिर्फ़ एक ही तरीक़ा है और इससे अलग हटकर किसी भी जब्रो क़हर और हुकूमतो इकतिदार के बल पर तुम मुझ से कोई बात नहीं मनवा सकते. यह तरीक़ा कोई नया नहीं बल्कि पुराना है जिसे इमाम अहमद बिन हम्बल ने अब्बासी ख़लीफ़ा मुअतसिम बिल्लाह को बताया था और फ़ित्नए ख़ल्क़े क़ुरआन के जवाब में फ़रमाया था :

اعطونی شيئا من كتاب الله او من سنة رسوله حتى اقول به.

यानी मुझे किताबुल्लाह की कोई आयत या रसूलुल्लाह की कोई सुन्नत दिखाओ तब मैं तुम्हारी बात मान सकता हूँ. यह है वह ऐलाने हक़ जो क़ल्बे हिजाज़ मककए मुकर्रमह में बैठकर सैय्यिद मुहम्मद बिन अलवी मालिकी ने किया और क़यामे हुकूमते सऊदी अरब के बाद इस जज़्बए हक़गोई व कुव्वते ईमानी का इज़्हार अल्लाह तबारक व तआला ने आपके हिस्से में मुकद्दर कर रखा था जिसका सुबूत है आपकी शोहरए आफ़ाक़ किताब. مفاهيم يجب ان تصحح. مطبوعه قاهره مصر (١٤٠٦ه ١٩٨٥ء)

सैय्यिद मुहम्मद बिन अलवी मालिकी ने مفاهيم يجب ان تصحح (इस्लाहे फ़िक्रो ऐतिक़ाद) लिख कर इअलाए कलिमए हक़ का अज़ीम तरीन फ़रीज़ा अन्जाम दिया है और फ़िक्री व तारीख़ी तसलसुल के ज़रिये मस्लके एहले सुन्नत व जमाअत को मुदल्लल व मब्रहन अन्दाज़ में पेश करके एहले हिजाज़ और आलमे इस्लाम की तरफ से फ़र्ज़े किफ़ायह अदा कर दिया है और साबित कर दिया है कि एहले हिजाज़ ख़ादिमे इस्लाम और एहले नज्द हादिमे इस्लाम हैं. एहले हिजाज़ मुत्तबेअ और एहले नज्द मुब्तदेअ हैं.

☆☆☆

क़ुरआन के दस बुनियादी उसूल

जो मर्दे मूमिन के लिये दुनिया व आख़िरत की हर कामयाबी की ज़मानत हैं

हज़रत मौलाना सैय्यिद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ क़ादरी बरकाती अलैहिर्रहमह

आज मुसलमान तारीख़ के जिस नाज़ुक दौर से गुजर रहा है कम अज़ कम हिन्दुस्तान की इस्लामी तारीख़ इसकी मिसाल पेश करने से क़ासिर है.

एक हन्गामए मेहशर हो तो उसको भूलूँ
सैंकड़ों बातों का रह रह के ख़याल आता है

मआमला हमारी इबादतगाहों का हो या फ़िर्का-वाराना फ़सादात का, हर मन्ज़िल पर हमें कुचल देने की मुनज़्ज़म साज़िशें की जा रही हैं. आए दिन तक़रीरो तहरीर के ज़रिये इस्लाम और बानिये इस्लाम की शान में बद-तरीन गुस्ताख़ियां करके हमारी ग़ैरते ईमानी का ख़ून किया जा रहा है. फ़सादात की आड़ में मुसलमानों की मईशत तबाह की जा रही है. मज़हबी, सियासी, इल्मी, मआशी, हर महाज़ पर मुसलमानों को शिकस्ते फ़ाश देकर मेहकूम बनाने का सामान फ़राहम किया जा रहा है.

ऐसे कर्बनाक माहौल में हालात या हुकूमते वक़्त का दस्ते निगर बनने के बजाय मुसलमानो, आओ हम एक निज़ाम के पाबन्द हो जाएं जिसकी बुनियाद पर कायनात का हाकिमे मुतलक़ अपनी हिमायत व नुसरत का वअदा फ़रमाता है और अल्लाह जिसकी हिमायत व नुसरत फ़रमाए, दुनिया की कौन ताक़त उसे मग़लूब कर सकती है?

क़ुरआन फ़रमाता है: إِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ यानी - अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता. (सूरए आले इमरान: १६०)

हमारी क़ौम की तो है बिना ही दीनो ईमाँ पर
हमारी ज़िन्दगी मौक़ूफ़ है तअमीले क़ुरआँ पर
हमारी फ़त्हयाबी मुन्हसिर है फ़ज़्ले यज़्दाँ पर
न क़ुव्वत पर न ताक़त पर न शौकत पर न सामाँ पर

तअलीमाते कुरआनी पर अमल-पैरा होने के अलावा और कोई तदबीर न तो हमें सुकून व राहत दे सकती है न ही हमारी अज़्मते रफ़्ता को वापस दिला सकती है. ज़ैल में हम ज़िन्दगी और बन्दगी से मुतअल्लिक़ कुरआन के दस हयात आफ़रीं उसूल पेश कर रहे हैं जो मर्दे मूमिन के लिये दुनिया व आख़िरत की हर कामयाबी की ज़मानत हैं. खुदाए वहदहू ला शरीक हर मुसलमान को इनपर अमल-पैरा होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.आमीन.

(१) ईमान और इस्लाम पर साबित क़दम रहो :

अल्लाह तबारक व तआला की बारगाह में दीने इस्लाम के अलावा कोई दीन नहीं न ही इस्लाम के अलावा दुनिया का कोई मज़हब उसकी बारगाह में मक़बूल है. कुरआन फ़रमाता है :

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ . (پاره ۱ . رکوع ۱۰)

बेशक दीन अल्लाह के यहाँ इस्लाम ही है.

और फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ . (پ ۳ رکوع ۱۷)

यानी - और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वह हररिगज़ उससे कुबूल नहीं किया जाएगा.

जा बजा खुदाए वहदहू ला शरीक ने अपने और अपने हबीब जनाब मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर कामिल ईमान लाने का मुतालिबह किया है और असली दीन पर क़ाइम रहने की सूरत में फ़त्हो कामरानी की बिशारत दी है. अल्लाह तआला फ़रमाता है :

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ . (پ ۵ رکوع ۱۷)

यानी - ऐ ईमान वालो, ईमान रखो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर यानी ईमान पर साबित क़दम रहो. और फ़रमाता है :

وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ . (پ چار، رکوع پانچ) यानी - तुम ही ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो. अल्लाह तबारक व तआला ने इसी दीन पर कारबन्द रहने वालों की इम्दाद अपने ज़िम्मए करम पर ले ली है. इरशाद फ़रमाता है :

كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ . (پاره : ۱۲)

और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमानी.

और फ़रमाता है : اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ (پاره نو ركوع سولهه) यानी जब ऐ मेहबूब तुम्हारा रब फ़िरिश्तों को वही भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ. और फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ. (پ ٢٢ ركوع ١٨)

यानी - बेशक वो जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर उसपर क़ाइम रहे उनपर फ़िरिश्ते उतरते हैं.

और ऐसा भी नहीं है कि ईमान पर साबित क़दम रहना बहुत दुशवार अम्र है. जो साबित क़दम रहने का अज़्म कर ले तो अल्लाह उसे सबात की कुव्वत अता फ़रमाता है. अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا (پ ١٣، ركوع ١٦)

यानी - अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात पर.

(२) शरीअते मुतहहरह की कामिल पैरवी करो :

आधा तीतर आधा बटेर बनने की इस्लाम क़तई इजाज़त नहीं देता इस लिये ईमान के बाद रब तबारक व तआला का मुतालिबा है कि मुसलमान ज़िन्दगी के किसी शोअबे में किसी क़ौम किसी मज़हब किसी हुकूमत की रविश पर हरगिज़ न चले बल्कि अपने हर मआमले में सिर्फ़ और सिर्फ़ इस्लामी क़ानून का पाबन्द हो जाए. क़ुरआन फ़रमाता है :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً. (پ ٢، ركوع ٩)

यानी - ऐ ईमान वालो, इस्लाम में पूरे तौर पर दाख़िल हो जाओ.

यानी - तुम मेरे फ़रमाँबरदार हो जाओ. और फ़रमाता और फ़रमाता है :

فَاتَّبِعُوْنِيْ. (پ ٣، ركوع ١٣)

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ط (پ ٥ ركوع ٦)

यानी - तो ऐ मेहबूब तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बना लें फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उससे रुकावट न पाएं और जी से मान लें. और फ़रमाता है :



ISBN 01-89201-33-9

9780189201337

Rs. 80/-

RAZAVI KITAB GHAR

425/2 Matia Mahal Jama Masjid Delhi-6

Contact:. 9350505879,011-23264524

E-mail ID : razavikitabghar@gmail.com